पढ़े चलो, बढ़े चलो
राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान

लोक शिक्षण संचालनालय, म.प्र. भोपाल
द्वारा वर्ष 2022 के लिए जारी प्रश्न बैंक

प्रश्न बैंक

(रेमेडियल माड्यूल के प्रश्न-उत्तर सहित)

उत्तर सहित

हिन्दी

कक्षा 10

नई ब्लू प्रिंट सहित

GPH®

@amanwah450

हिन्दी (क्षितिज-कृतिका) : कक्षा-10

इकाई-1

महत्वपूर्ण बिन्दु- *(1) निर्धारित इकाई से 1-1 अंक के 7 प्रश्न तथा 2-2 अंक के 3 प्रश्न तथा 04 अंक का 1 प्रश्न परीक्षा में पूछा जाएगा। (2) क्षितिज भाग 2 के काव्य खण्ड से 'देव के पद', 'यह दंतुरित मुस्कान', 'फसल' एवं संगतकारन कविता से परीक्षा में कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।*

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(एक अंकीय)

प्रश्न 1. निम्नलिखित कथनों के सही विकल्प ज्ञात कीजिए-

(1) हिन्दी के पद्य साहित्य का दूसरा काल है-

(a) रीतिकाल (b) भक्तिकाल
(c) आदिकाल (d) आधुनिक काल

(2) आधुनिक काल का आरम्भ होता है-

(a) संवत् 1900 से (b) संवत् 1050 से
(c) संवत् 1375 से (d) संवत् 1800 से

(3) छायावाद के आधार स्तम्भ कवि नहीं है-

(a) निराला (b) जयशंकर प्रसाद
(c) महादेवी वर्मा (d) सूरदास

(4) प्रयोगवाद के कवि हैं-

(a) अज्ञेय (b) सुमित्रानन्दन पंत
(c) महादेवी वर्मा (d) तुलसीदास

(5) नई कविता के कवि हैं-

(a) निराला (b) सुमित्रानन्दन पंत
(c) महादेवी वर्मा (d) रघुवीर सहाय

(6) भक्तिकाल की समय सीमा है-

(a) संवत् 1050 से संवत् 1375
(b) संवत् 1375 से संवत् 1700
(c) संवत् 1700 से संवत् 1900
(d) संवत् 1900 से अब तक

(7) प्रयोगवाद का आरंभ माना जाता है-

(a) सन् 1943 से (b) सन् 1911 से
(c) सन् 1963 से (d) सन् 1936 से

(8) नंद-नंदन का प्रयोग किया गया है-

(a) उद्धव के लिए (b) गोपियों के लिए
(c) कृष्ण के लिए (d) सूरदास के लिए

(9) गोपियों को ज्ञान व योग की बातें लगती हैं-

(a) मधुर (b) नीरस
(c) कड़वी ककड़ी सी (d) अग्नि के समान

(10) गोपियों ने श्रीकृष्ण की तुलना की है-

(a) हारिल की लकड़ी से (b) नीम की लकड़ी से
(c) चंदन की लकड़ी से (d) तुलसी की लकड़ी से

(11) 'व्याधि' शब्द का अर्थ है-

(a) आधार (b) चिंता
(c) रोग (d) विरह

(12) सूर के पद में भाषा है-

(a) ब्रज (b) मैथिली
(c) खड़ी बोली (d) बघेली

(13) 'मरजादा न लही' के माध्यम से मर्यादा की बात कही है-

(a) समाज की (b) प्रेम संबंध की
(c) परिवार की (d) ग्राम धर की

(14) सूरदास के गुरू थे-

(a) नरहरिदास (b) विट्ठलनाथ
(c) हरिदास (d) बल्लभाचार्य

(15) सूर के आराध्य हैं-

(a) श्रीराम (b) नानक
(c) श्रीकृष्ण (d) शिव

(16) 'पुरइनि पात' का अर्थ है-

(a) कमल का पत्ता (b) कमल का फूल
(c) पूरी तरह (d) पुरवाई

(17) सूर की रचना नहीं है-

(a) सूरसागर (b) साहित्य लहरी
(c) सूरसारावली (d) विनय पत्रिका

(18) परशुराम को व्यंग्य भरे उत्तर दिए-

(a) राम ने (b) लक्ष्मण ने
(c) विश्वामित्र ने (d) जनक

(19) शिव–धनुष के टूटने पर क्रोधित हो उठे–
(a) विश्वामित्र (b) परशुराम
(c) लक्ष्मण (d) रावण

(20) रामचरितमानस की भाषा है–
(a) ब्रज (b) बुन्देली
(c) अवधी (d) मालवी

(21) राम–लक्ष्मण के गुरु का नाम था–
(a) परशुराम (b) विश्वामित्र
(c) भृगु (d) तुलसीदास

(22) सहस्त्रबाहु का वध किया था–
(a) राम ने (b) परशुराम ने
(c) लक्ष्मण ने (d) विश्वामित्र ने

(23) कवि अपनी आत्मकथा को बता रहा है–
(a) भोली (b) करुण
(c) सच्ची (d) सुंदर

(24) थके पथिक की पंथा में अलंकार है–
(a) उपमा (b) अनुप्रास
(c) यमक (d) रुपक

(25) छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं–
(a) जयशंकर प्रसाद (b) ऋतुराज
(c) सूरदास (d) धर्मवीर भारती

(26) प्रसादजी को 'कामायनी' पर पारितोषिक मिला–
(a) ज्ञानपीठ (b) दिनकर पारितोषिक
(c) सरस्वती सम्मान (d) मंगला पारितोषिक

(27) जयशंकर प्रसाद का संग्रह नहीं है–
(a) आकाशदीप (b) इंद्रजाल
(c) आँधी (d) साये में धूप

(28) उत्साह कविता में बादल प्रतीक हैं–
(a) शांति का (b) गति का
(c) क्रांति का (d) सुख का

(29) कवि ने बादलों को किसकी कल्पना के समान पाले हुए माना है–
(a) बाल कल्पना
(b) आसमान की कल्पना
(c) विद्युत की कल्पना
(d) काले घुंघराले बालों की कल्पना

(30) कवि ने बादलों के लिए विशेष प्रयोग किया है–
(a) अनन्त (b) ललिता
(c) नवजीवन वाले (d) मनमोहक

(31) कवि बादलों से बरसने का आह्वान कर रहा है–
(a) गोल–गोल घूमकर बरसने को
(b) आकाश को घेरकर बरसने को
(c) धीरे–धीरे बरसने को (d) तीव्र वेग से बरसने को

(32) कवि ने तृप्त धरा के माध्यम से संकेत किया है–
(a) जनसामान्य की पीड़ा (b) अत्यधिक गर्मी
(c) जलवायु परिवर्तन (d) वैश्विक तपन

(33) 'नाश और निर्माण' के रचनाकार हैं–
(a) निराला (b) नागार्जुन
(c) जयशंकर प्रसाद (d) गिरिजाकुमार माथुर

(34) गिरिजाकुमार माथुर के अनुसार प्रभुता का शरण बिम्ब है–
(a) मृगतृष्णा (b) गरिमा
(c) हीनता (d) कायरता

(35) नई कविता के समर्थ कवि हैं–
(a) प्रसाद (b) निराला
(c) पंत (d) गिरिजाकुमार माथुर

(36) 'लड़की जैसी दिखाई मत देना' से माँ का क्या आशय है–
(a) दुर्बलता को ताकत बनाने के लिए
(b) प्रताड़ित होने के लिए
(c) अन्याय सहने के लिए (d) दुर्बल होने के लिए

(37) 'सूरत निरत' काव्य संग्रह के कवि हैं–
(a) नागार्जुन (b) निराला
(c) ऋतुराज (d) महादेवी वर्मा

(38) 'कन्यादान' कविता में नारी के किस भाव की अभिव्यक्ति है–
(a) क्रूरता (b) संवेदनहीनता
(c) क्रोध (d) संवेदनशीलता

उत्तर–(1) भक्तिकाल (2) संवत् 1900 से (3) सूरद
(4) अज्ञेय (5) रघुवीर सहाय (6) संवत् 1375 से संवत् 17
तक (7) सन् 1943 से (8) कृष्ण के लिए (9) कड़वी ककड़ी
(10) हारिल की लकड़ी से (11) रोग (12) ब्रज (13) प्रेम से
की (14) वल्लभाचार्य (15) श्रीकृष्ण (16) कमल का पत्ता (

विनय पत्रिका (18) लक्ष्मण ने (19) परशुराम (20) अवधी (21) विश्वामित्र (22) परशुराम ने (23) भोली (24) अनुप्रास (25) जयशंकर प्रसाद (26) मंगला प्रसाद पारितोषिक (27) साये में धूप (28) क्रांति का (29) बाल-कल्पना (30) नवजीवन वाले (31) आकाश को घेरकर बरसने को (32) जनसामान्य की पीड़ा (33) गिरिजाकुमार माथुर (34) मृगतृष्णा (35) गिरिजाकुमार माथुर (36) दुर्बलता को ताकत बनाने के लिए (37) ऋतुराज (38) संवेदनशीलता।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) सूर की भक्ति ..... भाव की है (साख्य भाव/दास भाव)

(2) सूरदास ..... थे। (जन्मांध/गूंगे)

(3) गोपियां उद्धव को ..... मानती हैं। (हतभागी/बड़भागी)

(4) गोपियों के लिए श्रीकृष्ण हारिल की ..... की तरह है। (लकड़ी/फूल)

(5) हरि है ..... पढ़ि आए। (राजनीति/कूटनीति)

(6) सूरदास का निधन ..... में हुआ। (रुनकता/पारसौली)

(7) गोपियों ने मधुर संबोधन ..... के लिए दिया। (कृष्ण/उद्धव)

(8) सूरदासजी मुख्यतः ..... रस के कवि हैं। (वात्सल्य रस/शांत रस)

(9) योग संदेश लेकर ..... मथुरा से बृजधाम आये हैं। (अक्रूर/उद्धव)

(10) 'छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू' कथन ..... का है। (विश्वामित्र/लक्ष्मण)

(11) परशुराम स्वभाव से ..... थे। (क्रोधी/दयालु)

(12) रघुकुल में देवता, ब्राह्मण, ईश्वर भक्त और ..... का वध नहीं किया जाता था। (गाय/पक्षियों)

(13) ..... व्यक्ति अपनी प्रशंसा स्वयं ही करते हैं। (निडर/कायर)

(14) परशुराम के गुरु ..... थे। (भगवान शिव/भगवान विष्णु)

(15) कवि के सरल स्वभाव के कारण ..... ने धोखा दिया है। (मित्रों/रिश्तेदारों)

(16) आलिंगन में आते-आते .....जो भाग गया। (रुठकर/मुसक्या)

(17) निराला ने बादलों से ..... का आग्रह कर रहा है। (बरसने/नाचने)

(18) निराला ने बादलों को ..... के समान सुन्दर बताया है। (केशो/आँखों)

(19) उत्साह कविता की भाषा ..... है। (संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली/बघेली)

(20) निराला की अधिकांश रचनायें ..... छंद में मिलती हैं (गीतिका/मुक्तक)

(21) दृविधाहत साहस का शाब्दिक अर्थ ..... है। (साहस होते हुए दुविधाग्रस्त रहना/बिना दुविधा के रह

(22) हर चंद्रिका में छिपी एक रात ..... है। (कृष्णा/सु

(23) कविता 'छाया मत छूना' में अतीत की स्मृतियों को व वर्तमान का सामना कर ..... का वरण करने का संदेश दि गया है। (भविष्य/वर्तम

(24) 'छाया मत छूना' कविता में ..... भाव बोध अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। (रोमानी/सुहा

(25) ..... रोटियाँ सेकनें के लिए हैं? जलने के लिए नहीं (आग/अ

(26) कवि ऋतुराज के अनुसार "वस्त्र और आभूषण" जीवन के ..... है। (बंधन/अलंक

(27) विदा के समय माँ को अपनी बेटी ..... पूंजी प्रती रही थी। (अंतिम/सं

(28) ऋतुराज ने चालीस वर्षों तक ..... साहित्य अध्यापन किया। (हिन्दी/अं

(29) सोमदत्त, परिमल सम्मान ..... को मिला। (ऋतुराज/नि

(30) ऋतुराज की कविताएँ ..... हैं। (तुकान्त/छन्द

उत्तर- (1) सांख्य भाव (2) जन्मांध (3) बड़भागी (4) (5) राजनीति (6) पारसौली (7) कृष्ण (8) वात्सल्य र उद्धव (10) लक्ष्मण (11) क्रोधी (12) गाय (13) काय भगवान शिव (15) मित्रों (16) मुसक्या (17) बरसने (18 (19) संस्कृनिष्ठ खड़ी बोली (20) मुक्तक (21) साहस दुविधाग्रस्त रहना (22) कृष्णा (23) भविष्य (24) रोमान आग (26) बंधन (27) अंतिम (28) अंग्रेजी (29) ऋतुरा छन्दमुक्त।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये–

(1)

(अ)	(ब)
(1) सूर के पद	(a) निराला
(2) उत्साह	(b) सूरदास
(3) निराला	(c) अट नहीं रही है
(4) राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद	(d) जयशंकर प्रसाद
(5) 'छाया मत छूना'	(e) ऋतुराज
(6) 'आत्मकथ्य'	(f) तुलसीदास
(7) कन्यादान	(g) गिरिजाकुमार माथुर

उत्तर– (1) b (2) a (3) c (4) f (5) g (6) d (7) e.

(2) सही जोड़ी बनाइये–

(अ)	(ब)
(1) विनयपत्रिका	(a) गिरजाकुमार माथुर
(2) कामायनी	(b) तुलसीदास
(3) साहित्य लहरी	(c) जयशंकर प्रसाद
(4) शिलापंख चमकीले	(d) सूरदास
(5) पुल पर पानी	(e) ऋतुराज

उत्तर– (1) b (2) c (3) d (4) a (5) e.

(3) सही जोड़ी बनाइये–

(अ)	(ब)
(1) मधुकर	(a) परशुराम
(2) मदनमहीन	(b) उद्धव
(3) श्री ब्रजदूलह	(c) श्रीकृष्ण
(4) प्रातहि जगावत	(d) बसंत
(5) प्यारी राधिका को प्रतिबिंब सो लगत चंद।	(e) ऋतुराज

उत्तर– (1) (b) (2) (e) (3) (c) (4) (d) (5) (a).

(4)

(अ)	(ब)
(1) सूरदास का जन्म एवं मृत्यु	(a) सन् 1889, सन् 1937
(2) तुलसीदास का जन्म एवं मृत्यु	(b) सन् 1478,सन 1583
(3) जयशंकर प्रसाद का जन्म एवं मृत्यु	(c) सन् 1532, सन् 1623
(4) निराला का जन्म एवं मृत्यु	(d) सन् 1918,सन् 1994
(5) गिरिजाकुमार माथुर का जन्म एवं मृत्यु	(e) सन् 1940
(6) ऋतुराज का जन्म	(f) सन् 1899, सन् 1996

उत्तर– (1) b (2) c (3) a (4) f (5) d (6) e.

प्रश्न 4. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिए–

(1) सूरदास भक्ति काल की किस शाखा के कवि है?
(2) गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या है?
(3) सूर–सारावली के कवि का क्या नाम है?
(4) क्षितिज भाग 2 में संग्रहित सूर्य के 4 पद कहाँ से लिए गए हैं?
(5) गोपियों ने भ्रमण के बहाने किस पर व्यंग्य बाण छोड़े हैं।
(6) राम लक्ष्मण परशुराम संवाद रामचरितमानस के किस कांड से लिया गया है?
(7) गोस्वामी तुलसीदास की मृत्यु कहाँ हुई?
(8) सीता स्वयंवर में राम–लक्ष्मण किसके साथ आए थे?
(9) 'बालकु बोलि बधी नहीं तोही' में कौन–सा अलंकार है?
(10) ऊँगली दिखाने से कौन मुरझा जाता है?
(11) कवि प्रसाद जी अपने किस स्वभाव को दोष नहीं देना चाहते?
(12) मुरझाकर गिर रही पत्तियाँ किसका प्रतीक है?
(13) 'आत्मकथ्य' कविता में किस पक्ष की अभिव्यक्ति हुई?
(14) प्रेयसी के कपोलों की लालिमा की तुलना किससे की गई है?
(15) प्रसाद जी के आलिंगन में आते–आते क्या भाग गया?
(16) बादल के हृदय में कौन छुपा है?
(17) विश्व के सकल जन कैसे हो रहे हैं?
(18) घेर–घेर घोर गगन में कौन–सा अलंकार है?
(19) बादल किस दिशा से आते हैं?
(20) तृप्त धरा का सांकेतिक अर्थ क्या है?
(21) 'यामिनी' का शाब्दिक अर्थ क्या है?
(22) गिरिजाकुमार माथुर के एक काव्य संग्रह का नाम लिखिए।
(23) गिरिजाकुमार माथुर किस मिजाज के कवि हैं?
(24) 'कन्यादान' पाठ में माँ बेटी को कौन–सा पाठ पढ़ाना चाहती थी।
(25) पाठिका किसे कहा गया है?
(26) माँ पुत्री को किस तरह रहने का कहती है?
(27) स्त्री के बंधन कौन–से हैं?
(28) कवि ऋतुराज ने धुंधले प्रकाश की पीतिका किसे कहा है?

उत्तर– (1) सूरदास भक्ति काल के कृष्ण भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं।
(2) प्रजा का हित ही राजा का धर्म है।
(3) सूर–सारावली के कवि का नाम महाकवि सूरदास है।

(4) ये पद सूरसागर के भ्रमरगीत से दिए गए है।
(5) गोपियों ने भ्रमर के बहाने उद्धव पर व्यंग्य बाण छोड़े हैं।
(6) यह अंश रामचरितमानस से बालकांड से लिया गया है।
(7) गोस्वामी तुलसीदास की मृत्यु काशी में हुई।
(8) सीता स्वयंवर में राम-लक्ष्मण गुरु विश्वामित्र के साथ आए थे।
(9) बालक बोलि बधी नहीं तोही में अनुप्रास अलंकार है।
(10) ऊँगली दिखान से कुम्हड़े का फूल मुरझा जाता है।
(11) कवि प्रसाद जी अपने सरल स्वभाव को दोष नहीं देना चाहते।
(12) मुरझाकर गिर रही पत्तियाँ निराशा का प्रतीक हैं।
(13) आत्मकश्य कविता में जीवन के यथार्थ एवं अभाव पक्ष की अभिव्यक्ति हुई है।
(14) ऊषाकाल की अरूणिमा से तुलना की गई है।
(15) प्रसाद जी के आलिंगन में आते-आते जीवन का सुख भाग गया।
(16) बादल के हृदय में विद्युत (बिजली) छिपी है।
(17) विश्व के सकल जन गर्मी से व्याकुल हो रहे हैं।
(18) घेर-घेर घोर गनन में अनुप्रास अलंकार है।
(19) बादल अज्ञात दिशा से आते हैं।
(20) तप्त धरा का सांकेतिक अर्थ सांसारिक दुखों से पीड़ित पृथ्वी है।
(21) यामिनी का शाब्दिक अर्थ तारों भरी चाँदनी रात है।
(22) इनके काव्यसंग्रह हैं- नाश और निर्माण/धूप के धान/भीतरी नदी की यात्रा/शिलापंख चमकीले।
(23) गिरिजाकुमार माथुर रोमानी मिजाज के कवि माने जाते हैं।
(24) माँ बेटी को जीवन के यथार्थ का पाठ पढ़ाना चाहती थी।
(25) पाठिका लड़की को कहा गया है।
(26) माँ, पुत्री को सचेत और सजग रहने को कहती है।
(27) स्त्री के बंधन वस्त्र और आभूषण हैं।
(28) कवि ने बेटी को धुंधले प्रकाश की पीठिका कहा है।

प्रश्न 5. सत्य/असत्य बताइये-

(1) गोपियाँ कृष्ण द्वारा चुराए गए अपने मन को वापस माँग रही है।
(2) अच्छे लोग परहित के लिए दौड़े चले आते हैं।
(3) उद्धव का संदेश गोपियों को गुड़ की तरह मीठा लगा।
(4) योग संदेश सुनकर गोपियों की विरह अग्नि बढ़ रही है।
(5) राजा का धर्म है कि प्रजा को ना सताए।
(6) शिव धनुष राम ने तोड़ा।
(7) कुछ क्षत्रिय राजाओं को हराकर परशुराम राम लक्ष्मण को हराने के सपने देख रहे थे।
(8) वीर व्यक्ति अपनी प्रशंसा स्वयं करते हैं।
(9) शिव धनुष को खंडित देखकर परशुराम क्रोधित हो उठे।
(10) परशुराम के फरसे को देखकर लक्ष्मण भयभीत हो गए।
(11) जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी में हुआ।
(12) 'आत्मकथ्य' कविता पहली बार 1932 में हंस के आत्मकथा विशेषांक में प्रकाशित हुई थी।
(13) जयशंकर प्रसाद मौन रहकर औरों की कथा सुनने के इच्छुक थे।
(14) कवि जयशंकर प्रसाद अपने जीवन के निजी अनुभवों को सबसे बांटना चाहते हैं।
(15) कवि प्रसाद ने अपने मन को भँवरे का रूप दिया है।
(16) 'अट नहीं रही' कविता फागुन की मादकता को प्रकट करती है।
(17) छायावादी कवियों में निराला ने सबसे पहले मुक्तक छंद का प्रयोग किया।
(18) निराला पूँजीवाद के समर्थक तथा पोषक थे।
(19) निराला को आधुनिक कवि भी कहा जाता है।
(20) निराला प्रगतिवादी कवि हैं।
(21) गिरिजाकुमार माथुर प्रयोगवादी कवि थे।
(22) 'लीला मुखारविद' गिरिजाकुमार माथुर का काव्य संग्रह है।
(23) जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण।
(24) गिरिजाकुमार माथुर का जन्म दिल्ली में हुआ था।
(25) गिरिजाकुमार माथुर की प्रारंभिक शिक्षा झाँसी (उत्तरप्रदेश) में हुई।
(26) 'छाया मत छूना' गिरिजाकुमार माथुर की कविता है।
(27) चाँदनी रात के बाद अंधेरी रात आती है।
(28) गिरिजाकुमार माथुर का निधन 1994 में हुआ।
(29) ऋतुराज जनवादी कवियों की श्रेणी में आते हैं।
(30) माँ ने अंतिम पूँजी बेटी को कहा है।
(31) माँ ने कहा- 'लड़की होना पर लड़की जैसे दिखाई मत देना।'

प्रयोगवाद की दो विशेषताएँ → (1) नवीन उपमानों का प्रयोग
(2) बुद्धिवाद की प्रधानता

उत्तर– (1) सत्य (2) सत्य (3) असत्य (4) सत्य (5) सत्य (6) सत्य। (7) सत्य (8) असत्य (9) सत्य (10) असत्य (11) सत्य (12) सत्य (13) सत्य (14) असत्य (15) सत्य (16) सत्य (17) सत्य (18) असत्य (19) सत्य (20) सत्य (21) सत्य (22) असत्य (23) सत्य (24) असत्य। (25) सत्य (26) सत्य (27) सत्य (27) सत्य (28) सत्य (29) सत्य। (30) सत्य (31) सत्य

प्रश्न 6 निम्नलिखित प्रश्नों के 30–30 शब्दों में उत्तर लिखिए।

प्रश्न 1. पद्य साहित्य से आप क्या समझते हैं?

उत्तर– काव्य, कविता या पद्य, साहित्य की वह विधा है जिसमें किसी कहानी या मनोभाव को कलात्मक रूप से किसी भाषा के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है, भारत में कविता का इतिहास और कविता का दर्शन बहुत पुराना है, इसका प्रारंभ भरत मुनि से समझा जाता है। कविता का शाब्दिक अर्थ है काव्यात्मक रचना या कवि की कृति, जो छन्दों की शृंखलाओं में विधिवत बांधी जाती है।

प्रश्न 2. भक्तिकाल की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– (1) समन्वय की भावना (2) भारतीय संस्कृति की रक्षा।

प्रश्न 3. छायावाद की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– छायावाद की दो विशेषताएँ निम्न हैं–

(अ) आत्माभिव्यक्ति

(ब) नारी सौंदर्य और प्रेम–चित्रण।

प्रश्न 4. भक्तिकाल के दो कवियों के नाम एवं प्रत्येक की एक–एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर–

कवि		रचनाएँ
(1) कबीरदास	–	(1) बीजक (रमैनी, सबद)
(2) नानक देव	–	(2) ग्रंथ साहिब में संकलित (संकलन–गुरू अर्जुन देव)

प्रश्न 5. छायावाद के दो कवियों के नाम एवं प्रत्येक की एक–एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर–

कवि		रचनाएँ
(1) जयशंकर प्रसाद	–	(1) द्वारना
(2) सुमित्रानन्दन पंत	–	(2) उच्छवास

प्रश्न 6. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर– (1) गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में यह व्यंग निहित है कि उद्धव वास्तव में भाग्यवान न होकर अति भाग्यहीन है। (2) वे कृष्णरूपी अद्वितीय सौंदर्य और प्रेम–रस के सागर के सान्निध्य में रहते हुए भी उस असीम आनंद से वंचित हैं। (3) वे प्रेम–बंधन में बँधने एवं मन के प्रेम में अनुरक्त होने की सुखद अनुभूति से पूर्णतया अपरिचित है।

प्रश्न 7. सूरदास की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– प्रेम की एकनिष्ठता व दृढ़ता– कवि ने यह दर्शाया कि गोपियों ने कृष्ण को हारिल पक्षी द्वारा पकड़ी गई लकड़ा की भाँति अपने हृदय में दृढ़तापूर्वक बसा लिया है। वे मन, कर्म और वचन से कृष्ण के प्रति समर्पित हैं।

यहाँ कवि ने यह संदेश दिया है कि अनन्य भक्ति में साधक अपने आराध्य के प्रति एकनिष्ठ होकर पूर्णतया समर्पित रहता है।

निरंतर नाम–स्मरण– गोपियाँ निरंतर कृष्ण के नाम की रट लगाती रहती है भक्त सोते, जागते, स्वप्नावस्था में दिन–रात अपने आराध्य के नाम का स्तरण करता रहता है।

मन की एकाग्रता– कवि ने गोपियों के माध्यम से यह संदेश दिया है कि आराध्य के प्रेम–रस में निरंतर डूबे रहने के कारण भक्त का मन सदैव एकाग्र बना रहता है योग की साधना करने की आवश्यकता तो उन्हें पड़ती है जिनका मन चंचल बना रहता है।

तीव्र सहानुभूति– गोपियाँ कृष्ण के मथुरा चले जाने पर उनके वियोग में तीव्र पीड़ा का अनुभव करती है। सूरदास ने भक्ति के लिए आराध्य के प्रति व्याकुलता को एक अनिवार्य तत्व के रूप में चित्रित किया है।

प्रश्न 8. सूरदास का भावपक्ष लिखते हुए 2 रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर– सूरदास की भक्ति सख्यभाव की है। आपने कृष्ण के लोकरंजक रूप का मनभावन चित्रण किया है। बाल चरित्र–चित्रण में सूर बेजोड़ है। इस प्रकार वात्सल्य रस से ओतप्रोत सूर के पद किसी भी साहित्य प्रेमी को अपनी ओर आकर्षित किए बिना नहीं रह सकते।

दो रचनाएँ– (1) सूरसागर (2) सूर सारावली।

प्रश्न 9. महाकवि सूरदास का साहित्य में स्थान निर्धारित कीजिए।

उत्तर– सूरदास हिन्दी साहित्य के महाकवि हैं, क्योंकि उन्होंने केवल उतार–चढ़ाव और भाषा की दृष्टि से साहित्य को पल्लवित किया वरन् कृष्ण काव्य की विशिष्ट परम्परा को

जन्म दिया। सूर का कृष्णकाव्य व्यंग्यात्मक भी है। इसमें उपालभ्भ की प्रधानता है, सूर का भ्रमर गीत इसका ज्वलंत उदाहरण है।

प्रश्न 10. गोस्वामी तुलसीदास की दो रचनाओं के नाम एवं काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- दो रचनाएँ- तुलसीदास का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है- 'रामचरितमानस' अन्य प्रमुख ग्रंथ हैं- विनय पत्रिका, गीतावली और कवितावली।

काव्यगत विशेषताएँ- तुलसीदास ने अवधी एवं ब्रज दोनों ही भाषाओं में काव्य रचना की है, उनके काव्य में चौपाई, दोहा, सोरठा, हरिगीतिका, कवित्त पद आदि अनेक छंदों का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 11. गोस्वामी तुलसीदास के काव्य का भावपक्ष एवं हिन्दी साहित्य में उनका स्थान लिखिए।

उत्तर- काव्य का भावपक्ष- तुलसीदास रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। उनका भाव क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। उनके काव्य का सर्वाधिक प्रभावशाली पक्ष है, लोकमंगल की साधना। उनके काव्य में धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि की व्यापकता है। उन्होंने सगुण-निर्गुण, ज्ञान-भक्ति, शैव-वैष्णव आदि में समन्वय स्थापित करने का सराहनीय प्रयास किया। उनके काव्य में हृदय की विशालता, भावाभिव्यक्ति की शक्ति एवं लोकजीवन का सहज चित्रण है। यही कारण है कि तुलसी का भाव-पक्ष अत्यंत प्रबल है।

हिन्दी साहित्य में स्थान- समग्रत: तुलसीदास मानव-स्वभाव और जीवन जगत-की गहरी अंतर्दृष्टि रखने वाले भक्त कवि, आदर्श समाज सुधारक, दार्शनिक एवं युग-प्रवर्तक थे।

प्रश्न 12. जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- काव्यगत विशेषताएँ- छायावादी काव्य-धारा के कवियों में जयशंकर प्रसाद का नाम शीर्षस्थ है। प्रसाद जी का भाव संसार अत्यंत व्यापक है। उनके काव्य में प्रकृति प्रेम, नारी-सौंदर्य का सूक्ष्म चित्रण, काल्पनिकता, दुख और वेदना की गहराई, वैयक्तिक प्रेमानुभूति, देशप्रेम, प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं दर्शन की व्यापकता आदि का भावपूर्ण चित्रण हुआ है। उनकी रचनाओं में रहस्यात्मकता का गुण भी दर्शनीय है।

प्रश्न 13. जयशंकर प्रसाद के काव्य का भावपक्ष स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कलापक्ष-भाषाशैली- प्रसाद जी के काव्य में खड़ी बोली हिन्दी की परिष्कृत रूप दृष्टिगत होता है। इनकी प्रारंभिक रचनाओं की भाषा सहज एवं कोमलकांत पदावली से युक्त है। परवर्ती काव्य की भाषा में तत्सम शब्दों की प्रधानता है। प्रसाद जी के काव्य में लक्षणा एवं व्यंजना शब्द-शक्ति का पर्याप्त प्रयोग हुआ है।

अलंकार योजना- प्रसाद जी की कविताओं में अलंकारों का आकर्षक प्रयोग हुआ है। उनके काव्य में रूपक व मानवीकरण अलंकार सुंदर रूप में प्रयुक्त हुए हैं। अनुप्रास, उपमा, पुनरुक्ति प्रकाश आदि अलंकार भी अपने उत्कृष्ट रूप में दिखाई देते हैं।

अनुप्रास- 'कौन कहानी', 'हँसते होने', 'पथिक की पंथा की' आदि।

समग्रत: जयशंकर प्रसाद छायावादी काव्यधारा के सिरमौर कवि हैं, जिन्होंने सौंदर्य, प्रेम, वेदना एवं मानवतावादी दृष्टिकोण का भावपूर्ण चित्रण किया है।

प्रश्न 14. आधुनिक हिन्दी साहित्य में जयशंकर प्रसाद का क्या स्थान है?

उत्तर- आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में इनके कृतित्व का गौरव अक्षुण्ण है। वे एक युगप्रवर्तक लेखक थे जिन्होंने एक ही साथ कविता, नाटक, कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में हिंदी को गौरवान्वित होने योग्य कृतियाँ दीं।

प्रश्न 15. निराला के काव्य का भावपक्ष एवं कलापक्ष लिखिए।

उत्तर- भावपक्ष- निराला जी छायावादी काव्य धारा के प्रमुख स्तम्भ माने जाते हैं। उनके काव्य में छायावाद की समस्त काव्य विशेषताएँ विद्यमान हैं। उनका क्रान्तिकारी, प्रगतिशील, विद्रोही और बेबाक व्यक्तित्व एवं शोषक वर्ग के प्रति उनका आक्रोशपूर्ण रूप से ही उन्हें निराला बनाता है। उनके काव्य में उपेक्षित, वंचित और पीड़ित शोषितों के प्रति संवेदना का स्वर उभरा है। इस कारण उनकी गणना छायावादी के साथ ही प्रगतिवादी कवियों में भी की जाती है। उनका साहित्य में दलित समाज के प्रति भी गहरी सहानुभूति का भाव है। उन्होंने शृंगार, प्रेम, प्रकृति सौंदर्य और राष्ट्र प्रेम आदि विषयों पर भी काव्य रचना की है।

कला पक्ष– काव्य की पुरानी परम्पराओं को त्याग कर काव्य शिल्प के स्तर पर भी विद्रोही तेवर अपनाते हुए निराला जी ने काव्य शैली को नई दिशा प्रदान की। उनके काव्य में भाषा का कसाव, शब्दों की मितव्ययिता एवं अर्थ की प्रधानता है। संस्कृतिनिष्ठ तत्सम शब्दों के साथ ही संधि–समासयुक्त शब्दों का भी प्रयोग निराला जी ने किया है।

प्रश्न 16. निराला की दो रचनाएँ एवं हिन्दी साहित्य में उनका स्थान स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- प्रमुख रचनाएँ– काव्य- 'परिमल', 'अनामिका', 'गीतिका' 'अपरा' आदि।

हिन्दी साहित्य में स्थान– इन्होंने इलाहाबाद में रहकर स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य किया। ये हिन्दी साहित्य में छायावाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। 'निराला' ने कहानियाँ, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं। किन्तु उनकी ख्याति विशेष रूप से कविता के कारण ही हैं।

प्रश्न 17. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस–किस से की गई है?

उत्तर– ऊद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते और तेल की मटकी से करते हुए गोपियाँ कहती हैं कि जिस प्रकार कमल का पता जल में ही रहता है, फिर भी उस पर पानी का धब्बा तक नहीं लग पाता, इसी प्रकार तेल की मटकी को पानी में रखने पर उस पर जल की एक बूँद तक नहीं ठहर पाती, ठीक वैसे ही उद्धव कृष्ण के समीप रहते हुए भी उनके रूप के आकर्षण तथा प्रेम–बंधन से सर्वथा मुक्त है।

प्रश्न 18. गोपियों ने किन–किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

उत्तर– (1) गोपियों ने कमल के पत्ते, तेल की मटकी और प्रेम की नदी के उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं। (2) उनका कहना है कि कृष्ण के साथ रहते हुए भी प्रेमरूपी नदी में उतरे ही नहीं, अर्थात् साक्षात् प्रेमस्वरूप श्रीकृष्ण के पास रहकर भी वे उनके प्रेम से वंचित हैं, यह उनका दुर्भाग्य ही है।

प्रश्न 19. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर– गोपियाँ कृष्ण के आगमन की आशा में दिन गिनती जा रही थीं। वे अपने तन–मन की व्यथा को चुपचाप सहती हुई कृष्ण के प्रेम–रस में डूबी हुई थीं। कृष्ण को आना था परंतु उन्होंने योग का संदेश देने के लिए उद्धव को भेज दिया। विरह की अग्नि में जलती हुई गोपियों को जब उद्धव ने कृष्ण को भूल जाने और योग–साधना करने का उपदेश देना प्रारम्भ किया, तब गोपियों की विरह–वेदना और भी बढ़ गई। इस प्रकार उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरह अग्नि में घी का काम किया।

प्रश्न 20. 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन–सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

उत्तर– (1) 'मरजादा न लही' के माध्यम से प्रेम की मर्यादा न रहने की बात कही जा रही है। (2) कृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियाँ उनके वियोग में जल रही थीं। कृष्ण के आने पर ही उनकी विरह वेदना मिट सकती थीं, परंतु कृष्ण ने स्वयं न आकर उद्धव को यह संदेश देकर भेज दिया कि गोपियाँ कृष्ण का प्रेम भूलकर योग–साधना में लग जाएँ। (3) प्रेम के बदले प्रेम का प्रतिदान ही प्रेम की मर्यादा है, लेकिन कृष्ण ने गोपियों के प्रेम रस के उत्तर में योग की शुष्क धारा भेज दी। इस प्रकार कृष्ण ने प्रेम की मर्यादा नहीं रखी। (4) वापस लौटने का वचन देकर भी वे गोपियों से मिलने नहीं गए।

प्रश्न 21. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

उत्तर– गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को हारिल पक्षी के उदाहरण के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। जिस प्रकार हारिल पक्षी सदैव अपने पंजे में कोई लकड़ी अथवा तिनका पकड़े रहता है, उसे किसी भी दशा में नहीं छोड़ता। उसी प्रकार गोपियों ने भी मन, कर्म और वचन से कृष्ण को अपने हृदय में दृढ़तापूर्वक बसा लिया है।

वे जागते, सोते, स्वप्नावस्था में, दिन–रात कृष्ण–कृष्ण की ही रट लगाती रहती है। इस प्रकार वे अनन्य भाव से कृष्ण के प्रेम में निमग्न हैं।

प्रश्न 22. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

उत्तर– गोपियों के अनुसार राजा का धर्म यह होना चाहिए कि वह प्रजा को कभी भी सताए नहीं और निरंतर उनकी भलाई में लगा रहे। साथ ही वह अपनी प्रजा को अन्याय से छुटकारा दिलाए।

प्रश्न 23. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

उत्तर- परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए निम्नलिखित तर्क दिए-

(1) लक्ष्मण ने कहा कि बचपन में हमने बहुत से धनुष तोड़ दिए थे, परंतु आपने कभी ऐसा क्रोध नहीं किया। इसी धनुष पर इतनी ममता क्यों है?

(2) सभी धनुष तो एक जैसे ही होते हैं।

(3) राम ने तो इसे नए के भ्रम में देखा था।

(4) यह धनुष तो राम के छूते ही टूट गया, इसमें उनका क्या दोष? आप तो बिना कारण ही क्रोध कर रहे हैं।

प्रश्न 24. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताईये।

उत्तर- लक्ष्मण ने वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ बताईं- (1) वीर योद्धा धैर्यवान होते हैं। (2) वे क्षोभ से रहित होते हैं। (3) वीर पुरुष किसी को अपशब्द नहीं कहते। (4) शूरवीर युद्ध के मैदान में वीरतापूर्ण कार्य करके दिखाते हैं। (5) वे अपनी वीरता के बारे में अपने मुँह से नहीं बताते। (6) वे युद्ध में शत्रु को उपस्थित पाकर अपने प्रताप की डींग नहीं मारा करते हैं।

प्रश्न 25. अवधी भाषा आज किन-किन क्षेत्रों में बोली जाती है?

उत्तर- अवधी भाषा आज कानपुर से पुरब चलते ही उन्नाव के कुछ भागों लखनऊ, फैजाबाद, बाराबंकी, प्रतापगढ़, सुलतानपुर, जौनपुर, मिर्जापुर, वाराणसी, इलाहाबाद तथा आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है।

प्रश्न 26. कवि जयशंकर प्रसाद आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहते थे?

उत्तर- (1) कवि जयशंकरप्रसाद आत्मकथा लिखने से इसलिए बचना चाहता है, क्योंकि उसके जीवन में बहुत सारी पीड़ादायक घटनाएँ हुई हैं।

(2) अपनी सरलता के कारण उसने कई बार धोखा भी खाया है।

(3) कवि के पास मात्र कुछ सुनहरे क्षणों की स्मृतियाँ ही शेष हैं। जिनके सहारे वह अपनी जीवन-यात्रा पूरी कर रहा है। उन यादों को उसने अपने अंतर्मन में सँजोकर रखा है और उन्हें प्रकट करना नहीं चाहता।

(4) कवि को लगता है कि उसकी आत्मकथा में ऐसा कुछ नहीं है जिसे महान और रोचक मानकर लोग आनंदित होंगे।

(5) इन्हीं कारणों से कवि आत्मकथा लिखने से बचना चा है।

प्रश्न 27. आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय नहीं' कवि ऐसा क्यों कहता है?

उत्तर- (1) आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी न कहने से कवि का तात्पर्य यह है कि अभी उसके लिए आत्मक का उचित समय नहीं है।

(2) कवि द्वारा ऐसा कहने का कारण यह है कि कवि को अ दुखों के सिवाय और कोई उपलब्धि नहीं मिल सकी है।

(3) कवि के जीवन का अभी छोटा-सा भाग ही व्यतीत हुआ

(4) कवि को अपने जीवन में जो गहरी पीड़ा मिली है, उसे उ चुपचाप अकेले ही सहा है। उसकी व्यथा अभी थककर सोई है, अर्थात् बहुत समय तक सहते रहने के बाद उसे अपनी पुरा वेदना से मुक्ति मिल सकी है।

(5) इस प्रकार कवि बहुत कठिनाई से उस पीड़ा को भूल पाय है।उसे आत्मकथा लिखते समय पुनः उस पीड़ा को झेलना होग जो उसके लिए कष्टदायक है।

प्रश्न 28. स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि प्रसाद जी का क्या आशय है?

उत्तर- कवि के जीवन का अधिकांश भाग व्यथा से भरा हुआ रहा है। उसके जीवन में कुछ ही आनंद के क्षण आए हैं, जो चाँदनी रातों में प्रेयसी से मिलने की भाँति सुखद है। कवि अपने जीवन की दुख भरी यात्रा करते-करते थक चुका है। अपने जीवन की राह में आगे बढ़ते हुए कतिपय पुराने सुखद क्षणों को याद करके ही वह अपना सफर तय कर रहा है। इस प्रकार उसकी मधुर स्मृति ही उसकी यात्रा का संबल बनी हुई है। स्मृति के 'पाथेय' बनने से कवि का यही आशय है।

प्रश्न 29. 'निराला' बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहते हैं, क्यों?

उत्तर- कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के लिए नहीं कहता है, क्योंकि ऐसा कहने से यह प्रतीत होता है कि वह बादल से कोमल स्वर में प्रार्थना कर उसके शांत व मनोहर स्वरूप का चित्रण कर रहा है।

इस कविता में कवि बादल से 'गरजने' के लिए कहता है। इसका कारण यह है कि वह बादल के माध्यम से नूतन कविता की रचना करने वाले कवियों से यह आह्वान करना चाहता है कि वे बादलों की गरज के समान विप्लवकारी स्वर में क्रांति चेतना से भरे हुए काव्य का सृजन करें।

प्रश्न 30. कविता का शीर्षक 'उत्साह' क्यों रखा गया है?

उत्तर– (1) इस कविता में कवि ने बादल से 'गरजने' का आह्वान किया है, जो बादलों के मोहक स्वरूप के स्थान पर उनके उत्साह को प्रदर्शित करता है। (2) यहाँ नूतन कविता का सृजन करने वाले कवियों से अपने हृदय में बिजली की छवि बनाए रखने की बात कही गई है। इस प्रकार उनसे क्रांति–चेतना के विचार का अभिव्यक्त करने का आह्वान किया गया है। इससे उनमें उत्साह का संचार होता है। (3) अपनी कविताओं में भी विद्युत छिपाने के लिए कहकर कवि ने उन्हें उत्साहपूर्ण कविताएँ लिखने के लिए प्रेरित किया है। (4) बादलों से यह आह्वान किया गया है कि बरसकर विश्व के व्याकुल लोगों की व्याकुलता दूर कर धरती को शीतलता प्रदान करें। (5) इस प्रकार बादलों की लोक–कल्याण के कार्य करने के लिए उत्साहित किया गया है।

प्रश्न 31. 'उत्साह' कविता में बादल किन–किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

उत्तर– कविता 'उत्साह' में बादल अनेक अर्थों की ओर संकेत करता है– (1) बादल घनघोर रूप धारण कर पूरे आकाश को आच्छादित कर लेने वाला दिखाया गया है। यहाँ वह असीम बलशाली होने के अर्थ की ओर संकेत करता है। (2) बादल को गरजते हुए चित्रित कर कवि ने उसे 'उत्साह' के अर्थ में लिया है। (3) इस कविता में बादल नूतन कविता करने वाले रचनाकारों के लिए विप्लव, विध्वंस और क्रांति चेतना के अर्थ की ओर संकेत करता है। (4) बादल पीड़ित प्यासे जनों की आकांक्षा को पूरा करने वाले परोपकारी के अर्थ की ओर भी संकेत करता है। (5) कविता में बादल अनंत सत्ता के वाहक के रूप में भी संकेतिक है।

प्रश्न 32. कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है?

उत्तर– (1) फागुन में प्रकृति की सुंदरता में ऐसा निखार आ गया है कि उसकी आभा रमा नहीं पा रही है।

(2) फागुन की हवा का स्पर्श पाते ही धरती का कोना–कोना उल्लास से भर उठा है।

(3) जिस वस्तु पर भी कवि की दृष्टि जाती है, उसका अनुपम सौंदर्य उसे कल्पना की दुनिया में उड़ा ले जाता है।

(4) फागुन की सुंदरता सर्वव्यापक हो गई है।

(5) उसके सौंदर्य की मादकता ने जैसे जादू करके कवि की दृष्टि को ऐसे बाँध दिया है कि उसकी आँखें हट नहीं पा रही है।

प्रश्न 33. फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है?

उत्तर– फागुन में प्रकृति में कुछ इस तरह का निखार आ जाता है जो अन्य ऋतुओं में संभव नहीं होता। इस प्रकार की भिन्नता निम्नलिखित है–

1. पक्षियों का उल्लास– फागुन आते ही कोयल कूकने लगती है, पक्षी चहचहाने लगते हैं। उल्लास में भरकर वे आकाश में उड़ान भरते हैं तो लगता है कि संपूर्ण प्रकृति ही उल्लसित हो उठी है। मानव मन भी कल्पना–लोक में विचरण करने लगता है।

2. पौधों का सौंदर्य– पतझड़ के बाद ही फागुन का महीना आता है। इस समय पेड़–पौधों पर नए पल्लव आ जाते हैं। कहीं लालिमा तो कहीं हरीतिमा का साम्राज्य हो जाता है। चारों तरफ फूल ही फूल दिखाई देने लगते हैं। रंग–बिरंगे फूलों का यह सौंदर्य अन्य ऋतुओं में देखने को नहीं मिलता।

3. सुगंधित पवन– फागुन की हवा धरती के कण–कण में नई स्फूर्ति एवं नए उत्साह का संचार कर देती है। सुगंधित पवन के रोम–रोम पुलकित हो उठता है। हवा की ऐसी ताजगी अन्य वस्तुओं में नहीं मिलती।

4. मादक वातावरण– फागुन में सारा वातावरण मादकता से परिपूर्ण हो जाता है। हवा में फूलों की भीनी–भीनी सुगंध और प्रकृति में सर्वत्र दृष्टिगत होती सुंदरता से सबका मन मस्त हो जाता है। दूसरी ऋतुओं में इस तरह का मादक वातावरण नहीं होता।

5. सुहावना मौसम– फागुन के महीने में मौसम बड़ा सुहावना होता है न अधिक गर्मी होती है और न अधिक सर्दी आकाश बिल्कुल स्वच्छ होता है। इस तरह का आनंददायक मौसम अन्य ऋतुओं में संभव नहीं है।

प्रश्न 34. गिरिजाकुमार माथुर ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है?

उत्तर– कवि कहता है कि, जो कटु यथार्थ है, उसे तुम स्वीकार करो। कवि ने ऐसा इसलिए कहा है, क्योंकि यदि हम विगत सुखों को याद करते हुए कल्पना की दुनिया में ही खोए रहें और वर्तमान से पलायन कर जाएँ तो इससे किसी भी समस्या का समाधान नहीं होगा। इसके स्थान पर हम कठिन यथार्थ का सामना करके ही वर्तमान दुखों से छुटकारा पाने का प्रयास कर सकते हैं। इस प्रकार वर्तमान का सामना करके ही भविष्य को सँवारा जा सकता है।

प्रश्न 35. 'छाया' शब्द किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है? कवि ने उसे छूने के लिए मना क्यों किया है?

उत्तर– 'छाया' शब्द यहाँ बीती हुई सुखद यादों के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है। कवि ने उसे छूने के लिए इसलिए मना किया है क्योंकि विगत सुख को याद करने से कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है। इससे तो वर्तमान का दुख और भी गहरा हो जाएगा।

प्रश्न 36. 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं, छाया मत छूना' कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?

उत्तर– (1) रेगिस्तान में भीषण गर्मी के समय जब रेत तपने लगती है,तब दूर स्थित रेत के ऊपर पानी की लहरों का आभास होने लगता है।

गर्मी के कारण प्यासा व्याकुल हिरन समझता है कि दूर आगे पानी से लबालब नदी बह रही है। वह अत्यंत तीव्र गति से उस ओर दौड़ने लगता है।

वह जितना आगे जाता है, पानी की लहरें उतनी ही आगे बहती दिखाई देती है। वह पानी की तलाश में दूर तक चलता चला जाता है, परंतु न तो कभी उसे पानी मिलता है और न ही उसकी प्यास बुझ पाती है। इसे ही मृगतृष्णा कहते हैं।

(2) कविता में मृगतृष्णा का प्रयोग 'छलावा' के अर्थ में हुआ है।

प्रश्न 37. 'छाया मत छूना' कविता में व्यक्त दुख के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'छाया मत छूना' कविता में दुख के अनेक कारण बताए गए हैं–

विगत सुख की स्मृति– बीते हुए पुराने सुखद समय की यादों को इस कविता में दुख का एक प्रमुख कारण बताया गया है। विगत सुखों को याद करने से वर्तमान दुख और भी गहरा हो जाता है।

धन व सम्मान की चाह– मनुष्य धन–दौलत एवं सम्मान प्राप्त करने के उद्देश्य से निरंतर भाग–दौड़ में लगा रहता है। परंतु वह जितना ही दौड़ता है, उतना ही और भी भ्रम में पड़ जाता है। इस प्रकार उसे दुख ही प्राप्त होता है।

प्रभुता की मृगतृष्णा– प्रभुत्व प्राप्त करने की आकांक्षा में मनुष्य आगे बढ़ता चला जाता है, परंतु यह उसके लिए एक छलावा ही सिद्ध होता है। मृगतृष्णा के समान उसकी प्रभुतासंपन्न होने की चाह कभी भी पूरी नहीं होती और इसका परिणाम दुखदायी ही होता है।

सुख की क्षणभंगुरता– कविता में सुख को एक ऐसी चाँदनी रात के रूप में दिखाया गया है जिसमें काली अंधेरी रात छिपी हुई है। यहाँ यह दर्शाया गया है कि सुख स्थायी नहीं होता। सुख के बाद दुख अवश्य ही आता है।

दुविधा की स्थिति– दुविधा भी मनुष्य के लिए दुख का कारण बनती है। असमंजस की स्थिति में साहस रहते हुए भी मनुष्य कुछ नहीं कर पाता। वह निराशा व दुख में डूब जाता है।

समय पर उपलब्धि न मिलना– कविता में समय पर उपलब्धि के प्राप्त न होने को भी दुख का एक कारण बताया गया है।

प्रश्न 38. आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना।

उत्तर– माँ ने लड़की से कहा कि लड़की होना पर लड़कों जैसी मत दिखाई देना–

(1) माँ द्वारा ऐसा कहने का कारण यह था कि एक स्त्री होने के नाते वह स्वयं भी उन समस्याओं का सामना कर चुकी थी जो हमारे समाज में नारी को झेलनी पड़ती है। वह नहीं चाहती थी कि उसकी बेटी भी वैसी ही दुर्बलता का शिकार बने।

(2) माँ लड़की को बताना चाहती थी कि स्त्री पर अनेक प्रकार के बंधन लगा दिए जाते हैं। इस कारण स्त्री में दुर्बलता आ जाती है। वह भेदभाव सहते हुए परतंत्रता का जीवन जीने को विवश हो जाती है।

(3) लड़की की माँ उसे यही समझाती है कि वह भावी जीवन में नारी–सुलभ दुर्बलता न आने दे एवं अनुचित सामाजिक बंधनों का प्रतिकार करें।

प्रश्न 39. 'आग से रोटियाँ' सेंकने के लिए माँ ने बेटी को सचेत करना क्यों जरूरी समझा?

उत्तर– माँ ने बेटी को सचेत करना इसलिए जरूरी समझा क्योंकि

उसकी बेटी इन सब बातों से अनजान थी। वह अत्यंत भोली एवं सरल थी। उसने घर में केवल सुख ही देखा था। वह जीवन के दुखों से अपरिचित थी। माँ को यह डर था कि उसकी भोली–भाली बेटी समाज–व्यवस्था के अनुरूप आदर्श रूपी बंधन को स्वीकार कर सामाजिक भेद–भाव का शिकार हो जाएगी। वह समाज के प्रतिमान के अनुरूप स्वयं को अबला मान लेगी। माँ नहीं चाहती कि उसकी बेटी को यह पीड़ा भोगनी पड़े। इसी कारण वह अनुचित बंधनों का प्रतिकार करने के लिए उसे सचेत करती है।

प्रश्न 40. माँ ने अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' क्यों लग रही थी?

उत्तर– माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' इसलिए लग रही थी क्योंकि वह उसके सबसे निकट थी। वह माँ के सुख–दुख की साथी थी। उसके जाने के बाद माँ का आँचल एकदम खाली हो जाने वाला था।

प्रश्न 41. माँ ने बेटी को क्या–क्या सीख दी?

उत्तर– माँ ने बेटी को निम्न सीख दी है– (1) माँ ने अपनी बेटी को यह सीख दी कि तुम अपनी सुंदरता व कोमलता के एहसास से गौरवान्वित मत होना। स्त्री की कोमलता को उसकी कमजोरी समझकर उसका उपहास किया जाता है। (2) माँ कहती है स्त्री–सुलभ सौंदर्य व कोमलता होने के बावजूद तुम अपनी दुर्बलता प्रकट मत करना। (3) तुम सामाजिक–व्यवस्था के अनुचित बंधनों को स्वीकार मत करना। (4) तुम आदर्शीकरण का प्रतिकार करना।

भावार्थ

प्रश्न 7. निम्नलिखित पद्यांशों का संदर्भ–प्रसंग सहित भावार्थ लिखिए। **(4 अंकीय प्रश्न)**

(1) ऊधो, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तै, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माँह तेल की गागरि, बूँद न ताकौ लागी।
प्रीति–नदी मैं पाँऊ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी।
सूरदास अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।।

उत्तर– भावार्थ– गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हे उद्धव, तुम सचमुच बहुत भाग्यशाली हो क्योंकि तुम प्रेम–बंधन से बिल्कुल अछूते अर्थात् स्वतंत्र हो और न ही तुम्हारा मन किसी के प्रेम में अनुरक्त हुआ है। जिस प्रकार कमल के पत्ते सदा जल के अन्दर रहते हैं परंतु वे जल से अछूते ही रहते हैं, उन पर जल की एक बूँद का भी धब्बा नहीं लगता और जिस प्रकार तेल की मटकी को जल में रखने पर जल की एक बूँद भी उस पर नहीं ठहरती, उसी प्रकार तुम कृष्ण के समीप रहते हुए भी उनके प्रेम बंधन से सर्वथा मुक्त हो। तुमने प्रेम रूपी नदी में कभी पाँव ही नहीं डुबोया अर्थात् तुमने कभी किसी से प्रेम ही नहीं किया और न ही कभी किसी के रूप–लावण्य ने तुम्हे आकर्षित किया है। गोपियाँ उद्धव से कहती है कि हम तो भोली–भाली अबलाएँ हैं और हम कृष्ण के प्रेम में पग गई हैं, अत: उनसे विमुख नहीं हो सकतीं। हमारी स्थिति उन चींटियों के समान हैं जो गुड़ पर आसक्त होकर उससे चिपट जाती है और फिर स्वयं को छुड़ा न पाने के कारण वहीं प्राण त्याग देती हैं।

(2) हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद–नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस–निसि, कान्ह–कान्ह जकरी।
सुनत जोग लगत है ऐसौ, ज्यौं कुरूई ककरी।
सु तौ ब्याही हमकौं ले आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौपों, जिनके मन चकरी।।

उत्तर– भावार्थ– गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हम निरंतर कृष्ण के ध्यान में उसी प्रकार निमग्न रहती हैं, जिस प्रकार हारिल पक्षी कहीं भी हो और किसी भी दशा में हो, सहारे के लिए अपने पंजों में कोई न कोई लकड़ी अथवा किसी तिनके को पकड़े रहता है। हमने अपने मन, कर्म और वचन से नंदनंदन कृष्ण को अपने हृदय में दृढ़ करके पकड़ लिया है। हमारा मन जागते, सोते, स्वप्नावस्था में, दिन–रात कृष्ण के नाम की रट लगाता रहता है अर्थात् कृष्ण के नाम का स्मरण ही हमारा एकमात्र ध्येय रह गया है। तुम्हारे योग की बातें सुनकर ऐसा लगता है जैसे हमने कोई कड़वी ककड़ी मुँह में रख ली हो, अर्थात् योग–ज्ञान की बातें हमारे लिए कड़वी ककड़ी के समान अरुचिकर एवं ग्रहण न करने योग्य हैं। तुम तो हमारे लिए योग रूपी एक ऐसी बीमारी लेकर आए हो जिसे हमने न तो कभी देखा है, न सुना है और न ही भोगा है। सूरदास कहते हैं, गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि ज्ञान–योग रूपी यह बीमारी तो तुम उन्हें प्रदान करो जिनका मन हमेशा चंचल रहता है।

गोपियों के कहने का भाव यह है कि योग का उपदेश अस्थिर चित्त वाले लोगों के लिए ही उपयोगी है। उनका हृदय तो पहले से ही कृष्ण के प्रेम में पूर्णतया स्थिर है।

(3)

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाई बोले मुनि कोही।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जोहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।

उत्तर–भावार्थ– शिव का धनुष टूटने पर मुनि परशुराम को अत्यंत क्रोधित हुआ देखकर श्रीराम विनम्रतापूर्व बोले– हे नाथ! शिवजी के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई एक दास ही होगा। क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते? यह सुनकर क्रोधी मुनि क्रुद्ध होकर बोले– सेवक वह है जो सेवा का काम करे। शत्रु का काम करके तो लड़ाई ही करनी चाहिए। हे राम! सुनो, जिसने शिवजी के धनुष को तोड़ा है, वह सहस्रबाहु के समान मेरा शत्रु है।

(4)

मधुप गुन–गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,
मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी।
इस गंभीर अनंत–नीलिमा में असंख्य जीवन–इतिहास।
यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य–मलिन उपहास।

उत्तर–भावार्थ– कवि कहता है कि मन रूपी भौंरा गुनगुनाते हुए यह अपनी कौन–सी कहानी कह जाता है कि आज इतनी सारी घनी पत्तियाँ मुरझाकर गिर रही हैं। कवि के कहने का आशय यह है कि आज उसके मन में कुछ ऐसी पुरानी स्मृतियाँ आने लगी हैं जिससे उसका हृदय अत्यधिक दुख का अनुभव कर रहा है। कवि कहता है कि मन के इस अंतहीन विस्तार में जीवन की ऐसी अनगिनत घटनाएँ हैं जो बुरी तरह से निंदा करती हुई मेरी हँसी उड़ाया करती है।

(5) बादल, गरजो!
घेर घेर घोर गगन धाराधर ओ!
ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के–से पालि,
विद्युत छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो–बादल, गरजो!

उत्तर– भावार्थ– कवि बादल को संबोधित करते हुए कहता है कि ऐ बादल, गरजो! वह पुनः कहता है कि ओ बादल! तुम अत्यधिक सघन होकर आकाश को चारों ओर से घेर लो, अर्थात् उमड़–घुमड़ कर चारों तरफ छा जाओ।
समाज में बदलाव की आकांक्षा रखने वाले कवियों को संबोधित करते हुए कवि कहता है कि ऐ नवजीवन का काव्य रचने वाले कवि! तुम बादलों में काले घुँघराले सुंदर–बालों की कल्पना करते हुए भी अपने हृदय में बिजली की कड़क और चमक धारण किए हुए अपनी नई कविता में बिजली के समान विप्लव छिपाकर क्रांति चेतना का स्वर भर दो। ऐ बादल गरजो।

(6) अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।

उत्तर– भावार्थ– फागुन के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि फागुन की सुंदरता समा नहीं पा रही है। फागुन की कांति शरीर में सट नहीं पा रही है।

(7) छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में है सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र–गंध फैली मनभावनी,
तन–सुगंध शेष रहीं, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली–सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण–

उत्तर– भावार्थ– कवि कहता है कि ऐ मन! छाया को मत छूना, अर्थात् बीत गए सुखद क्षणों को याद मत करना, नहीं तो दुख दुगुना हो जाएगा। जीवन में बहुत–सा रंग–बिरंगी सुंदर यादें हैं। सुंदर चित्रों की स्मृति के साथ उसके आस–पास मन को भाने वाली गंध भी फैली हुई है। तारों भरी चाँदनी रात बीत चुकी है, अब तो देह की सुगंध ही शेष रह गई है। बालों में लगे फूलों की याद चाँदनी बन गई है, अर्थात् सुखद समय बीत चुका है।, अब तो उसकी चाँदनी जैसी मधुर यादें ही बाकी रह गई है। उन सुखद क्षणों को भूलकर भी किया गया एक स्पर्श हर क्षण को पुनः जीवित कर देता है, अर्थात् यदि विगत सुखों को थोड़ा सा भी याद करने का प्रयास किया गया तो पुरानी सारी यादें सजीव हो उठेगी। इसलिए ऐ मन, बीते हुए सुखद क्षणों को याद मत

करना, वरना दुख दुगुना हो जाएगा। भाव यह है कि विगत के सुखों को याद करने से वर्तमान का दुख और गहरा हो जाता है।

(8) **माँ ने कहा पानी में झाँककर**
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए हैं
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन है स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

उत्तर– भावार्थ– कन्यादान के समय लड़की की माँ ने उससे कहा कि तुम ससुराल में पानी में अपने मुखड़े की परछाई देखकर उसकी सुंदरता से मोहित मत हो जाना। आग तो रोटी सेंकने के लिए होती है, जलने के लिए नहीं होती। कपड़े और गहने नारी जीवन के लिए बंधनस्वरूप होते हैं, जिस प्रकार शब्दों के भ्रम मनुष्य को बाँध लेते हैं।

भाव यह है कि स्त्री की सुंदरता और कोमलता उसे आत्मसंतुष्टि तो देती है परंतु उसी सौंदर्य की आड़ में समाज उसके लिए आचरण संबंधी विशेष नियम लागू कर देता है। उसे 'आदर्श' का नाम देते हुए नारी पर अनेक प्रतिबंध लगा दिए जाते हैं। इस प्रकार लुभावने शब्दों द्वारा भ्रमित करके स्त्री को बंधन में बाँध दिया जाता है। सुंदर कपड़े और गहने जैसी सजावटी वस्तुएँ वास्तव में स्त्री के जीवन में बंधन का ही कार्य करती है। माँ आग का उदाहरण देती हुई बेटी को समझाती है कि आग देखने में आकर्षक होती है परंतु रोटी सेंकने के लिए ही वह उपयोगी है। यदि वही आग हमें जलाने लगे तो वह हमारे लिए हानिकारक है। इसी प्रकार सौंदर्य ओर कोमलता यदि स्त्री को गरिमा और महत्ता दे, तभी उसकी उपयोगिता है। यदि वही उसके लिए बंधन का कारण बन जाए तो वह उसके लिए निरर्थक है। ऐसी सुंदरता पाकर प्रसन्न होना मूर्खता ही है।

माँ अपनी बेटी से कहती है कि तुम लड़की होते हुए भी लड़की जैसी मत दिखाई देना, अर्थात् स्त्री–सुलभ सौंदर्य और कोमलता की स्वामिनी होते हुए भी तुम दुर्बलता मत प्रकट करना। समाज द्वारा नारी के लिए गढ़े गए आदर्शों के अनुचित बंधन को स्वीकार मत करना। ❑

इकाई–2 : काव्य–बोध

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(एक अंकीय)

प्रश्न 1. निम्नलिखित कथनों के सही विकल्प ज्ञात कीजिए–

(1) सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य है–
(a) रामचरित मानस (b) कामायनी
(c) साकेत (d) पद्मावत

(2) 'रामचरित मानस' महाकाव्य के रचयिता हैं–
(a) तुलसीदास (b) मलिक मोहम्मद जायसी
(c) मैथलीशरण गुप्त (d) जयशंकर प्रसाद

(3) रौद्र रस का स्थायी भाव होगा–
(a) उत्साह (b) हँसी
(c) क्रोध (d) विस्मय

(4) दोहा छन्द में मात्राएँ होती हैं–
(a) 15 (b) 22
(c) 26 (d) 24

(5) 'चौपाई छन्द' प्रकार है–
(a) मात्रिक छन्द का (b) वार्णिक छन्द का
(c) मुक्तक छन्द का (d) गेय छन्द का

(6) शृंगार रस का स्थायी भाव है–
(a) रौद्र (b) रति
(c) निर्वेद (d) अद्भुत

(7) 'अबली नसानी अब न नसैहो' पंक्ति में निहित रसभ है–
(a) वीभत्स रस (b) अद्भुत रस
(c) भयानक रस (d) शान्त रस

(8) रस के अंग या अवयव माने गए हैं–
(a) पाँच (b) छः
(c) चार (d) सात

(9) शब्दालंकार के प्रकार हैं–
(a) उपमा, रूपक, अनुप्रास (b) अनुप्रास, चमक, श
(c) अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, यमक (d) उपनव, रूपक, उत

(10) छन्द के प्रमुख तत्व माने गए हैं–

(a) तीन (b) चार

(c) पाँच (d) छः

उत्तर– (1) रामचरित मानस (2) तुलसीदास (3) क्रोध (4) 24 (5) मात्रिक (6) रति (7) शांत रस (8) 4 (9) अनुप्रास, यमक, श्लेष (10) छः।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) रंगमंच पर अभिनव आदि देखकर रसानुभूति कराने वाला ..... कहलाता है। (श्रव्यकाव्य/दृश्यकाव्य)

(2) चौपाई छन्द में ..... मात्राएँ होती हैं। (चौबीस/सोलह)

(3) 'कामायनी' ..... हैं। (खण्डकाव्य/महाकाव्य)

(4) काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म ..... कहलाते हैं। (छंद/अलंकार)

(5) जिसके प्रति स्थायी भाव उत्पन्न हो, वह ..... कहलाता है। (आलम्बन/उद्दीपन)

(6) श्रव्य काव्य के ..... भेद होते हैं। (तीन/दो)

(7) 'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' ..... की परिभाषा है। (आचार्य विश्वनाथ/भरत मुनि)

(8) 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य ..... की रचना है। (कवि दिनकर/मैथलीशरण गुप्त)

(9) जिस काव्य में अगले व पिछले गद्यों का पारस्परिक संबंध न हो उसे ..... कहा जाता है। (मुक्तक काव्य/प्रबन्ध काव्य)

उत्तर– (1) दृश्य काव्य (2) सोलह (3) महाकाव्य (4) अलंकार (5) आलंबन (6) तीन (7) भरतमुनि (8) कवि दिनकर (9) मुक्तक काव्य।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये–

)	(अ)	(ब)
)	पृथ्वीराज रासो	(a) 33
	संचारी भावों की संख्या	(b) महाकाव्य
	महाकाव्य	(c) निर्वेद
	शान्त रस का स्थायी भाव	(d) खण्डकाव्य
	पंचवटी	(e) रामचरित मानस

उत्तर– (1) b (2) a (3) e (4) c (5) d.

(2) सही जोड़ी बनाइये–

	(अ)	(ब)
(1)	जिन कारणों से स्थायी भाव उदीप्त होता है।	(a) मैथलीशरण गुप्त
(2)	नायक-नायिका मिलन	(b) उद्धीपन विभाव
(3)	हिन्दी का सबसे अधिक लोकप्रिय महाकाव्य	(c) गेय मुक्तक
(4)	रागात्मकता की प्रधानता वाला मुक्तक	(d) श्रृंगार रस
(5)	साकेत	(e) रामचरित मानस

उत्तर– (1) (b) (2) (d) (3) (e) (4) (c) (5) (a).

प्रश्न 4. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिए–

(1) नायक के सम्पूर्ण जीवन का चित्रण किस काव्य में मिलता है?

(2) जिस काव्य में एक ही सर्ग होता है उसे क्या कहते हैं?

(3) आश्रय के चित्त में उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकारों को क्या कहते हैं?

(4) जहाँ नायक-नायिका के विरह का वर्णन है, वहाँ कौन-सा रस होगा?

(5) स्थायी भाव जागने या उदीप्त होने पर आश्रय की शारीरिक चेष्ठाएँ क्या कहलाती है?

(6) वर्ण, मात्रा, यति आदि से नियोजित शब्द रचना को क्या कहते हैं?

(7) स्थायी भावों के उत्पन्न होने के कारणों को क्या कहते हैं?

(8) वात्सल्य रस के अलावा रसों की संख्या कितनी मानी गई है?

(9) 'श्रीकृष्ण के सुन वचन, अर्जुन क्रोध से जलने लगे' में कौन-सा रस विद्यमान है?

(10) चौपाई छन्द में कितनी मात्राएँ होती हैं–

उत्तर– (1) नायक के सम्पूर्ण जीवन का चित्रण महाकाव्य में मिलता है।

(2) जिस काव्य में एक ही सर्ग होता है उसे खण्डकाव्य कहते हैं।

(3) आश्रय के चित में उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकारों को संचारीभाव कहते हैं।

(4) जहाँ नायक नायिका के विरह का वर्णन होता है वहाँ वियोग श्रृंगार रस होता है।

(5) स्थायी भाव जागने या उदीप्त होने पर आश्रय की शारीरिक चेष्टाएँ उद्दीपन विभाव कहलाती है।
(6) ऐसी शब्द रचना को छन्द कहते हैं।
(7) स्थाई भावों के उत्पन्न होने के कारण को विभाव कहते हैं।
(8) वात्सल्य रस के अलावा कुल रसों की संख्या नौ मानी गई है।
(9) प्रस्तुत पंक्ति में वीर रस है।
(10) चौपाई छंद के प्रत्येक चरण में सोलह–सोलह मात्राएँ होती हैं।

प्रश्न 5. सत्य/असत्य बताइये–

(1) प्रबन्ध काव्य में पूर्वापर संबंध नहीं होता है।
(2) अस्थिर मनोविकारों को स्थायी भाव कहते हैं।
(3) विभाव, अनुभाव एवं संचारी भाव के संयोग से रस निष्पत्ति होती है।
(4) करूण रस का स्थायी भाव शोक है।
(5) 'अनुराग तडाग में भानु उदै' में उपमा अलंकार है।
(6) 'रामचरित मानस' का प्रमुख छन्द चौपाई है।
(7) वीभत्स रस का स्थायी भाव जुगुप्सा (घृणा) है।
(8) शृंगार रस का स्थायी भाव रति है।
(9) खण्डकाव्य मुक्तक काव्य का एक भेद है।
(10) महाकाव्य प्रबन्ध काव्य का एक भेद है।

उत्तर– (1) सत्य (2) असत्य (3) सत्य (4) सत्य (5) असत्य (6) सत्य (7) सत्य (8) सत्य (9) असत्य (10) सत्य।

प्रश्न 6. निम्नलिखित प्रश्नों के 30–30 शब्द में उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. काव्य की परिभाषा व काव्य के मुख्य भेद लिखिए।

उत्तर– काव्य के दो और भेद किए गए हैं, महाकाव्य और खंडकाव्य। काव्य दो प्रकार का माना गया है। दृश्य और श्रव्य। दृश्य काव्य वह है जो अभिनय द्वारा दिखलाया गया जैसे नाटक, प्रहसन आदि जो पढ़ने और सुनने योग्य हो वह श्रृव्य है। श्रव्य काव्य दो प्रकार का होता है, गद्य और पद्य।

काव्य के मुख्य भेद– श्रृव्य काव्य और दृश्य काव्य।

प्रश्न 2. शैलों की दृष्टि से काव्य के भेद लिखिए।

उत्तर– (1) पद्य काव्य– इसमें किसी कथा का वर्णन काव्य में किया जाता है।

(2) गद्य काव्य– इसमें किसी कथा का वर्णन गद्य में किया जाता है, जैसे–जयशंकर की कामायनी।

(3) चंपू काव्य– इसमें गद्य और पद्य दोनों का समावेश होता है।

प्रश्न 3. प्रबन्ध काव्य की परिभाषा व उदाहरण लिखिए।

उत्तर– इसमें कोई प्रमुख कथा काव्य के आदि से अंत तक क्रमबद्ध रूप में चलती है। कथा का क्रम बीच में कहीं नहीं टूटता और गौण कथाएँ बीच–बीच में सहायक बनकर आती है।

उदाहरण– रामचरित मानस–एक–महाकाव्य–इसमें किसी ऐतिहासिक या पौराणिक महापुरुष की संपूर्ण जीवन कथा का आद्योपांत वर्णन होता है।

प्रश्न 4. मुक्तक काव्य की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर– मुक्तक काव्य या कविता का वह प्रकार है, जिसमें प्रबन्धकीयता न हो, इसमें एक छन्द में कथित बात का दूसरे छन्द में कही गयी बात से कोई संबंध या तारतम्य होना आवश्यक नहीं है।

उदाहरण– कबीर एवं रहीम के दोहे, मीराबाई के पद्य आदि सब मुक्तक रचनाएँ हैं।

प्रश्न 5. प्रबन्ध काव्य के प्रमुख भेदों के नाम लिखिए।

उत्तर– प्रबन्ध काव्य के प्रमुख दो भेद हैं– महाकाव्य, खंडकाव्य

प्रश्न 6. महाकाव्य की परिभाषा उदाहरण सहित लिखि

उत्तर– जिसमें सर्गों का निबंधन हो वह महाकाव्य कहलाता है। महाकाव्य में देवता या सदृश क्षत्रिय, जिसमें धीरोत्तत्वादि गुण हों, नायक होता है, कहीं एक वंश के अनेक सत्कुलीन भूप नायक होते हैं। शृंगार वीर और शांत में से कोई एक रस अंगी होता है तथा अन्य सभी रस अंग रूप होते हैं।

उदाहरण– रामायण (वाल्मीकि), महाभारत (वेदव्यास)।

प्रश्न 7. खण्डकाव्य से आप क्या समझते हैं? उदा सहित लिखिए।

उत्तर– खण्डकाव्य साहित्य में प्रबंध काव्य का एक रू जीवन की किसी घटना विशेष को लेकर लिखा गया खण्डकाव्य है। खण्डकाव्य शब्द से ही स्पष्ट होता है कि मानव जीवन की किसी एक ही घटना की प्रधानता रहती

उदाहरण– तुलसीदास, सुदामाचरित, भँवरगीत, पार्वती आदि।

प्रश्न 8. आख्यानक गीतियाँ से क्या तात्पर्य है? उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर– आख्यानक गीतियाँ– महाकाव्य और खण्डकाव्य से भिन्न पबद्ध कहानी का नाम आख्यानक गीति है। इसमें वीरता, साहस, पराक्रम, बलिदान, प्रेम, करूणा आदि के प्रेरक घटना चित्रों के कथा ..... 'श्रीकृष्ण जयंती' में कृष्ण के जन्म की रात का वर्णन है।

उदाहरण– इसमें वीरता, साहस, पराक्रम, बलिदान, प्रेम और करूणा आदि से संबंधित प्रेरक घटनाओं का चित्रण होता है।।

प्रश्न 9. पाठ्य मुक्तक काव्य से क्या आशय है? उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर– पाठ्य पुस्तक में विभिन्न विषयों में लिखी गई छोटी-छोटी विचार प्रधान कविताएं आती हैं, इनमें भावों की अपेक्षा विचारों की प्रधानता होती है।

उदाहरण– कबीर, तुलसी, रहीम, बिहारी, मतिराम के नीतिपरक, भक्तिपरक एवं श्रृंगार परक दोहे।

प्रश्न 10. गेय मुक्त काव्य की परिभाषा लिखिए।

उत्तर– गेय मुक्त इसको प्रगीत भी कहते हैं। इसमें भावना और रागात्मकता एवं संगीतात्मकता की प्रधानता होती है, गेय पुस्तक गाये जाते हैं।

प्रश्न 11. आचार्य भरत मुनि के अनुसार रस की परिभाषा लिखिए।

उत्तर– भरत मुनि के अनुसार– "जिस प्रकार नाना प्रकार के व्यंजनों, औषधियों एवं द्रव्य पदार्थों के मिश्रण से भोज्य रस की निष्पत्ति होती है, उसी प्रकार नाना प्रकार के भावों के संयोग से स्थायी भाव भी नाट्य रस को प्राप्त हो जाते हैं।"

प्रश्न 12. रस के प्रमुख अंग अथवा अवयव के नाम लिखिए।

उत्तर– रस के प्रमुख अंग अथवा अवयव निम्नलिखित हैं- (1) स्थायी भाव (2) अनुभाव (3) विभाव (4) संचारी/व्यभिचारी भाव।

प्रश्न 13. श्रृंगार रस की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर– नायक और नायिका के मन में संस्कार रूप में स्थित रति या प्रेम जब रस की अवस्था को पहुँचकर आस्वादन के योग्य हो जाता है तो वह श्रृंगार रस कहलाता है।

उदाहरण– मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरा पति सोई।।

प्रश्न 14. वीर रस की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर– युद्ध अथवा कठिन कार्य को करने के लिए हृदय में विद्य उत्साह नामक स्थाई भाव के जाग्रत होने के प्रभाव स्वरूप जो भाव उत्पन्न होता है, उसे वीर रस कहते हैं। **उदाहरण–** मैं सत्य कहता हूँ सखे सुकुमार मत जानो मुझे----

प्रश्न 15. छन्द किसे कहते हैं? छन्द के प्रकार लिखिए।

उत्तर– जब वर्णों की संख्या, क्रम, मात्र गणना तथा यति गति आदि नियमों को ध्यान में रखकर पद्य रचना की जाती है उसे छन्द कहते हैं।

छन्द के प्रकार– वर्णिक छन्द, मात्रिक छन्द, मुक्तक छन्द।

प्रश्न 16. मात्रिक छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर– मात्रा की गणना के आधार पर की गयी पद की रचना को मात्रिक छन्द कहते हैं।

उदाहरण– मात्रिक छन्द- अहीर (11 मात्रा), तोमर (12 मात्रा), मानव (14 मात्रा)।

प्रश्न 17. दोहा छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर– दोहा दो पंक्ति का होता है, इसमें चार चरण माने जाते हैं, इसके प्रथम एवं तृतीय चरण में 13-13 मात्राएँ और द्वितीय तथा चतुर्थ चरणों में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण– श्री गुरू चरन सरोज रस, निज मन मुकुर सुधार।
वरनौ रघुवर विमल जस, जो दायक फल चार।

प्रश्न 18. चौपाई छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर– चौपाई मात्रिक सम छन्द का एक भेद है। प्राकृत तथा अपभ्रंश के 16 मात्रा के वर्णनात्मक छन्दों के आधार पर विकसित हिन्दी का सर्वप्रिय और अपना छन्द है।

उदाहरण–

(1) बसहुँ हृदयें श्री अनुज समेता।

(2) बिनु पग चले सुने बिनु काना।
कर बिनु कर्म करे विधि नाना।।
तनु बिनु परस नयन बिनु देखा।
गहे घ्राण बिनु वास असेखा।।

प्रश्न 7. निम्नलिखित प्रश्नों के 75–75 शब्द में उत्तर लिखिए।

प्रश्न 1. महाकाव्य एवं खण्डकाव्य में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–

महाकाव्य	खण्डकाव्य
(1) इसमें जीवन का समग्र चित्रण या वर्णन होता है।	इसमें जीवन के किसी एक अंश का वर्णन होता है।
(2) इसमें अनेक रसों का वर्णन होता है।	इसमें मुख्यत: एक ही रस होता है।
(3) इसमें अनेक छन्दों का प्रयोग होता है।	इसमें एक ही छन्द होता है।
(4) महाकाव्य–रामचरित मानस रचयिता–तुलसीदास।	खंडकाव्य– पंचवटी रचयिता–मैथिलीशरण गुप्त।

प्रश्न 2. पाठ्यपुस्तक एवं गेय मुक्तक में अन्तर लिखिए।

उत्तर–

पाठ्य पुस्तक	गेय पुस्तक
(1) पाठ्य मुक्तक पढ़े जाते हैं।	गेय मुक्तक गाये जाते हैं।
(2) एक ही भाव की गहनता होती है।	संगीतात्मकता होती है।
(3) इसके कवि – बिहारी, कबीर, रहीम है।	इसके कवि–सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई है।

प्रश्न 3. मात्रिक छन्द एवं वार्णिक छन्द में अन्तर लिखिए।

उत्तर–

मात्रिक छन्द	वार्णिक छन्द
(1) मात्रिक छन्दों के सभी चरणों में संख्या (मात्राओं की) तो समान होती है लेकिन क्रम (लघु–गुरू का) समान नहीं होते हैं।	वर्णिक छंदों के सभी चरणों की संख्या (वर्णों की) और क्रम (लघु–गुरू) का दोनों समान होते हैं।
(2) इनमें मात्राओं की गिनती निश्चित रहती है।	इनमें वर्गों की संख्या एवं रूप निश्चित रहता है, मात्राएँ नहीं।

प्रश्न 4. संचारी भाव एवं स्थायी भाव में अन्तर लिखिए।

उत्तर– संचारी भाव वे होते हैं जो वाक्य समय भाव प्रकट होते हैं। ये जल्दी–जल्दी बदलते रहते हैं। स्थायी भाव पूरे पैराग्राफ का निष्कर्ष भाव होता है।

स्थायी भाव से रस का जन्म होता है जो भावना स्थिर और सार्वभौम होती है, उसे स्थायी भाव कहते हैं।

प्रश्न 5. विभाव अनुभाव में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– वे सभी साधन जिनके कारण हमारे मन में भाव उत्पन्न होते हैं, उन्हें विभाव कहते हैं। अनुभाव का अर्थ है कि जब किसी के हृदय में कोई भाव उत्पन्न होता है और उत्पन्न भावों का परिणाम व गुस्सा करता है या कोई क्रिया करता है और जो चेष्टा करता है या उसमें जो क्रियात्मकता आती है, उसे अनुभाव कहते हैं। ❑

इकाई–3

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(एकअंकीय)

प्रश्न 1. निम्नलिखित कथनों के सही विकल्प ज्ञात कीजिए–

(1) गद्य का प्रारंभिक रूप था–

(a) लिखित
(b) बोलचाल का रूप
(c) कविता के रूप में
(d) गजल के रूप में

(2) गद्य की विधा नहीं है–

(a) महाकाव्य (b) कहानी
(c) नाटक (d) एकांकी

(3) उपन्यास सम्राट हैं–

(a) प्रसाद जी (b) प्रेमचन्द
(c) महादेवी वर्मा (d) मन्नू भंडारी

(4) 'यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है' कथन है–

(a) मन्नू भंडारी
(b) प्रेमचन्द का
(c) नंददुलारे वाजपेई का
(d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का

(5) 'आधुनिक काल में गद्य का अविर्भाव सबसे प्रधान साहित्यिक घटना है उक्त कथन है–

(a) रामचंद्र शुक्ल का (b) गुलाबराय का
(c) डॉ. नगेन्द्र का (d) रामवृक्ष बेनीपुरी का

(6) 'नेताजी का चश्मा' कहानी का मूल भाव है–

(a) प्रेमसम्बन्ध (b) शिक्षा का विकास
(c) समाज सुधार (d) देशभक्ति की भावना

(7) नेता जी की मूर्ति थी–

(a) संगमरमर (b) काले पत्थर की
(c) मिट्टी की (d) मोम की

(8) कस्बे के चौराहे पर प्रतिमा लगी थी–

(a) भीमराव अम्बेडकर की (b) महात्मा गाँधी की
(c) सरदार पटेल की (d) सुभाषचन्द्र बोस की

(9) प्रतिमा बनाने वाले का नाम था–

(a) मोतीलाल (b) श्याममोहन
(c) हरिलाल (d) रामलाल

(10) नेता जी की मूर्ति लगवाई गई थी–

(a) वन विभाग द्वारा (b) नगर पालिका द्वारा
(c) नगर-निगम द्वारा (d) शिक्षा विभाग द्वारा

(11) भगत जी पद गाते थे–

(a) कबीर के (b) सूर के
(c) मीरा के (d) महादेवी के

(12) 'बालगोबिन भगत' पाठ प्रहार करता है–

(a) कुरीतियों पर (b) दहेज लोभियों पर
(c) शिक्षा पर (d) राजनीति पर

(13) बालगोबिन भगत साहब मानते थे–

(a) कबीरदास को (b) सूरदास को
(c) रैदास को (d) नंददास को

(14) सच्चे साधु की पहचान होती है–

(a) पहनावे से (b) भाषा से
(c) ईश्वर भक्ति से (d) उसके विचारों से

(15) बालगोबिन भगत गाते समय बजाते थे–

(a) ढोलक (b) तबला
(c) गिटार (d) खंजड़ी

(16) फादर कामिल बुल्के ने एम.ए. किया–

(a) इलाहाबाद से (b) भोपाल से
(c) बनारस से (d) कलकत्ता से

(17) फादर कामिल बुल्के राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे–

(a) अंग्रेजी (b) फारसी
(c) हिन्दी (d) फ्रेंच

(18) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना फादर बुल्के के किस गुण से प्रभावित थे?

(a) दयालुता (b) मानवता
(c) सरलता (d) इन सभी गुणों से

(19) फादर बुल्के के अभिन्न मित्र थे–

(a) धीरेन्द्र वर्मा (b) डॉक्टर रघुवंश
(c) प्रेमचन्द (d) अज्ञेय

(20) फादर बुल्के का निधन हुआ–

(a) 70 की उम्र में
(b) 92 की उम्र में
(c) 73 की उम्र में
(d) 81 की उम्र में

(21) मन्नू भंडारी के किस व्यवहार से तंग आकर प्रिंसिपल ने उनके पिता को बुलाया–

(a) अशिष्ट (b) विनम्र
(c) दुष्ट (d) आंदोलनकारी

(22) मन्नू भंडारी के पिता ने उनका रौब देखकर अनुभव किया–

(a) चिंता (b) गर्व
(c) क्रोध (d) खुशी

(23) मन्नू भंडारी को पसंद आए जैनेन्द्र के उपन्यास का नाम था–

(a) सुनीता (b) परख
(c) त्याग पत्र (d) भाभी

उत्तर–(1) बोलचाल का रूप (2) महाकाव्य (3) प्रेमचन्द (4) आचार्य रामचंद्र शुक्ल का (5) रामचंद्र शुक्ल का (6) देशभक्ति की भावना (7) संगमरमर (8) सुभाषचंद्र बोस की (9) मोतीलाल (10) नगर पालिका द्वारा (11) कबीर के (12) कुरीतियों पर (13) कबीरदास को (14) उसके विचारों से (15) खंजड़ी (16) इलाहाबाद से (17) हिन्दी (18) इन सभी गुणों से (19) डॉक्टर रघुवंश (20) 73 की उम्र में (21) आंदोलनकारी (22) गर्व (23) सुनीता।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) जीवनी ..... की लिखी जाती है। (स्वयं/महापुरूष)

(2) आत्मकथा में लेखक ..... के जीवन का वर्णन करता है। (स्वयं/अन्य)

(3) प्रेमचंद ..... हैं। (कवि/कथाकार)

(4) एकांकी में ..... अंक होता है। (एक/दो)

(5) सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा पर चश्मा ..... बदलता था। (हालदार साहब/कैप्टन)

(6) कस्बे के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की ..... लगवा दी। (प्रतिमा/फोटो)

(7) नेता जी की मूर्ति ..... कपड़ों में थी। (खादी/फौजी)

(8) कस्बे से गुजरते समय ..... पान खाते थे। (हालदार साहब/कैप्टन)

(9) 'चलो दिल्ली' का नारा ..... ने दिया। (नेताजी/कैप्टन)

(10) बालगोबिन भगत अ कब के गोर-चिट्टे आदमी थे। (मँझोले/ऊँचे)

(11) बालगोबिन भगत में ..... का चरमोत्कर्ष देखा जा सकता था। (प्रेमसाधना/संगीतसाधना)

(12) बालगोबिन भगत की मौत उन्हीं के ..... हुई। (विपरीत /अनुरूप)

(13) आषाढ की रिमझिम है। समूंचा गाँव ..... में उतर पड़ा। (नदियों/खेतों)

(14) फादर बुल्के .....की पढ़ाई छोड़कर सन्यासी हो गए। (मेडिकल/इंजीनियरिंग)

(15) फादर बुल्के की चिंता हिन्दी को ..... के रूप में देखने की थी। (राजभाषा/राष्ट्रभाषा)

(16) फादर की उपस्थिति ..... के वृक्ष की छाया जैसी लगती थी। (पीपल/देवदार)

(17) फादर बुल्के ने सन्यास लेते समय ..... जाने की शर्त रखी थी। (अमेरिका/भारत)

(18) मन्नू भंडारी की बड़ी बहन का नाम ..... था। (सुशीला/विनीता)

(19) मन्नू भंडारी का प्रसिद्ध उपन्यास ..... है। (आपका बंटी/बुनियाद)

(20) महानगरीय जीवन ..... है। (आत्मीयताहीन/आत्मीयता पूर्ण)

(21) मन्नू भंडारी का जन्म ..... में हुआ। (म.प्र./राजस्थान)

(22) पुराने जमाने में ..... के लिए कोई विश्वविद्यालय नहीं थे। (स्त्रियों/पुरुषों)

(23) कालिदास ..... भाषा के कवि हैं। (संस्कृत/हिन्दी)

(24) महावीर प्रसाद द्विवेदी ..... युग के प्रवर्तक है। (द्विवेदी युग/शुक्ल युग)

(25) 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' लेख सर्वप्रथम ..... में प्रकाशित हुआ। (1914 में सरस्वती में/1920 में सरस्वती में)

(26) आवश्यकता आविष्कार की ..... है। (जननी/भगिनी)

(27) आत्मविनाश के साधनों का आविष्कार ..... है। (संस्कृति/असंस्कृति)

उत्तर– (1) महापुरूष (2) स्वयं (3) कथाकार (4) एक (5) कैप्टन (6) प्रतिमा (7) फौजी (8) हालदार साहब (9) नेताजी (10) मँझोले (11) प्रेमसाधना (12) अनुरूप (13) खेतों (14) इंजीनियरिंग (15) राष्ट्रभाषा (16) देवदारू (17) भारत (18) सुशीला (19) आपका बंटी (20) आत्मीयताहीन (21) म.प्र. (22) स्त्रियों (23) संस्कृत (24) द्विवेदी युग (25) सन् 1914 में सरस्वती में (26) जननी (27) असंस्कृति।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये–

(1) (अ)	(ब)
(1) महावीर प्रसाद द्विवेदी	(a) सरस्वती
(2) रिपोर्ताज	(b) बाबू गुलाबराय
(3) जयशंकर प्रसाद	(c) शुक्ल युग
(4) आचार्य रामचंद्र शुक्ल	(d) एक घूँट
(5) मेरी असफलताएँ	(e) फ्रेंच शब्द

उत्तर– (1) a (2) e (3) d (4) c (5) b.

(2) सही जोड़ी बनाइये–

(अ)	(ब)
(1) नेताजी का चश्मा	(a) मन्नू भंडारी
(2) रामवृक्ष बेनीपुरी	(b) स्वयं प्रकाश

(3)	मानवीय करूणा की दिव्य चमक	(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(4)	एक कहानी यह भी	(d) बालगोबिन भगत
(5)	स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतकों का खण्डन	(e) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
(6)	संस्कृति	(f) भदंत आनंद कौसल्यायन

उत्तर– (1) b (2) d (3) e (4) a (5) c (6) f.

(3) सही जोड़ी बनाइये–

	(अ)	(ब)
(1)	नेताजी का चश्मा	(a) रेखाचित्र
(2)	एक कहानी यह भी	(b) कहानी
(3)	बालगोबिन भगत	(c) आत्मकथा का अंश
(4)	संस्कृति	(d) संस्मरण
(5)	मानवीय करूणा की दिव्य चमक	(e) निबंध
(6)	स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतकों का खंडन	(f) लेख

उत्तर– (1) b (2) c (3) b (4) e (5) d (6) f.

(4) सही जोड़ी बनाइये–

	(अ)	(ब)
(1)	स्वयं प्रकाश	(a) सन् 1899
(2)	रामवृक्ष बेनीपुरी	(b) सन् 1947
(3)	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	(c) सन् 1927
(4)	हजारी प्रसाद द्विवेदी	(d) सन् 1931
(5)	मन्नू भंडारी	(e) सन् 1905
(6)	भदंत आनंद कौसल्यायन	(f) सन् 1864

उत्तर– (1) b (2) a (3) a (4) f (5) d (6) e.

प्रश्न 4. एक वाक्य में उत्तर दीजिए–

(1) कहानी क्या है?
(2) एकांकी में कितने अंक होते हैं?
(3) निबन्ध की परिभाषा लिखिए।
(4) संस्मरण का क्या अर्थ है?
(5) गद्य की चार विधाएं लिखिए।
(6) कैप्टन की मृत्यु के पश्चात् मूर्ति पर किस का बना चश्मा लगाया।
(7) स्वयं प्रकाश के कितने कहानी–संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं?
(8) कंपनी के काम के सिलसिले में कस्बे से कौन गुजरता था?
(9) नेताजी की मूर्ति कितनी ऊँची थी?
(10) "वह लंगड़ा क्या जाएगा फौज में। पागल है पागल! कथन किसका था?
(11) रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म किस गाँव में हुआ?
(12) बालगोबिन भगत की उम्र क्या थी?
(13) पूर्व की ओर से बहने वाली हवा को क्या कहते हैं?
(14) बेटे के मरने पर बालगोबिन भगत क्या कर रहे थे?
(15) फादर बुल्के का जन्म कहाँ हुआ?
(16) फादर बुल्के को सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने क्या कहा?
(17) 'दिनमान पत्रिका' का उपसंपादन किसने किया?
(18) फादर बुल्के को किस कब्रगाह में दफनाया गया।
(19) मन्नू भंडारी का स्वभाव कैसा था?
(20) मन्नू भंडारी का साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किसने कराया?
(21) मन्नू भंडारी के पिता का स्वभाव शक्की क्यों हो गया था?
(22) मन्नू भंडारी का विवाह किससे हुआ?
(23) मन्नू भंडारी का रंग कैसा था?
(24) प्राचीन काल में स्त्रियों की बोलचाल की भाषा कौन सी थी?
(25) शास्त्रों में काशी किस नाम से प्रतिष्ठित है?
(26) बौद्धों और जैनों के हजारों ग्रंथ किस भाषा में लिखे गए हैं?
(27) हिन्दू वेदों को किसकी रचना मानते हैं?
(28) मानव संस्कृति किस प्रकार की है?
(29) तृष्णा के वशीभूत लड़ती कटती मानवता के सुख के लिए किसने अपना सर्वस्व त्याग किया?

उत्तर– (1) कहानी वह लघु रचना है जिसमें जीवन की किसी एक स्थिति का सरस चित्रण होता है।

(2) एकांकी में एक अंक होता है।

(3) बंधी हुई रचना को निबन्ध कहते हैं।

(4) भली–भाँति स्मरण करना 'संस्मरण' कहलाता है।

(5) गद्य की चार विधाएँ– कहानी, नाटक, उपन्यास एवं एकांकी।

(6) कैप्टन की मृत्यु के बाद मूर्ति पर सरकंडे से बना छोटा सा चश्मा लगा था।

(7) स्वयं प्रकाश के लगभग तेरह कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

(8) कंपनी के काम के सिलसिले में कस्बे से हालदार साहब गुजरते थे।
(9) नेताजी की मूर्ति लगभग दो फुट ऊँची थी।
(10) यह कथन पानवाले का था।
(11) रामकृष्ण बेनीपुरी का जन्म बेनीपुर गाँव (बिहार) में हुआ।
(12) बालगोबिन भगत की उम्र लगभग 60 वर्ष थी।
(13) पूर्व की ओर बहने वाली हवा को पुरवाई कहते हैं।
(14) बेटे के मरने पर बालगोबिन भगत गीत गा रहे थे।
(15) फादर बुल्के का जन्म बेल्जियम के रैम्सचैपल शहर में हुआ।
(16) फादर बुल्के को सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने मानवीय करूणा का दिव्य चमक कहा।
(17) 'दिनमान' पत्रिका का उपसंपादन सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने किया।
(18) फादर बुल्के को निकलसन कब्रगाह में दफनाया गया।
(19) मन्नू भंडारी का स्वभाव धैर्यवान एवं सहनशील था।
(20) मन्नू भंडारी का साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश उनके पति राजेन्द्र यादव ने कराया।
(21) अपने निजी लोगों के विश्वासघात के कारण उनका स्वभाव शक्की हो गया था।
(22) मन्नू भंडारी का विवाह राजेन्द्र यादव से हुआ।
(23) मन्नू भंडारी का रंग काला था।
(24) प्राचीनकाल में स्त्रियों की बोलचाल की भाषा प्राकृत थी।
(25) शास्त्रों में काशी आनंदकानन नाम से प्रसिद्ध हैं।
(26) बौद्धों और जैनों के हजारों ग्रंथ प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं।
(27) हिन्दू वेदों को ईश्वर की रचना मानते हैं।
(28) मानव संस्कृति अविभाज्य है।
(29) तृष्णा के वशीभूत लड़ती–कटती मानवता के सुख के लिए सिद्धार्थ ने सर्वस्व त्याग किया।

प्रश्न 5. सत्य / असत्य लिखिए–

(1) कहानी गद्य की विधा नहीं है।
(2) उपन्यास में कई कथाओं का समावेश होता है।
(3) गद्य का अर्थ होता है–बोलना या कहना।
(4) नाटक में एक अंक होता है।
(5) कहानी उपन्यास की अपेक्षा छोटी होती है।
(6) नेता जी की मूर्ति पत्थर की थी।
(7) मूर्ति की आँखों में संगमरमर का चश्मा था।
(8) कैप्टन को बिना चश्मे वाली नेताजी की मूर्ति बुरी लगती थी।
(9) बाल गोबिन भगत हर वर्ष गंगा नहाने जाते थे।
(10) बालगोबिन भगत की आजीविका का साधन कृषि था।
(11) बालगोबिन भगत माह में प्रभाती माना शुरू करते थे।
(12) बालगोबिन भगत के मस्तक पर हमेशा चमकता हुआ रामानंदी चंदन हुआ करता था।
(13) भादों की अधरतियाँ में भगत गीत न गाते थे।
(14) बालगोबिन भगत के दो बेटे थे।
(15) फादर कामिल बुल्के की बहन जिद्दी और सख्त थी।
(16) फादर कामिल बुल्के की मृत्यु मुंबई में हुई।
(17) फादर कामिल बुल्के को बहुत क्रोध आता था।
(18) फादर कामिल बुल्के की कर्मभूमि भारत रही।
(19) 'परिमल' एक साहित्यिक संस्था है।
(20) मन्नू भंडारी की अपने पिता से वैचारिक टकराहट थी।
(21) मन्नू भंडारी के पिता रसोई को 'कबाबखाना' कहते थे।
(22) मन्नू भंडारी मूलतः एक कहानीकार हैं।
(23) मन्नू भंडारी के घर में अतिथि सत्कार प्रिय वातावरण था।
(24) डाक्टर साहब मन्नू भंडारी के पारिवारिक चिकित्सक थे।
(25) प्राचीन भारत में स्त्रियाँ अत्यंत विदुषी थीं।
(26) मंडन मिश्र की पत्नी ने शास्त्रार्थ में शंकराचार्य को पराजित किया था।
(27) 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन हजारीप्रसाद द्विवेदी ने किया।
(28) अत्रि की पत्नी, पत्नी–धर्म पर व्याख्यान नहीं दे पाती थी।
(29) सभ्यता है संस्कृति का परिणाम।
(30) आग के आविष्कार में पेट की भूख की प्रेरणा एक कारण रही।

उत्तर– (1) असत्य (2) सत्य (3) सत्य (4) असत्य (5) सत्य (6) असत्य (7) असत्य (8) सत्य (9) सत्य (10) सत्य (11) असत्य (12) असत्य (13) असत्य (14) सत्य (15) सत्य (16) असत्य (17) असत्य (18) सत्य (19) सत्य (20) सत्य (21) असत्य (22) सत्य (23) सत्य (24) असत्य (25) सत्य (26) सत्य (27) सत्य (27) सत्य (28) असत्य (29) सत्य (30) सत्य।

प्रश्न 6 निम्नलिखित प्रश्नों के 30-30 शब्दों में उत्तर लिखिए।

(1) गद्य क्या है?

उत्तर- एक ऐसी रचना जो छंद, ताल, लय एवं तुकबंदी से मुक्त तथा विचारपूर्ण हो, उसे गद्य कहते हैं। गद्य शब्द गद् धातु के साथ यत प्रत्यय जोड़ने से बना है। गद्य का अर्थ होता है बोलना, बतलाना या कहना। सामान्यत: दैनिक जीवन में उपयोग होने वाली बोलचाल की भाषा में गद्य का ही प्रयोग किया जाता है।

(2) गद्य की प्रमुख विधाएँ लिखिए।

उत्तर- किसी सघन अनुभूति को कलात्मक लय से गद्य में प्रस्तुत करना गद्य काव्य कहलाता है, यह गद्य की आधुनिक विधा है। गद्य काव्य में रसमयता, कलात्मकता भावात्मक और चमत्कारिकता गद्य काव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

(3) हिन्दी साहित्य में गद्य के विकास का काल-विभाजन लिखिए।

उत्तर- छात्र स्वयं करें।

(4) कोई दो उपन्यास के नाम एवं उनके लेखकों के नाम लिखिए।

उत्तर- उपन्यास		**लेखक**
(i) गोरा	-	रविन्द्रनाथ ठाकुर
(ii) गोदान	-	प्रेमचंद

(5) किन्हीं दो कहानीकारों के नाम एवं उनकी दो-दो कहानियों के नाम लिखिए।

उत्तर- कहानीकार		**कहानी**
(i) प्रेमचंद	-	गोदान
(ii) फणीश्वरनाथ रेणु	-	तीसरी कसम उर्भ मारे गए गुलफाम

(6) नाटक और एकांकी में दो अन्तर लिखिए।

उत्तर- नाटक में अधिकारिक कथा के साथ-साथ सहायक गौण कथाएँ भी होती है, एकांकी में एक ही कथा और घटना होती है, एकांकी में पात्रों की क्रियाककलापों और चरित्रों का संयोजन इस रूप में होता है कि एकांकी होते हुए भी उसके व्यक्तित्व का समूचा बिम्ब मिल जाए।

(7) कहानी और उपन्यास में दो अन्तर लिखिए।

उत्तर- कहानी और उपन्यास में अन्तर-

कहानी की कथा संक्षिप्त एवं वैविध्यटय विहीन होती है। लेकिन उपन्यास की कथा लम्बी एवं वैविध्य पूर्ण होती है, कहानी में कथानक हो भी सकता है और नहीं थी। लेकिन उपन्यास में कथानक अनिवार्य रूप से रहता है।

(8) रेखाचित्र और संस्करण में दो अंतर लिखिए।

उत्तर- संस्मरण विवरण प्रधान होते हैं और रेखा चित्र चित्रण प्रधान।

संस्मरण में लेखक का वर्ण्य-विशेष व्यक्ति या वस्तु से संवेदनात्मक संबंध होता है।

रेखाचित्र में लेखक निष्पक्ष होकर व्यक्ति या वस्तु का रेखांकन करता है।

(9) आत्मकथा और जीवनी में दो अंतर लिखिए।

उत्तर- आत्म कथा	**जीवनी**
(i) आत्मकथा में लेखक स्वयं जीवनी प्रस्तुत करता है।	(i) जीवनी किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा लिखी जाती है।
(ii) आत्म कथा में सब कुछ सत्य पर आश्रित होता है।	(ii) जीवनी में जहाँ बहुत-सी बातें अनुमानित रहती है।

(10) लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी के लेखन की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- रामकृष्ण बेनीपुरी जीवंत भाषा, ओजपूर्ण शैली तथा आलंकारिकता के कारण पाठकों को विशेष रूप से प्रभावित करते हैं। शैली की विशिष्टता के कारण ही उन्हें 'कलम का जादूगर' कहा जाता है। बेनीपुरी जी की भाषा में सरलता, सुबोधता तथा ओजगुण की प्रधानता है। उनकी भाषा की खास विशेषता है, छोटे-छोटे वाक्यों में शब्दों का सटीक प्रयोग। उनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ-साथ उर्दू-फारसी और देशज शब्दों का भी पर्याप्त प्रयोग हुआ है।

(11) मन्नू भंडारी के साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- मन्नू भंडारी की कहानियों और उपन्यासों में स्त्री-मन से जुड़ी अनुभूतियों के चित्रण की प्रधानता है। उनकी रचनाओं में भारतीय नारी के जीवन और उसकी विषमताओं का प्रभावशाली वर्णन हुआ है। उन्होंने स्त्री के स्वतंत्र व्यक्तित्व का आकलन भी अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है।

(12) महावीर प्रसाद द्विवेदी की भाषा एवं शिल्प पर प्रकाश डालते हुए उनकी दो रचनाएँ लिखिए।

उत्तर– द्विवेदी जी ने खड़ी बोली को परिष्कृत किया और उसे शुद्ध साहित्यिक भाषा का रूप दिया। उन्होंने काव्य–भाषा के रूप में भी खड़ी बोली को ही गरिमा प्रदान की। उनकी भाषा में सहजता तथा सरसता है।

उनकी गद्य–शैली विषयानुरूप वर्णनात्मक, भावात्मक, विचारात्मक और व्यंग्यात्मक है। उन्होंने कहीं तत्सम प्रधान शब्दावली का प्रयोग किया है तो कहीं साधारण बोलचाल के शब्दों का। उनकी रचनाओं में संस्कृत भाषा के उद्धरण भी यत्र–तत्र देखे जा सकते हैं।

रचनाएँ– काव्य मंजूषा, सुमन आदि।

(13) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की भाषा–शैली एवं दो रचनाएँ लिखिए।

उत्तर– भाषा शैली– सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की भाषा में सरलता, प्रवाहमयता एवं भावात्मकता है। एक श्रेष्ठ कवि होने के कारण उनके गद्य साहित्य में भी शब्दों का चयन अत्यन्त आकर्षक एवं कलात्मक है। उनकी रचनाओं में तत्सम शब्दों का भी व्यापक प्रयोग हुआ है। जैसे– अस्तित्व, निर्लिप्त, आकृति, अकाट्य, दिव्य आदि। सक्सेनाजी ने उर्दू के शब्दों का भी मसुचित प्रयोग किया है। जैसे–मज़ाक, बेबाक, सख्त, जिद्दी, तकलीफ, जिस्म आदि। सर्वेश्वर जी के गद्य में काव्य जैसी मधुरता और भावात्मकता स्पष्टत: दिखाई देती है।

दो रचनाएँ– काठ की घंटियाँ, जंगल का दर्द

(14) रामकृष्ण बेनीपुरी, मन्नू भंडारी एवं भदंत आनंद कौसल्यायन की 2–2 रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर– रचनाएँ– (1) रामकृष्ण बेनीपुरी– (ii) पतितों के देश में (ii) गेहूँ और गुलाब।

(2) मन्नू भंडारी– (i) एक प्लेट सैलाब (ii) यही सच है।

(3) भदंत आनंद कौसल्यायन– (i) जो भूल ना सका (ii) रेल का टिकट।

(15) सेनानी न होते हुए भी चश्मे वाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

उत्तर– सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन इसलिए कहते थे क्योंकि उसके अंदर देशभक्ति की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी। वह स्वतंत्रता–आंदोलन में भाग लेने वाले सेनानियों का भरपूर सम्मान करता था। वह नेताजी की मूर्ति को बार–बार चश्मा पहनाकर देश के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा प्रकट करता था।

देश के प्रति त्याग व समर्पण की भावना उसके हृदय में किसी भी सेनानी या फौजी से कम नहीं थी। इसी कारण लोग उसे कैप्टन कहते थे।

(16) पानवाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

(17) कैप्टन बार–बार मूर्ति पर चश्मा क्यों लगा देता था?

उत्तर– कैप्टन द्वारा बार–बार मूर्ति पर चश्मा लगाना यह प्रकट करता है कि वह देश के लिए त्याग करने वाले लोगों के प्रति अपार श्रद्धा रखता था इसके हृदय में देशभक्ति और त्याग की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी।

(18) बालगोबिन भगत की पुत्रवधु उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

उत्तर– भगत बूढ़े हो चुके थे और उनके परिवार में पुत्रवधु के अतिरिक्त और कोई भी नहीं था। पुत्रवधू को इस बात की चिंता थी कि यदि वह भी चली गयी तो भगत के लिए भोजन कौन बनाएगा। यदि भगत बीमार हो गए, तो उनकी सेवा–शुश्रूषा कौन करेगा। इस प्रकार भगत को अपने शेष जीवन में दु:ख न उठाना पड़े और वह सदा उनकी सेवा करती रहे, यही सोचकर पुत्रवधू उन्हें अकेले नहीं छोड़ना चाहती थी।

(19) बालगोबिन भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएं किस तरह व्यक्त की?

उत्तर– अपने बेटे की मृत्यु होने पर भगत उसके शव के पास बैठकर कबीर के भक्तिगीत गाने लगे। अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए भगत ने कहा कि यह रोने का नहीं बल्कि उत्सव मनाने का समय है। विरहिणी आत्मा अपने प्रियतम परमात्मा के पास चली गई थी। उन दोनों के मिलन से बड़ा आनंद और कुछ नहीं हो सकता।

इस प्रकार भगत ने शरीर की नश्चरता और आत्मा की अमरत का भाव व्यक्त किया।

(20) बालगोबिन भगत के मधुर गायन की विशेषत लिखिए।

उत्तर– (1) गर्मी की उमस भरी शाम को भी भगत का गा अपनी दिनचर्या के अनुसार जारी रहता। भक्तिगीत को गाने कभी थकान नहीं महसूस करते थे।

(2) इस प्रकार स्वरो की ताजगी भगत के गायन की एक प्रमुख विशेषता थी।

(3) भगत के गायन में एक निश्चित ताल व गति थी।

(4) भगत के स्वर के आरोह के साथ श्रोताओं का मन भी ऊपर चला जाता और लोग अपने तन-मन की सुध-बुध खोकर संगीत को स्वर-लहरों में ही तल्लीन हो जाते।

(5) भगत के स्वर की तरंग लोगों के मन के तारों को झंकृत कर देती।

(6) ऐसा लगता जैसे संगीत में डूबा हुआ उनका एक-एक शब्द स्वर्ग की ओर जा रहा हो।

(7) भगत का संगीत सुनकर लोग उसी लय और ताल के अनुसार अपने कार्यों में मस्त हो जाते।

(21) बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?

उत्तर- बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण इसलिए बन गई थी, क्योंकि वे जीवन के सिद्धान्तों और आदर्शों का अत्यंत गहराई से पालन करते हुए उन्हें अपने आचरण में उतारते थे।

उदाहरण के लिए किसी की चीज को नहीं लेना उनका सिद्धांत था। इस नियम को वे इतनी बारीकी तक ले जाते कि दूसरे के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते थे। यह देखकर लोगों को आश्चर्य होता था।

(22) बालगोबिन भगत के मधुर गायन की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- (1) गर्मी की उमस भरी शाम को भी भगत का गायन अपनी दिनचर्या के अनुसार जारी रहता। भक्तिगीत को गाने में वे कभी थकान नहीं महसूस करते थे। (2) इस प्रकार स्वरों की ताज़गी भगत के गायन की एक प्रमुख विशेषता थी। (3) भगत के गायन में एक निश्चित ताल व गति थी। (4) भगत के स्वर के आरोह के साथ श्रोताओं का मन भी ऊपर उठता चला जाता और लोग अपने तन-मन की सुध-बुध खोकर संगीत को स्वर-लहरों में ही तल्लीन हो जाते। (5) भगत के स्वर की तरंग लोगों के मन के तारों को झंकृत कर देती। (6) ऐसा लकता जैसे संगीत में डूबा हुआ उनका एक-एक शब्द स्वर्ग की ओर जा रहा हो। (7) भगत का संगीत सुनकर लोग उसी लय ओर ताल के अनुसार अपने कार्यों में मस्त हो जाते।

(23) बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-कि रूपों में प्रकट हुई है?

उत्तर- बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा निम्नलिखित रू में प्रकट हुई है-

वेशभूषा- बालगोबिन भगत कबीर की तरह ही कमर लँगोटी पहने। वे अपने सिर पर कबीरपंथियों जैसे कनफटी टो लगाते थे। उनके मस्तक पर भी कबीर जैसा रामानंदी चंदन ल रहता और गले में तुलसी की माला रहती।

गृहस्थ जीवन- बालगोबिन भगत साधु-स्वभाव के होते भी गृहस्थ थे, जिस तरह कबीर। उनके पास खेतीबारी मकान था और उनका एक पुत्र भी था।

भक्तिगीत गायन- कबीर ने अपने प्रेमी परमात्मा आराधना में गीत लिखे। बालगोबिन भगत कबीर के ही लि गीत गाते थे, जो उनकी कबीर के प्रति श्रद्धा का परिचायक

कबीर के आदर्शों पर चलना- बालगोबिन भगत कबीर के उपदेशों के अनुरूप आचरण करते थे। कभी झूठ न बोल खरा व्यवहार करना, किसी दूसरे की चीज को न ले परमात्मा की भक्ति में डूबे रहना तथा धार्मिक पाखंडों विरोध आदि कुछ ऐसे ही कबीर के आदर्श हैं, जिनका पा भगत ने जीवन भर किया।

कबीर के अनुरूप आध्यात्मिक दर्शन- बालगोबिन भगत कबीर के ही दर्शन के अनुसार आत्मा को विरहिणी परमात्मा को उसका प्रेमी माना। उन्होंने भी आत्मा परमात्मा के मिलन को ही जीवन का परम उद्देश्य बताया।

(24) गाँव का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश आष चढते ही उल्हास से क्यों भर जाता है?

उत्तर-

(25) फादर की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी व लगती थी?

उत्तर- फादर की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी इसलि लगती थी, क्योंकि फादर मानवीय करूणा से ओतप्रोत विश हृदय वाले और सभी के कल्याण की भावना रखने वाले मह व्यक्ति थे।

वे परिवार के किसी बड़े व्यक्ति की तरह उन सबको अप छत्रछाया प्रदान करते थे। वे उनके उत्सवों में सम्मिलित होते और उन्हें आशीष से भर देते थे।

(26) फादर बुल्के भारतीय संस्कृति के एक अभिन्न अंग हैं, किस आधार पर ऐसा कहा गया है?

उत्तर– फादर बुल्के को भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग इसलिए कहा गया है क्योंकि वे बेल्जियम से भार आकर यहाँ की संस्कृति में पूरी तरह रच–बस गए थे।

वे सदा यह कहते थे कि अब भारत ही मेरा देश है। भारत के लोग ही उनके लिए सबसे अधिक आत्मीय थे। वे भारत की सांस्कृतिक परंपराओं को पूरी तरह आत्मसात कर चुके थे। वे भारतीय संस्कृति के अनुरूप ही वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से ओतप्रोत थे।

(27) लेखक ने फादर बुल्के को मानवीय करूणा की दिव्य चमक क्यों कहा है?

उत्तर– लेखक ने फादर बुल्के को 'मानवीय करूणा की दिव्य चमक' इसलिए कहा है क्योंकि फादर के हृदय में मानव मात्र के प्रति करुणा की असीम भावना विद्यमान थी।

उनके मन में अपने हर एक प्रियजन के लिए ममता और अपनत्व का भाव उमड़ता रहता था। वे लोगों को अपने आशीषों से भर देते थे। उनकी आँखों की चमक में असीम वात्सल्य तैरता रहता था। प्रत्येक व्यक्तिके दुख में उनके सांत्वना भरे शब्द ढाढस बँधाते थे।

(28) 'नम आँखों को गिनना स्याही फैलाना है' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– **आशय–** फादर बुल्के की मृत्यु पर आँसू बहाने वालों की संख्या इतनी थी कि उसे गिनना संभव नहीं था। उस समय नम आँखों वाले व्यक्तियों के नामों का उल्लेखकरना बस स्याही को बरबाद करने के समान ही था।

(29) फादर का याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है।' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– आशय–जिस प्रकार उदास शांत संगीत को सुनते समय हमारा मन गहरे दुख में डूब जाता है, वातावरण में अवसाद भरी निस्तब्ध शांति छा जाती है और हमारी आँखे अपने–आप ही नम हो जाती है, ठीक वैसी ही दशा फादर बुल्के को याद करते समय हो जाती है।

(30) मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व पर किन–किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा?

उत्तर– **पिता का प्रभाव–** लेखिका के व्यक्तित्व पर उसके पिता का अनेक रूपों में प्रभाव पड़ा। लेखिका के पिता गोरा रंग पसंद करते थे। लेखिका काली थी, जबकि उसकी बड़ी बहन सुशीला गोरी। इस कारण वे सुशीला को पसंद करते थे और प्रशंसा भी करते थे। उनके इस कार्य से लेखिका के भीतर गहरे हीनभाव की संधि पैदा हो गई।

लेखिका के व्यक्तित्व पर उसके पिता का प्रभाव कहीं कुंठा, कहीं प्रतिक्रिया तो कहीं प्रतिच्छाया के रूप में पड़ा।

माँ का प्रभाव– लेखिका की माँ में अत्यधिक धैय और सहनशक्ति थी। वह पिता और सारे बच्चों की फरमाइशों व जिद को अपना कर्तव्य समझकर पूरा करती थीं। मजबूरी में लिपटा उनका त्याग लेखिका का आदर्शन बन सका और उसके व्यक्तित्व में पुरुषों की ज्यादाती के प्रति विद्रोह का भाव आ गया।

शीला अग्रवाल का प्रभाव– लेखिका के व्यक्तित्व पर शीला अग्रवाल की साहित्यिक रुचि और उनकी संघर्षशीलता का व्यापक प्रभाव पड़ा। इस कारण लेखिका के साहित्य का दायरा बढ़ गया। वह देश व समाज की स्थिति के प्रति अधिक जागरूक हो गई तथा स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाने लगी। इस प्रकार उसके व्यक्तित्व में संघर्षशीलता और जुझारुपन आ गया।

(31) मन्नू भंडारी के पिता ने रसोई को भटियारखाना कहकर क्यों संबोधित किया?

उत्तर– मन्नू भंडारी के पिता का मानना था कि रसोई के काम में लग जाने के कारण लड़कियों की क्षमता और प्रतिभा नष्ट हो जाती है। वे पकाने–खाने तक ही सीमित रह जाती है और अपनी प्रतिभा का उपयोग नहीं कर पाती और न ही 'विशिष्ट' बन पाती हैं। इस प्रकार प्रतिभा को भट्टी में झोंकने वाली जगह होने के कारण ही वे रसोई को 'भटियारखाना' कहकर संबोधित करते थे।

(32) वह कौन–सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर मन्नू भंडारी को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया ओर अपने कानों पर।

उत्तर– एक बार कॉलेज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि लेखिका के पिताजी आकर मिले और बताएँ कि लेखिका की गतिविधियों के खिलाफ क्यों न अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाए। पत्र पढ़ कर पिताजी गुस्से भन्नाते हुए कॉलेज गए। परं वहाँ से घर लौटे, तो बहुत खुश थे।

(33) कुछ पुरातन पंथी लोग स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी थी। द्विवेदी जी ने क्या-क्या तर्क देकर स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया?

उत्तर- कुछ पुरातन पंथी लोग स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी थे। परंतु आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी उनसे सहमत नहीं थे। उन्होंने निम्नलिखित तर्क देकर स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया-

प्राचीनकाल में स्त्री-शिक्षा- प्राचीन काल में भी स्त्रियाँ शिक्षित हुआ करती थीं। उत्तररामचरित के अनुसार ऋषियों की पत्नियाँ वेदांत पर चर्चा किया करती थी। यद्यपि उस समय स्त्रियों के लिए कोई विश्वविद्यालय नहीं था, इसलिए पुराणों में स्त्री-शिक्षा की नियमबद्ध प्रणाली का उल्लेख नहीं मिलता। परंतु पुराने ग्रंथों में अनेक प्रतिभा सम्पन्न विदुषियों का नामाल्लेख हुआ है। विश्ववरा,शीला, विज्जा आदि ऐस ही स्त्रियाँ थीं।

पुरुषों पर श्रेष्ठता- अनेक स्त्रियों ने ज्ञान के क्षेत्र में पुरुषों पर भी अपनी श्रेष्ठता को सिद्ध किया है। अत्रि की पत्नी ने व्यख्यान देते हुए घंटों पाण्डित्य का प्रदर्शन किया और गार्गी ने अनेक ब्रह्मवादियों को हरा दिया। मंडन मिश्र को पत्नी ने शंकराचार्य के छक्के छुड़ा दिए थे। क्या पुरुषों का मुकाबला करना पढ़ाई का कुफल है? अनेक शिक्षित पुरुष भी स्त्रियों पर हंटर और डंडे बरसाते हैं। उनकी पढ़ाई अमृत का घूँट कैसे बन सकती है?

नारी शिक्षा की आवश्यकता- यदि प्राचीन समय में स्त्रियाँ अनपढ़ थी, तो हो सकता है, उस समय उन्हें पढ़ाने की आवश्यकता नहीं समझी गई हो, परंतु अब तो है। इसलिए भी स्त्रियों को अनपढ़ रखने की पुरानी परंपराएँ तोड़ देनी चाहिए। यद्यपि उस समय भी अनेक शिक्षित स्त्रियों का उल्लेख मिलता है।

स्त्री-शिक्षा अनर्थकारी नहीं- स्त्री-शिक्षा प्राप्त कर अनर्थ नहीं करती। यदि शिक्षा अनर्थकारी होती तो शिक्षित पुरुष क्यों हत्या, डाके, चोरियाँ, घूस, व्यभिचार जैसे अनर्थ करते? यदि शकुंतला ने स्वयं को त्याग दिए जाने के कारण दुष्यंत को कटु वचन कह दिया, तो इसमें अस्वाभाविक क्या है? इसी प्रकार अपने परित्याग को अन्याय समझने वाली सीता का कटु वाक्य कहना सर्वथा स्वाभाविक है। पढ़ने-लिखने में स्वयं कोई बात ऐसी नहीं होती, जिससे अनर्थ हो सके।

(34) 'स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं' - कुतर्कवादियों की इस दलील का खंडन द्विवेदी जी ने कैसे किया है?

उत्तर- कुतर्कवादियों की दलील है कि स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं। यदि शिक्षा के परिणामस्वरूप ही स्त्रियाँ अनर्थ करती हैं तो पुरुषों द्वारा किया गया अनर्थ भी शिक्षा का ही परिणाम मानना चाहिए। यदि चोरी, डकैती, हत्या, घूस, व्यभिचार आदि शिक्षा का परिणाम है तो सारे स्कूल कॉलेज भी बन्द कर देना चाहिए।

ऐंसी दलील तो मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति ही दे सकता है। शिक्षा में ऐसी कोई बात नहीं होती,जो अनर्थकारी हो। अनर्थ केवल स्त्रियों से ही नहीं पुरुषों से भी होते हैं। अनर्थ अनपढ़ और पढ़े लिखे दोनों से ही हो जाते हैं।

अनर्थ के कारण और ही होते हैं, जिन्हें व्यक्ति-विशेष के चाल-चलन को देखकर समझा जा सकता है। इस प्रकार स्त्रियों को पढ़ाने से कोई अनर्थ नहीं होता।

(35) आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है?

उत्तर- आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज मानी जाती है, क्योंकि इस खोज ने मनुष्य की जीवन-शैली को पूरी तरह बदल दिया। इस खोज से मनुष्य की सभ्यता का मार्ग खुलगया। इस खोज के पीछे प्रेरणा के मुख्य स्रोत रहे होंगे। पेट की भूख को मिटाने की आवश्यकता तथा शीत से शरीर के बचाव की इच्छा।

(36) वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति किसे कहा जा सकता है?

उत्तर- वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' उसे कहा जा सकता है जो अपनी बुद्धि अथवा विवेक के द्वारा किसी भी नए तथ्य का दर्शन करता है।

अर्थात् जिसने अपनी योग्यता के बल पर किसी नई चीज का आविष्कार किया हो,वही वास्तविक अर्थों में संस्कृत व्यक्ति कहलाने के योग्य है।

(37) न्यूटन की संस्कृत मानव कहने के पीछे कौन से तर्क दिए गए हैं?

उत्तर- न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे यह तर्क दिया गया है कि उसने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का अपनी बुद्धि के बल पर आविष्कार किया। इसीलिए वह संस्कृत मानव कहलाने के योग्य बन गया।

Amarwah unity

SUBSCRIBED

96 videos

Stand with unity, an educational channel for the helping students & providing study materials

Uploads

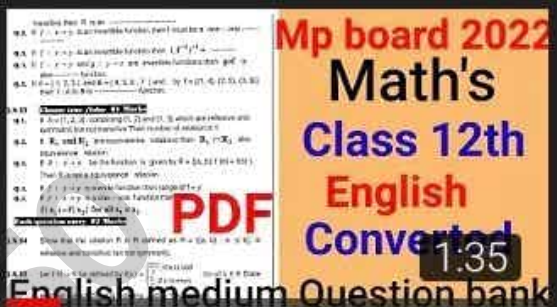

Mp board Class 12th Math's English mediu...

177 views · 1 day ago

Model paper class 10th & 12th mp board...

588 views · 1 day ago

न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों एवं ज्ञान की कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृति इसलिए नहीं कहला सकते क्योंकि उन्हें अनेक बातों का ज्ञान तो प्राप्त है परंतु उन्होंने स्वयं कोई आविष्कार नहीं किया है। इस प्रकार वे सभ्य भले ही हैं परंतु न्यूटन के समान संस्कृत नहीं।

व्याख्या

प्रश्न 7. निम्नलिखित गद्यांश की सन्दर्भ–प्रसंग सहित व्याख्या लिखिए। **(4 अंकीय प्रश्न)**

(1) मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची। जिसे कहते हैं और सुंदर थी। नेता जी सुंदर लग रहे थे। कुछ–कुछ मासूमों और कमसिन। फौजी वर्दी। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो .....' वगैरह याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह सफल और सराहनीय प्रयास था।

उत्तर– संदर्भ–प्रसंग सहित व्याख्या– यानी चश्मा तो था, लेकिन संगमरमर का नहीं था, एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला प्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था, हालदार साहब जब पहली बार कस्बे से गुजरे और चौराहे पर पान खाने रूके तभी उन्होंने लक्षित किया और उनके चेहरे पर मुस्कान फैल गयी।... मूर्ति पत्थर की, लेकिन चश्मा रियल।

(2) बालगोविंद भगत मँझोले कद के गोरे–चिट्टे आदमी थे। साठ से ऊपर के ही होंगे। बाल पक गये थे। लंबी दाढ़ी या जटाजूट तो नहीं रखते थे, किन्तु हमेशा उनका चेहरा सफेद बालों से ही जगमग किए रहता। मस्तक पर हमेशा चमकता हुआ रामानंदी चन्दन जो नाक के एक छोर से ही,औरतों के टीके की तरह शुरू होता। गले में तुलसी की जड़ों की एक बेडौल माला बाँधे रहते।

उत्तर–

(3) फादर को जहरवाद से नहीं मरना चाहिए था। जिसकी रगों में दूसरों के लिए मिठास भरे अमृत के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। उसके लिए इस जहर का विधान क्यों हो? यह सवाल किस ईश्वर से पूछें? प्रभु की आस्था ही जिसका अस्तित्व था। यह देह की इस यातना की परीक्षा उम्र की आखिरी देहरी पर क्यों दें?

(4) केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परम्परा और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का बिल्कुल एहासास नहीं होता कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाए बैठा रहता है। समय का प्रवाह भले ही हमें दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए..... स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दें। हमें पूरी तरह उससे मुक्त तो नहीं ही कर सकता।

(5) बड़े शोक की बात है, आजकल भी ऐसे लागे विद्यमान हैं जो स्त्रियों को पढ़ाना उनके और गृह–सुख के नाश का कारण समझते हैं। और लोग भी ऐसे–वैसे नहीं, सुशिक्षित लोग–ऐसे लोग जिन्होंने बड़े–बड़े स्कूलों और शायद कॉलिजों में भी शिक्षा पाई है, जो धर्म–शास्त्र और संस्कृत के ग्रंथ साहित्य से परिचय रखते हैं, और जिनका पेशा कुशिक्षितों को सुशिक्षित करना, कुमार्गगामियों को सुमार्गगामी बनाना और अधार्मिकों को धर्मत्व समझाना है।

(6) एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज की खोज करता है; किन्तु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और संतान जिसे अपने पूर्वज से यह वस्तु अनायास ही प्राप्त हो गई, वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता।

उत्तर– छात्र स्वयं करें। ❑

इकाई–4

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(एकअंकीय)

प्रश्न 1. निम्नलिखित कथनों के सही विकल्प ज्ञात कीजिए–

(1) त्रिनेत्र में समास है–

(a) द्वन्द्व (b) तत्पुरुष
(c) द्विगु (d) अव्ययी भाव

(2) चिकित्सालय का समास विग्रह होगा–

(a) चिकित्सा पर आलस (b) चिकित्सा का आलय
(c) चिकित्सा के लिए आलय (d) चिकित्सा से आलय

(3) किस समास में दोनों प्रधान होते हैं–

(a) द्वन्द्व (b) तत्पुरुष
(c) कर्मधारय (d) बहुब्रीही

(4) 'मोहन बाजार जाता है'। वाक्य का आज्ञावाचक वाक्य होगा–
(a) मोहन जाता है बाजार
(b) बाजार जाता है राम
(c) मोहन बाजार जाओ
(d) राम बाजार क्यों नहीं जाता है।

(5) 'लड़कियाँ नाच रही होंगी' वाक्य है–
(a) कर्मवाच्य (b) कर्तृवाच्य
(c) भाववाच्य (d) इनमें से कोई नहीं

(6) रचना के आधार पर वाक्य के प्रकार होते हैं–
(a) आठ (b) तीन
(c) चार (d) पांच

(7) ईश्वर में विश्वास करने वाले को कहा जाता है–
(a) ईश्वरीय (b) आस्तिक
(c) नास्तिक (d) सेवक

(8) 'अगर' किन अनेक शब्दों का एक शब्द है–
(a) अभी मरने वाला (b) जो कभी न मरे
(c) मरणशील प्राणी (d) मर चुका हो

(9) 'जो दूसरों का उपकार मानता है' के लिए एक शब्द है–
(a) कृतहन (b) कृतज्ञ
(c) उदार (d) निष्ठुर

(10) 'सब कुछ जानने वाले को कहा जाता है–
(a) जानकार (b) ज्ञानी
(c) सर्वज्ञ (d) बहुज्ञानी

उत्तर– (1) द्विगु (2) चिकित्सा का अलय (3) द्वन्द्व (4) मोहन बाजार जाओ (5) कर्मवाच्य (6) तीन (7) आस्तिक (8) जो कभी न मरे (9) कृतज्ञ (10) सर्वज्ञ।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–
(1) पाकशाला .....समास का उदाहरण है। (द्वन्द्व/तत्पुरुष)
(2) 'यथाशक्ति' में समास ..... होता है।
(द्विगु/अव्ययीभाव)
(3) वाच्य के आधार पर वाक्य के ..... प्रकार होते हैं।
(चार/तीन)
(4) मोहन अच्छा पढ़ा, किन्तु हार गया .....वाक्य है।
(मिश्रित/संयुक्त)
(5) 'रमेश क्या लिखता है?' ..... वाक्य है।
(आज्ञावाचक/प्रश्नवाचक)
(6) पिता की हत्या करने वाला ..... कहा जाता है।
(पुत्रहंता/पितृहंता)
(7) 'इस लोक से संबंधित' के लिये एक शब्द ..... है।
(ऐहिक/दैविक)
(8) 'बाजार जाओ।' .....सूचक वाक्य है। (विधि/आज्ञा)
(9) महल के भीतरी भाग को ..... कहते हैं। (अंत:/छत)
(10) 'सुबह के बाद का समय' के लिए एक शब्द ..... है।
(सायं/दोपहर)

उत्तर– (1) तत्पुरुष (2) अव्ययीभाव (3) तीन (4) मिश्रित (5) प्रश्नवाचक (6) पितृहंता (7) ऐहिक (8) आज्ञा (9) अंत: (10) दोपहर।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये–

(1)

(अ)	(ब)
(1) शब्दों के सार्थक योग को	(a) इच्छावाचक वाक्य
(2) नयनाभिराम	(b) मुहावरे
(3) ईश्वर करे, तुम पास हो जाओ	(c) वाक्य कहा जाता है।
(4) कुसुम खाना खाकर चली गई	(d) कर्मधारय समास
(5) मुँह चढ़ी बात	(e) कर्तृवाच्य

उत्तर– (1) c (2) d (3) a (4) e (5) b.

(2)

(अ)	(ब)
(1) अंधे के हाथ बटेर लगना	(a) दो (सकर्मक,अकर्मक)
(2) नौ दो ग्यारह होना	(b) ही,भी,तक
(3) निपात शब्द	(c) विराम चिन्ह
(4) क्रिया के भेद (कर्म के आधार पर)	(d) बिना मेहनत के लाभ प्राप्त करना
(5) समुच्चय बोधक को	(e) भाग जाना

उत्तर– (1) d (2) e (3) b (4) a (5) c.

प्रश्न 4. एक वाक्य में उत्तर दीजिए–
(1) कर्म के आधार पर क्रिया के भेद लिखिए।
(2) समास के कितने प्रकार होते हैं?
(3) 'चक्र को धारण करने वाला' का क्या समास होगा?
(4) उपासना करने वाला क्या कहलाता है?

(5) विशेषण किसे कहते हैं?
(6) 'काला अक्षर भैंस बराबर' लोकोक्ति का अर्थ लिखिए।
(7) 'छक्के छुड़ाना' मुहावरे का अर्थ लिखिए।
(8) किसी कार्य को बार-बार करना' क्या कहलाता है।

उत्तर- (1) कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद-अकर्मक सकर्मक होते हैं।
(2) समास छः प्रकार के होते हैं।
(3) 'चक्र को धारण करने वाला' में बहुब्रीहि समास है।
(4) उपासना करने वाला उपासक कहलाता है।
(5) संज्ञा, सर्वनाम व क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।
(6) काला अक्षर भैंस बराबर लोकोक्ति का अर्थ पढ़ा लिखा न होना।
(7) 'छक्के छुड़ाना' मुहावरे का अर्थ परास्त कर देना है।
(8) 'किसी कार्य को बार-बार करना' पुनरावृत्ति कहलाता है।

प्रश्न 5. सत्य/असत्य बताइये-

(1) 'यथाशक्ति' अव्ययीभाव समास का उदाहरण है।
(2) 'पंचानन' में द्वन्द्व समास है।
(3) 'मधुरस' में कर्मधारय समास है।
(4) 'पुरुषों में उत्तम पुरुषोत्तम' कहलाता है।
(5) 'रात-दिन' द्विगु समास का उदाहरण है।
(6) एक ही स्थान पर टिके रहने के लिए यायावर शब्द आता है।
(7) 'जिसकी एक आँख हो' अन्धा कहलाता है।
(8) अर्थ के आधार पर वाक्य के 9 प्रकार होते हैं।
(9) 'सिद्धार्थ स्वस्थ है।' विधि वाचक वाक्य है।
(10) शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।

उत्तर- (1) सत्य (2) असत्य (3) असत्य (4) सत्य (5) असत्य (6) असत्य (7) असत्य (8) असत्य (9) सत्य (10) सत्य।

प्रश्न 6. निम्नलिखित प्रश्नों के 30-30 शब्द में उत्तर दीजिए।

(1) निपात शब्द की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर- किसी भी बात पर अतिरिक्त भार देने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है उसे निपात कहते हैं, जैसे- तक,मत, क्या, आदि।

उदाहरण- (1) तुम्हें आज रात रुकना ही पड़ेगा।
(2) तुमने तो हद कर दी।

(2) समुच्चय बोधक को परिभाषित करते हुए एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर- ऐसा पद (अव्यय), जो क्रिया या संज्ञा की विशेषता न बताकर एक वाक्य या पद का सम्बन्ध दूसरे वाक्य या पद से जोड़ता है, 'समुच्चय बोधक' कहलाता है।
समुच्चय बोधक अव्यय पूर्व वाक्य का सम्बन्ध उत्तर वाक्य से जोड़ता है। समुच्चय बोधक अव्यय दो पदों को भी जोड़ता है।
जैसे- दो और दो चार होते हैं।
राम और श्याम जाते हैं।

(3) वाच्य की परिभाषा व वाच्य के प्रकारों के नाम लिखिए।

उत्तर- क्रिया के जिस रूपान्तर से यह जाना जाए कि वाच्य में क्रिया द्वारा किए गए विधान (कही गई बात) का विषय कर्ता है, कर्म है या भाव, उसे वाच्य कहते हैं। वाच्य तीन प्रकार के होते हैं-
(1) कर्तृवाच्य (2) कर्मवाच्य (3) भाववाच्य।

(4) कर्मवाच्य की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर- कर्मवाच्य (Passive Voice)- इसमें कर्म की प्रधानता होती है और क्रिया का सीधा सम्बन्ध क्रिया से होता है। यह क्रिया के उस रूप से, जिससे यह जाना जाता है कि वाच्य का उद्देश्य कर्म है, कर्मवाच्य कहा जाता है। जैसे-अध्यापक द्वारा हमें पाठ पढ़ाया गया। हिन्दी में कर्मवाच्य का प्रयोग निम्नलिखित स्थानों पर होता है-
(1) जहाँ कर्ता अज्ञात हो- जैसे- चिट्ठी भेजी गई।
(2) जहाँ कर्ता को प्रकट न करना हो- जैसे- चोरों का पता लगाया जा रहा है।
(3) गर्व या अधिकार की सूचना देने के लिए- जैसे- अपराधी को न्यायाधीश के सामने पेश किया जाए।

(5) कर्तृवाच्य की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर- कर्तृवाच्य (Active Voice)- यदि क्रिया का विधान कर्ता के विषय में किया गया हो तो कृर्तवाच्य होगी; जैसे- मोहन हॉकी खेलता है।
कर्तृवाच्य में कर्ता प्रधान होता है। इस वाक्य में भी कर्ता प्रधान है।

(6) भाववाच्य की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर- भाववाच्य (Impersonal Voice)- इसमें भाव अर्थात

क्रिया के अर्थ ही की प्रधानता रहती है। क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाता है कि वाच्य का उद्देश्य कर्ता या कर्म से कोई नहीं है, बल्कि क्रिया का भाव है, उस रूप को भाववाच्य कहते हैं, जैसे- अब पढ़ा जाए। अब सहा नहीं जाता।

(7) अकर्मक क्रिया की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर- जिस क्रिया के व्यापार (कार्य) और फल दोनों कर्ता में ही रहें, वह अकर्मक क्रिया कहलाती है। इस क्रिया में कर्म नहीं होता।

जैसे- राम सोता है, बच्चा हँसता है आदि।

(8) सकर्मक क्रिया की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर- सकर्मक क्रिया- जिन क्रियाओं के व्यापार (कार्य) का फल कर्त्ता को छोड़कर कर्म पर पड़े, वे सकर्मक क्रियाएँ कहलाती है।

जैसे- बच्चा पत्र लिखता है, गीता खाना पकाती है।

(9) क्रिया-विशेषण की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर- क्रिया या अन्य क्रिया विशेषण या विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द को क्रिया विशेषण कहते हैं।

उदाहरण- धीरे-धीरे, यहाँ, वहाँ, तेज, सुस्त, भारी आदि।

(10) मुहावरे किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर- मुहावरे की परिभाषा- जब कोई वाक्यांश अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता है, उसे मुहावरा कहते हैं।

मुहावरे का अर्थ सहित प्रयोग

1. मुहर लगा देना- (प्रभाव पड़ना)- गोपाल ने ईमानदारी के कारण व्यक्तियों पर अपनी मुहर लगा दी है।

2. मौत से लड़ना- (मुसीबतें झेलना)- वन जाते समय मुझे मौत से लड़ना पड़ा।

3. सिर-माथे चढ़ना- (स्वीकार करना)- छात्रों ने गुरू की आज्ञा को सिर-माथे चढ़ाया।

(11) लोकोक्ति की परिभाषा लिखिए।

उत्तर- परिभाषा- लोकोक्ति का अर्थ है संसार में प्रचलित उक्ति। अपने कथनों को प्रभावशाली बनाने के लिये इनका स्वतन्त्र वाक्य के रूप में प्रयोग किया जाता है।

लोकोक्ति का अर्थ सहित प्रयोग

1. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता- (अकेला आदमी कुछ नहीं कर सकता) = कोई भी नेता देश में भ्रष्टाचार समाप्त नहीं कर सकता क्योंकि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

2. आँख के अन्धे नाम नैन सुख- (नाम के विपरीत गुण होना) = नाम तो है तुम्हारा कृपासिन्धु परन्तु हो बड़े क्रोधी, इसीलिये कहते हैं आँख के अन्धे नाम नैन सुख।

(12) समास की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर- जब परस्पर सम्बन्ध रखने वाले शब्दों को मिलाकर उनके बीच आई विभक्ति आदि का लोप करके उनसे एक पद बना दिया जाता है, तब इस प्रक्रिया को 'समास' कहते हैं। अथवा दो या दो से अधिक शब्दों के योग को 'समास' कहते हैं। जैसे- राजा का पुत्र = राजपुत्र।

(13) समास के प्रकारों के नाम लिखिए।

उत्तर- समास के निम्नलिखित छह भेद हैं-(1) तत्पुरुष समास, (2) द्वन्द्व समास, (3) बहुब्रीहि समास, (4) कर्मधारय समास, (5) द्विगु समास, (6) अव्ययीभाव समास।

(14) विज्ञापन लेखन किसे कहते हैं?

उत्तर- विज्ञापन अर्थात् विशेष जानकारी देना। किसी वस्तु या सेवाओं के बारे में रचनात्मक और आकर्षक ढंग से विज्ञापन लिखने को विज्ञापन लेखन कहते हैं।

(15) सूचना लेखन किसे कहते हैं?

उत्तर- सूचना कम शब्दों में औपचारिक शैली में लिखी गई संक्षिप्त जानकारी होती है। किसी विशेष सूचना को सार्वजनिक करना सूचना लेखन कहलाता है। दूसरे शब्दों में- दिनांक और स्थान के साथ भविष्य में होने वाले कार्यक्रमों आदि के विषय में दी गई लिखित जानकारी सूचना कहलाती है।

(16) अनुच्छेद लेखन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- किसी एक भाव या विचार को व्यक्त करने के लिए लिखे गये सम्बद्ध और लघु वाक्य समूह को अनुच्छेद-लेखन कहते हैं। दूसरे शब्दों में किसी घटना, दृश्य अथवा विषय को संक्षिप्त किन्तु अर्थपूर्ण ढंग से जिस लेखन शैली में प्रस्तुत किया जाता है। उसे अनुच्छेद लेखन कहते हैं।

(17) संवाद लेखन का क्या अभिप्राय है?

उत्तर- संवाद लेखन की परिभाषा जब दो या दो से अधिक लोगों के बीच होने वाले वार्तालाप को लिखा जाता है, तब वह संवाद लेखन कहलाता है।

(18) अनेकार्थी शब्द किसे कहते हैं ?

उत्तर- अनेकार्थी शब्द उसे कहते हैं, जिसके कई अर्थ हो।

(19) औपचारिक पत्र से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- औपचारिक पत्र उन्हें लिखा जाता है जिनसे हमारा कोई निजी संबंध ना हो। व्यवसाय से संबंधी प्रधानाचार्य को लिखे प्रार्थना पत्र, आवेदन पत्र, सरकारी विभागों को लिखे गए पत्र, संपादक के नाम पत्र आदि औपचारिक पत्र कहलाते हैं।

(20) अनौपचारिक पत्र को परिभाषित कीजिए।

उत्तर-इस प्रकार के पत्रों में लिखने वाले और पत्र पाने वाले के बीच नजदीकी या घनिष्ठ संबंध होता है। यह संबंध पारिवारिक तथा अन्य सगे संबंधियों का भी हो सकता है और मित्रता का भी। इन पत्रों को व्यक्तिगत पत्र भी कहते हैं। इन पत्रों की विषयवस्तु निजी और घरेलू होती है। इनका स्वरूप संबंधों के आधार पर निर्धारित होता है। इन पत्रों की भाषा शैली प्राय: अनौपचारिक और आत्मीय होती है।

प्रश्न 7. निम्नलिखित प्रश्नों के 75-75 शब्द में उत्तर लिखिए। (3 अंकीय)

(1) विज्ञापन लेखन व सूचना लेखन में कोई तीन अन्तर लिखिए।

उत्तर-

(2) लोकोक्ति व मुहावरे में कोई तीन अन्तर लिखिए।

उत्तर-मुहावरे तथा लोकोक्ति में अन्तर- बहुत-से लोग मुहावरे तथा लोकोक्ति में कोई अन्तर ही नहीं समझते। दोनों का अन्तर निम्नलिखित बातों से स्पष्ट है-

(क) मुहावरे वास्तव में शब्दों के लाक्षणिक प्रयोग होते हैं, पर लोकोक्तियाँ किसी कहानी अथवा चिरसत्य के आधार पर बने हुए पूरे वाक्य के रूप में होती है ।

(ख) मुहावरों का प्रयोग वाक्यों के अन्तर्गत ही हो सकता है, परन्तु लोकोक्तियों का प्रयोग पूर्णतया स्वतन्त्र रूप से किया जा सकता है।

(ग) मुहावरे को वाक्य से निकाल देने पर उसका सौन्दर्य बहुत कुछ नष्ट हो जाता है, परन्तु लोकोक्ति निकाल देने पर ऐसा नहीं होता। इस बात को यों भी कह सकते हैं कि मुहावरा वाक्य का अंश होता है, स्वतन्त्र रूप से उसे व्यवहार में नहीं लिया जा सकता। पर लोकोक्ति स्वतन्त्र वाक्य होती है तथा अपना स्वतन्त्र अर्थ रखती है; किसी कथन की पुष्टि करने के लिए उदाहरण के रूप में उसका अलग से प्रयोग किया जा सकता है।

(3) कर्मधारय समास व बहुब्रीहि समास में तीन अन्तर लिखिए।

उत्तर- जिस समस्त पद में कोई भी पद प्रधान न हो और समस्त पद किसी अन्य पद का विशेषण अथवा पर्याय बन जाए, उसे 'बहुब्रीहि समास' कहते हैं। जैसे-

दस हैं आनन जिसके	= दशानन	(रावण)
पीत है अम्बर जिसका	= पीताम्बर	(श्रीकृष्ण) **(S-13)**
चार हैं भुजाएँ जिसकी	= चतुर्भुज	(विष्णु)
चन्द्रमा है शेखर पर जिसके	= चन्द्रशेखर	(शंकर)
मन्द है बुद्धि जिसकी	= मंदबुद्धि	(मूर्ख)
सुष्ठु है शील जिसका	= सुशील	(चरित्रवान)
महान् है आत्मा जिसकी	= महात्मा	(महापुरुष)
नीला है कण्ठ जिसका	= नीलकण्ठ	(शंकरजी)

जिस समास में प्रथम पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य हो, उसे 'कर्मधारय समास' कहते हैं। जैसे-

महान् वीर = महावीर। नीला कण्ठ = नीलकण्ठ।
पीत अम्बर = पीताम्बर। नीला गगन = नीलगगन।

(4) द्विगुसमास व द्वन्द्व समास में तीन अन्तर लिखिए।

उत्तर- द्विगु समास में प्रथम पद संख्यावाचक विशेषण होता है और उत्तर पद विशेष्य होता है। जैसे-

त्रिलोकों का समूह	=	त्रिलोक।
पाँच वटों का समूह	=	पंचवटी।
नौ ग्रहों का समूह **(17)**	=	नवग्रह।
सात सौ दोहों का समूह	=	सतसई।
तीन भवनों का समूह	=	त्रिभुवन

जिस समास में दोनों या सब पद प्रधान होते हैं, उसे 'द्व समास' कहते हैं।

जैसे-	दिन और रात	=	दिन-रात।
	पाप और पुण्य	=	पाप-पुण्य।
	सुख अथवा दुःख	=	सुख-दुःख।
	लाभ या हानि	=	लाभ-हानि।
	भला अथवा बुरा	=	भला-बुरा।
	माता और पिता	=	माता-पिता

vivo Y51A · Bharat sir

इकाई-5

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(एकअंकीय)

प्रश्न 1. निम्नलिखित कथनों के सही विकल्प ज्ञात कीजिए-

(1) सब बच्चों में ढीठ था-

(a) राजू (b) बैजू

(c) संजू (d) चीनू

(2) साँप निकलने पर डरकर भागे भोलानाथ आकर छिपे-

(a) घर के कमरे में (b) बैठक के कोने में

(c) पिताजी की गोद में (d) मइया के आँचल में

(3) नाक लगवाने बुलाया गया-

(a) चित्रकार को (b) मूर्तिकार को

(c) मिस्त्री को (d) ठेकेदार को

(4) 'जार्ज पंचम की नाक' कहानी में सारा व्यंग्य केन्द्रित है-

(a) नाक पर (b) कान पर

(c) आँख पर (d) गले पर

(5) 'हिरोशिमा' नामक कविता अज्ञेय ने लिखी-

(a) भारत में (b) रेलगाड़ी में बैठे-बैठे

(c) जापान में (d) हवाई जहाज में

(6) लेखक अपनी आभ्यंतर विवशता को पहचान पाता है-

(a) लिखकर (b) प्रयोग करके

(c) सुनकर (d) समझाए जाने पर

(7) बाबू जी पाठ करते थे-

(a) गीता का (b) सुन्दरकाण्ड का

(c) कबीर के पदों का (d) रामायण का

(8) लानत है आपकी अक्ल पर कथन था-

(a) सभापति का (b) मजदूर का

(c) मूर्तिकार का (d) चपरासी का

(9) कथाकार के साथ-साथ कमलेश्वर को सफल पाया गया-

(a) पत्रकार के रूप में (b) मूर्तिकार के रूप में

(c) चित्रकार के रूप में (d) खिलाड़ी के रूप में

उत्तर- (1) बैजू (2) मइयां के आँचल में (3) मूर्तिकार को (4) नाक पर (5) रेलगाड़ी में बैठे-बैठे (6) लिखकर (7) रामायण का (8) सभापति का (9) पत्रकार के रूप में।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) आम की फसल में कभी-कभी खूब .... आती है। (आँधी/वर्षा)

(2) कभी-कभी .... हमसे कुश्ती भी लड़ते। (बाबूजी/पिताजी)

(3) भोलानाथ और उनके साथी .... के बिल के पानी उलीचने लगे। (चूहों/साँपों)

(4) महारानी के सूट की कीमत भारतीय मुद्रा में .... थी। (पाँच हजार रूपए/चार हजार रूपए)

(5) जार्ज पंचम की .... की नाक एकाएक गायब हो गई। (लाल/पत्थर)

(6) हिरोशिमा .... में है। (जापान/अमेरिका)

(7) अज्ञेय .... के विद्यार्थी रहे। (विज्ञान/कला)

(8) अखबारों में छपा कि जार्ज पंचम की मूर्ति पर .... नाक लगाई गई। (जिंदा/पत्थर की)

(9) अज्ञेय का जन्म .... में हुआ। (उ.प्र./म.प्र.)

(10) अज्ञेय की प्रारंभिक शिक्षा .... में हुई। (पंजाब/जम्मू कश्मीर)

उत्तर- (1) आँधी (2) बाबूजी (3) चूहों (4) पांच हजार रूपए (5) लाट (6) जापान (7) विज्ञान (8) जिंदा (9) उ.प्र. (10) जम्मू कश्मीर।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये-

(1)

(अ)	(ब)
(1) माता का आँचल	(a) अज्ञेय
(2) जार्ज पंचम की नाक	(b) शिवपूजन सहाय
(3) मैं क्यों लिखता हूँ	(c) कमलेश्वर
(4) निबन्ध	(d) माता का आँचल
(5) कहानी	(e) मैं क्यों लिखता हूँ
(6) उपन्यास का अंश	(f) जार्ज पंचम की नाक

उत्तर- (1) b (2) c (3) a (4) e (5) f (6) d.

(2)

(अ)	(ब)
(1) शिवपूजन सहाय का जन्म	(a) सन् 1911
(2) देहाती दुनिया	(b) सन् 1893

(3) कमलेश्वर का जन्म (c) शिवपूजन सहायक
(4) सारिका (d) सन् 1932
(5) अज्ञेय (e) कमलेश्वर
(6) अज्ञेय का जन्म (f) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन।

उत्तर– (1) b (2) c (3) d (4) f (5) f (6) a.

प्रश्न 4. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिए–

(1) हिन्दी का पहला आंचलिक उपन्यास कौन–सा माना जाता है?

(2) नाक किसका द्योतक होती है?

(3) बरखा बंद होते ही बाग में क्या–क्या नजर आए?

(4) चबूतरे का एक कोना क्या बनता था?

(5) किस पदार्थ के कारण हिरोशिमा के अस्पताल में आहत लोग वर्षों से कष्ट पा रहे हैं?

(6) अज्ञेय ने हिरोशिमा पर हुए अणु विस्फोट पर कौन–सी कविता लिखी?

उत्तर– (1) 1926 में प्रकाशित 'देहाती दुनिया' हिन्दी का पहला आंचलिक उपन्यास माना जाता है।

(2) नाक इज्जत का प्रतीक होती है।

(3) बरखा बंद होते ही बाग में बहुत से बिच्छु नजर आए।

(4) चबूतरे का एक कोना नाटक घर बनता था।

(5) रेडियम के कारण हिरोशिमा के अस्पताल में आहत लोग वर्षों से कष्ट पा रहे हैं।

(6) अज्ञेय ने हिरोशिमा पर हुए अणु बम–विस्फोट पर 'हिरोशिमा' नामक कविता लिखी।

प्रश्न 5. सत्य/असत्य बताइये–

(1) तारकेश्वरनाथ ही भोलानाथ थे।

(2) हमें मईया की गोद से निकलकर बाबूजी की गोद में शांति मिली।

(3) गणेश जी के चूहे की रक्षा के लिए शिव का नंदी निकल आया।

(4) सबकी नाकों का नाम लिया पर जार्ज पंचम की नाक सबसे छोटी है।

(5) जार्ज पंचम की खोई हुई नाक का नाप उसके मूर्तिकार के पास था।

(6) दिल्ली में सिर्फ जार्ज पंचम की खोई हुई नाक का नाप उसके मूर्तिकार के पास था।

उत्तर– (1) सत्य (2) असत्य (3) असत्य (4) असत्य (5) सत्य (6) असत्य ।

प्रश्न 6. निम्नलिखित प्रश्नों के 30–30 शब्द में उत्तर दीजिए।

(1) भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

उत्तर– (1) बालक का स्वभाव होता है अपने हमजोली देखकर उन्हीं के साथ रहना, घूमना–फिरना, खेलना, पसन्द करता है।

(2) बालक भोलानाथ जब अपने पिता की गोद में सिसक रहा था। रास्ते में उसे अपने मित्र दिखाई देते हैं तो अचानक उसका सिसकना बन्द हो जाता है और अपने पिता की गोद से उतरकर अपने मित्रों के पास जाने की इच्छा व्यक्त करता है। भोलानाथ भी अपने मित्रों के साथ खेलना चाहता है।

(2) बच्चे माता–पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं?

उत्तर– बच्चे माता–पिता के प्रति अपने प्रेम को इस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं–

(1) छोटे बच्चे रोकर अपना प्रेम अभिव्यक्त करते हैं।

(2) कहीं कोई गलत काम करके माँ से लिपट कर अपना प्रेम अभिव्यक्त करते हैं।

(3) माँ–बाप को अपने खेल में सम्मिलित कर अपना प्रेम अभिव्यक्त करते हैं।

(4) अपने हर कार्य में अपने माता–पिता का आश्वासन चाहते हैं।

(5) माँ के हाथ से खाना खाकर अपना प्रेम अभिव्यक्त करते हैं।

(3) माँ बच्चे को किस प्रकार खाना खिलाती है?

उत्तर– माँ थाली में दही–भात मिलाती थी और अलग–अलग तोता, मैना, कबूतर, हंस, मोर आदि के बनावटी नाम से कौर बनाकर यह कहते हुए खिलाती जाती कि जल्दी खा लो, नहीं तो उड़ जाएँगे; बालक, इतनी जल्दी खा लेता था कि 'पक्षियों को उड़ने' का मौका ही नहीं मिलता था।

(4) चूहों के बिल में पानी उलीचने पर क्या हुआ?

उत्तर– (1) सभी बच्चों ने एक टीले पर जाकर चूहों के बिल पानी उलीचना शुरू कर दिया।

(2) नीचे से ऊपर पानी फेंकना था। सब थक गए। तभी गणे

vivo Y51A

जी के चूहे की रक्षा के लिए शिवजी का साँप निकल आया। सभी बच्चे रोते चिल्लाते बेतहाशा भागने लगे। किसी का सिर फूटा, किसी के दाँत टूटे।

(3) सभी गिरते-पड़ते भागे। भोलानाथ की सारी देह लहूलुहान हो गई। उसके पैरों के तलवे काँटो से छलनी हो गए।

(4) बालक भोलानाथ एक सुर से दौड़े हुए आए और घर में घुस गए। सीधे माँ की गोद में जाकर शरण ली।

(5) माँ ने हल्दी पीसकर भोलानाथ के घावों पर लगाई बालक का सारा शरीर काँप रहा था।

(6) बालक आँखें खोलना चाहते हुए भी आँखें नहीं खोल पा रहा था।

(7) बालक भोलानाथ के काँपते हुए ओंठो को माँ बार-बार देखकर रोती थी और बड़े लाड़ से गले लगा लेती थी।

(8) माँ अपने पुत्र को डर से काँपते देखकर रो पड़ी और अधीर होकर उसके डर का कारण पूछने लगी।

(9) माँ भारी संकट में पड़ी, कभी बच्चे को देखती थी, कभी उसके अंगों को आँचल से पोंछती थी।

(5) रानी एलिजाबेथ के दर्जी की परेशानी का क्या कारण था?

उत्तर- (1) जब रानी एलिज़ाबेथ के दरजी को मालूम हुआ कि रानी हिंदुस्तान, पाकिस्तान व नेपाल भ्रमण हेतु जा रही हैं तो उसे लगा कि प्रत्येक स्थान पर जाने के लिए रानी की अलग-अलग तरह की व अलग-अलग कपड़े की ड्रेस बनानी पड़ेगी।

(2) हिंदुस्तान के लिए उसने रानी के लिए हिंदुस्तान से रेशमी कपड़ा मँगवा कर सूट बना दिया था।

(3) पाकिस्तान व नेपाल के लिए अभी कपड़े बनाने शेष थे।

(4) यह कथन उचित ही है कि जैसा देश वैसा भेष अर्थात् जहाँ जाओ वहीं के अनुरूप पहनो, खाओ व ठहरो। रानी को भी बाहर जाना था, दरजी के लिए परदेश के अनुसार रानी के लिए कपड़े बनाने की चिन्ता तर्कसंगत ही थी। कपड़े सिलने के साथ-साथ कपड़े भी मँगवाने थे।

6) जार्ज पंचम की लाट की नाक को पुनः लगाने के लिए मूर्तिकार ने क्या-क्या यत्न किए?

उत्तर- जॉर्ज पंचम की लाट की नाक को पुनः लगाने के लिए मूर्तिकार ने निम्नलिखित प्रयास किए-

(1) मूर्तिकार नाक का पत्थर ढूँढने हेतु हिंदुस्तान के हर पहाड़ पर गया, उसे कहीं भी वैसा पत्थर नहीं मिला।

(2) देश के नेताओं की मूर्तियाँ देखने के लिए मूर्तिकार बंबई, गुजरात, बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश सभी जगह गया। सभी नेताओं की मूर्तियों को ध्यान से देखा परन्तु किसी की नाक भी जॉर्ज पंचम की नाक से नहीं मिली।

(3) बिहार सेक्रेटरिएट के सामने सन् बयालीस में शहीद होने वाले बच्चों की मूर्तियों को भी देखने गया, मगर जॉर्ज पंचम की नाक बच्चों की नाक से भी छोटी थी।

(4) अन्त में एक जिंदा नाक जॉर्ज पंचम की नाक पर लगाई गई।

(7) जार्ज पंचम की लाट की नाक लगने वाली खबर के दिन अखबार चुप क्यों थे?

उत्तर- (1) जिस दिन जॉर्ज पंचम की नाक लगनी थी उस दिन सभी अखबार चुप थे। कहीं कोई सम्मेलन का जिक्र नहीं था, क्योंकि अपनी व्यवस्था के दोष के कारण सरकार कुछ बताना ही नहीं चाहती थी।

(2) क्योंकि जिंदा नाक लगाने की बात थी' यदि यह बात आम जनता तक चली जाती तो हंगामा हो जाता। इसी भय के कारण अखबार चुप थे।

इसलिए अखबारों में कुछ नहीं लिखा था-

(8) राजधानी में किस बात का तहलका मचा था?

उत्तर- (1) राजधानी में तहलकाह मचा था जो रानी पाँच हजार रुपये का रेशमी सूट पहनकर पालम के हवाई अड्डे पर उतरेगी, उसके लिए कुछ तो होना ही चाहिए।

(2) रानी दिल्ली आ रही है..... नयी दिल्ली ने पहले अपनी तरफ देखा और स्वाभाविक रूप से दिल्ली के मुँह से निकल गया-

"वे आए हमारे घर, खुदा की रहमत
कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं।"

(9) कलाकार की आँखों में आँसू क्यों आए?

उत्तर- कलाकार को जब सभा में बुलाया गया तब उसने सभी हुक्कामों के चेहरे देखे। उनके चेहरों पर अजीब सी परेशानी थी। कुछ उदास व कुछ बदहवास थे। उनकी जॉर्ज पंचम की लाट की नाक न होने के कारण परेशानी देखकर कलाकार की आँखों में आँसू आ गए।

(10) लेखक अज्ञेय ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया?

उत्तर– (1) लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता तब महसूस किया जब वह जापान जाकर हिरोशिमा गया, वहाँ के अणु बमों द्वारा घायल रोगियों को उसने अस्पताल में देखा, और सड़क पर एक जले हुए पत्थर पर लम्बी उजली छाया को देखकर उसने हिरोशिमा के विस्फोट को महसूस किया।

(2) लेखक ने महसूस किया कि विस्फोट के समय कोई इस पत्थर पर पास खड़ा रहा होगा और रेडियम–धर्मी किरणें वहाँ बंद हो गई होंगी, जिन्होंने पत्थर को झुलसा दिया हागा और व्यक्ति को भाप बनाकर उड़ा दिया होगा।

(11) 'मैं क्यों लिखता हूँ' के आधार पर बताइए कि लेखक को कौन–सी बातें लिखने के लिए प्रेरित करती है?

उत्तर– (क) लेखक को निम्नलिखित बातें लिखने के लिए प्रेरित करती हैं– (1) आभ्यंतर विवशता–लेखक के भीतर की विवशता। (2) संपादकों के आग्रह। (3) प्रकाशक के तकाजे। (4) आर्थिक विवशता।

(ख) किसी रचनाकार के प्रेरणा स्रोत किसी दूसरे को कुछ भी रचने के लिए इस प्रकार उत्साहित करते हैं–

(1) जब कभी किसी रचनाकार की कोई रचना या कृति दूसरा व्यक्ति पढ़ता है तो उसे लगता है कि इसमें वही भाव अंकित हैं जो उसके दिल में हैं, मानो यह रचना उसी दूसरे व्यक्ति के लिए लिखी गई है।

(2) तब वह दूसरा रचनाकार या व्यक्ति भी सोचता है कि वह स्वयं भी यह लिख सकता है। अत: किसी रचनाकार के प्रेरणा स्रोत दूसरे को कुछ भी रचने के लिए उत्साहित करते हैं।

(12) हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंत: व बाह्य दोनों दबाव का परिणाम है। यह आप कैसे कह सकते हैं।

उत्तर– (1) लेखक एक विज्ञान का छात्र था, उसे अणु–बमों का सैद्धान्तिक ज्ञान तो था ही, परंतु उसने तब तक हिरोशिमा में हुए विस्फोट के बारे में कविता नहीं लिखी जब तक उसने स्वयं हिरोशिमा में जाकर आत्मनुभव नहीं किया।

(2) उसने न केवल उन रोगियों के दुखों को अनुभव किया अपितु जले हुए पत्थर पर छाया देखकर अनुभूति भी प्राप्त की कि किस प्रकार रेडियम–धर्मी किरणों ने हिरोशिमा के लोगों का नाश किया।

अनुभूति व अनुभव के आधार पर व बाह्य सैद्धांतिक ज्ञान के आधार पर ही लेखक ने हिरोशिमा पर कविता भारत आते समय रेलगाड़ी में लिखी। ❑

इकाई–6

अपठित गद्यांश/अपठित काव्यांश

प्रश्न 1. निम्नलिखित अपठित गद्यांशों को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(1) मानव का अकारण ही मानव के प्रति अनुदार हो उठना न केवल मानवता के लिये लज्जाजनक है वरन् अनुचित भी है। वस्तुत: यथार्थ मनुष्य वही है जो मानवता का आदर करना जानता है, कर सकता है। केवल इसलिए कि कोई मनुष्य बुद्धिहीन है अथवा दरिद्र, वह घृणा का तो दूर रहा उपेक्षा का भी पात्र नहीं होना चाहिए। मानव तो इसलिए सम्मान के योग्य है कि वह मानव है, भगवान की सर्वश्रेष्ठ रचना है।

प्रश्न– (1) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

उत्तर– मानवता का आदर।

(2) यथार्थ मनुष्य किसे कहते हैं ?

उत्तर– मानवता का आदर करना जानते हो एवं कर सकते हो

(3) उपर्युक्त गद्य का सारांश लिखिए।

उत्तर– भगवान ने मानव की सर्वश्रेष्ठ रचना की है जिसमें उस मानवता का गुण समाहित है। मानव में दरिद्र या बुद्धिहीन हो पर भी घृणा का पात्र नहीं होना चाहिए।

(2) आप हमेशा अच्छी जिंदगी जीते आ रहे हैं। आप हमे बढ़िया कपड़े, बढ़िया जूते, बढ़िया घड़ी, बढ़िया मोबा जैसे दिखावों पर बहुत खर्च करते हैं। आप अपने शरीर कितना खर्च करते हैं? इसका मूल्यांकन जरूरी है। यह श अनमोल है। अगर शरीर स्वस्थ नहीं होगा तो आप ये सामान किस पर टांगेंगे? अतष स्वयं का स्वस्थ रहना स जरूरी है एवं स्वस्थ रहने में हमारे खान–पान का सबसे योगदान है।

vivo Y51A • Bharat sir

प्रश्न–(1) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
उत्तर– स्वस्थ शरीर।
(2) अनमोल क्या है ?
उत्तर– शरीर अनमोल है।
(3) शुद्ध, असली शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।
उत्तर– शुद्ध – अशुद्ध
असली – नकली

(3) आदर्श व्यक्ति कर्मशीलता में ही अपने जीवन की सफलता समझता है। जीवन का प्रत्येक क्षण वह कर्म में लगाता है। विश्राम और विनोद के लिए उसके पास निश्चित समय रहता है। शेष समय जन सेवा में व्यतीत होता है। हाथ पर हाथ धर कर बैठने को वह मृत्यु के समान समझता है। काम करने की उसमें लगन होती है। उत्साह होता है। विपत्तियों में भी वह अपने चरित्र का सच्चा परिचय देता है। धैर्य की कुदाली से वह बड़े–बड़े संकट पर्वतों को ढहा देता है। उसकी कार्यकुशलता देखकर लोग दाँतों तले ऊँगली दबाते हैं। संतोष उसका धन है। वह परिस्थितियों का दास नहीं है। परिस्थितियाँ उसकी दासी हैं।

प्रश्न–(1) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
उत्तर– आदर्श व्यक्ति की कर्मशीलता ।
(2) उपर्युक्त गद्यांश में वर्णित व्यक्ति के गुणों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
उत्तर–उपर्युक्त गद्यांश में आदर्श व्यक्ति की कर्मशीलता में ही जीवन की सफलता है। आदर्श व्यक्ति हमेशा अपने कर्म में लगा रहता है एवं उसी में उसका विश्वास रहता है।

(4) देश प्रेम में आत्म विस्तार का भाव निहित है। जिस भाव के अंतर्गत व्यक्ति परिवार और समाज की परिधि से भी आगे अपने देश के प्रति अपना लगाव अनुभव करने लगता है, उस भाव को देश प्रेम के अंतर्गत परिगणित किया जाता है। देश प्रेम में देश की रक्षा और देश के विकास को महत्व दिए जाने के साथ देश के प्रति पूज्य भाव का संचार भी सम्मिलित होता है। जब तक व्यक्ति देश को अपना आराध्य नहीं बनाता, तब देश के प्रति समर्पण का भाव भी उसमें जाग्रत नहीं होता।

प्रश्न–
(1) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
(2) देश के प्रति समर्पण का भाव कब जाग्रत होता है?
(3) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।
उत्तर– छात्र स्वयं करें।

(5) राष्ट्रीय भावना में शौर्यवान का अपना विशिष्ट सथान है। राष्ट्र गौरव का बखान और उसकी रक्षा का प्रबल भाव जिस कविता में व्यक्त होता है, उस वीर भाव को शौर्य के अन्तर्गत गिना जाता है। शौर्य का भाव आत्मगौरव से परिपूर्ण होता है। हिन्दी कविता के सुदीर्घ इतिहास में इस भाव की प्रक्रिया प्राय: सभी युगों में होती रही है। आदिकाल से आधुनिक युग तक किसी न किसी रूप में शौर्य और देशप्रेम का भाव जाग्रत रहा है।

प्रश्न–
(1) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
(2) शौर्य भाव क्या है?
(3) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।
उत्तर– छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 2. निम्नलिखित अपठित काव्यांशों को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(1) वीरों का कैसा हो बसंत?
आ रही हिमालय से पुकार
है उदधि गरजता बार–बार
प्राची, पश्चिम, भू–नभ उपार,
सब पूछ रहे हैं दिग् दिगंत,
वीरों का कैसा हो बसंत?

प्रश्न–
(1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) वीरों का बसंत कैसा होना चाहिए?
(3) उपर्युक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।
उत्तर– छात्र स्वयं करें।

(2) मैंने छुटपन से छिपकर पैसे बोए थे
सोचा था, पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,
रूपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी,
और फूल–फलकर, मैं मोटा सेठ बनूँगा।
पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा
बंध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला।
सपने जाने कहाँ मिटे, सब धूल हो गए।
मैं हताश हो, बांट जोहत रहा दिनों तक
बाल कल्पनाउके अपलक पाँवड़े बिछाकर
मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोये थे,
ममता को रोंपा था, तृष्णा को सींचा था।

(1) काव्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
(2) कवि ने पैसों के पेड़ से क्या कल्पना की है?
(3) उपर्युक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

(3) युवक नहीं जो देख संकटों को डर जाता,
यह चकोर ही नहीं कि जो अंगार न खाता।
बलिदानों का पंथ नहीं जिसने पहचाना,
कह देगा यह कौन कि वह भी परवाना।
उक्त रक्त की धार जवानी माँग रही है।
वीरोचित शृंगार जवानी माँग रही है।

प्रश्न–
(1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) बलिदान कौन देता है?
(3) उपर्युक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

(4) तुम हो धरती के पुत्र न हिम्मत हारो।
श्रम की पूँजी से अपना काज़ सँवारों।
श्रम की सीपी में जब मोती बनता है।
तब स्वाभिमान का दीप स्वयं जलता है।
मिट जाता है फिर दैन्य स्वयं की क्षण में।
वीरोचित शृंगार जवानी माँग रही है।

प्रश्न–
(1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) बलिदान कौन देता है?
(3) उपर्युक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

(5) तुम हो धरती के पुत्र न हिम्मत हारो।
श्रम की पूँजी से अपना काज सँवारों।।
श्रम की सीपी में जब मोती बनता है।
तब स्वाभिमान का दीप स्वयं जलता है।।
मिट जाता है फिर दैन्य स्वयं की क्षण में।
छा जाती है नवदीप्तिधरा के कण में।
जागो–जागो तुम श्रम से नाता जोड़ो।
पथ चुनो कर्म का अलस भाव सब छोड़ो।

प्रश्न–
(1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) श्रम का क्या महत्व है?
(3) उपर्युक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

(6) पूर्व चलने के बहोही
बाट की पहचान कब ले।
पुस्तकों में है नहीं
छापी गयी इनकी कहानी,
छाल इनका ज्ञात होता
है न औरों की जवानी,
अनगिनत राही गए इस
राह से, उनका पता क्या
पर गए कुछ लोग इस पर
छोड़ पैरों की निशानी।

प्रश्न–
(1) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए।
(2) चलने के पूर्व बटोही को क्या करना चाहिए?
(3) उपर्युक्त काव्यांश का भावार्थ लिखिए।

उत्तर– छात्र स्वयं करें। ❑

इकाई–7

पत्र लेखन

प्रश्न 1. विद्यालय के प्राचार्य को शाला शुल्क से मुक्ति हेतु आवेदन पत्र लिखिए।

उत्तर– सेवा में,
श्रीमान् प्राचार्य महोदय,
शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, देवास।
विषय– निर्धन छात्र–निधि से आर्थिक सहायता हेतु।
महोदय,

सविनय निवेदन है कि मेरे पिताजी एक स्थानीय संस्था में चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी हैं। उन्हें प्रतिमाह 1,500 रु. वेतन मिलता है। परिवार में छह सदस्य हैं। घर में हमेशा आर्थिक तंगी बनी रहती है। ऐसी स्थिति में मेरी शिक्षा पर व्यय करना उनकी सामर्थ्य से परे हैं। मुझे मेरा भविष्य धूमिल नजर आने लगा है।

अतएव आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि मुझे विद्यालयीन निर्धन-छात्र-निधि से उचित आर्थिक सहायता प्रदान करने की स्वीकृति दें, जिससे मैं अपने अध्ययन में आने वाली समस्याओं से मुक्ति पा सकूँ और पूर्ण मनोयोग से अपना अध्ययन जारी रखकर अपना भविष्य बना सकूँ। आपकी इस महती कृपा के लिए मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी छात्र,
अभिनव शर्मा
कक्षा- 10वीं (स)

दिनांक .....

प्रश्न 2. विद्यालय के प्राचार्य को स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र हेतु आवेदन पत्र लिखिए।

उत्तर-

प्रतिष्ठा में,

श्रीमान् प्राचार्य महोदय,
शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, धार

विषय- स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र प्रदान करने विषयक।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा दसवीं (अ) का एक नियमित छात्र हूँ। मेरे पिताजी का यहाँ से इन्दौर के लिए स्थानान्तरण हो गया है। इस कारण मैं अपना अध्ययन इस विद्यालय में आगे जारी रखने में असमर्थ हूँ। अतः मुझे विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र दिये जाने की कृपा करें। मैंने विद्यालय का समस्त शुल्क, पुस्तकें, खेल का सामान आदि जमा करा दिए हैं। 'विद्यालय का कुछ बकाया नहीं' का प्रमाण-पत्र संलग्न है।

आपका आज्ञाकारी छात्र,
शिखर चन्द जैन
कक्षा-10वीं (अ)
पालक के हस्ताक्षर

दिनांक .....

प्रश्न 3. विद्यालय के प्राचार्य को बुक-बैंक से पुस्तके प्राप्त करने हेतु आवेदन पत्र लिखिये।

उत्तर- प्रति,

श्रीमान् प्राचार्य महोदय,
शासकीय संदीपनी उ.मा. विद्यालय, उज्जैन

विषय- बुक-बैंक से पुस्तकें प्रदान करने के सम्बन्ध में।

महोदय,

सविनय निवेदम है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा दसवीं (अ) का नियमित छात्र हूँ। मैं पाठ्यपुस्तकों के अभाव के कारण अपना अध्ययन अच्छी तरह से नहीं कर पा रहा हूँ। मेरे पिताजी एक प्राइवेट कम्पनी में लिपिक के पद पर कार्यरत हैं। उन्हें बहुत कम वेतन मिलता है। मेरा परिवार आर्थिक तंगी में है। मैं अपनी पाठ्यपुस्तकें खरीदने में असमर्थ हूँ। अतः मुझे विद्यालयीन बुक-बैंक से मेरे कोर्स की सभी पुस्तकें दिलाने की अनुकम्पा करें, जिससे मैं अपना अध्ययन विधिवत् जारी रख सकूँ। इस महती कृपा के लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूँगा। ये सभी पुस्तकें परीक्षा सम्पन्न होते ही सुरक्षित रूप से वापस जमा करवा दूँगा।

आपका आज्ञाकारी छात्र,
अरविन्द कुमार जैन
कक्षा-10वीं (अ)

दिनांक .....

प्रश्न 4. सचिव माध्यमिक शिक्षा मण्डल भोपाल को कक्षा 10 वीं की अंकसूची की द्वितीय प्रति मँगवाने हेतु आवेदन पत्र लिखिये।

उत्तर- प्रति

श्रीमान् सचिव महोदय,
माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल (म.प्र.)

विषय- अंक सूची की द्वितीय प्रति भेजने के सम्बन्ध में।

महोदय,

निवेदन है, कि मेरी कक्षा दसवीं बोर्ड परीक्षा की अंक सूची खो गई है। मैंने यह परीक्षा सन् 2007 में दी थी। मुझे अंक सूची की द्वितीय प्रति भेजने का कष्ट करें। इसके लिए निर्धारित शुल्क 50 रु. का बैंक ड्राफ्ट नं. 37701 आपके नाम से भेज रहा हूँ। मुझसे सम्बन्धित जानकारी निम्नानुसार हैं-

(1) नाम	- मोहनलाल गुप्ता
(2) पिता का नाम	- कृष्ण मोहन गुप्ता
(3) परीक्षा - दसवीं बोर्ड	- 2011
(4) परीक्षा केन्द्र क्रमांक	- 4212
(5) परीक्षा केन्द्र	- शा.उ.मा.वि. उज्जैन
(6) अनुक्रमांक	- 251376
(7) नियमित/स्वा.	- नियमित

(8) पूरा पता – मोहनलाल गुप्ता
S/O कृष्ण मोहन गुप्ता
पो. दौलतगंज,
जिला- उज्जैन (म.प्र.)
पिन-456001

(9) संलग्न बैंक ड्राफ्ट- रु. 150

विनीत,
मोहनलाल गुप्ता

प्रश्न 5. अपने जिले के न्यायाधीश महोदय को ध्वनि विस्तारक यंत्र पर रोक लगवाने हेतु आवेदन पत्र लिखिये।

उत्तर- सेवा में,
श्रीमान् जिलाधीश महोदय,
जिलाधीश कार्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

विषय- लाउड स्पीकर के प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगाने विषयक।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मेरे क्षेत्र सुदामानगर, इन्दौर में सन्ध्या से लेकर रातभर मन्दिरों, कथा-स्थलों, पान की गुमटियों, विवाह-समारोहों आदि में लाउड स्पीकरों का भारी शोर मचा रहता है। इससे विद्यार्थियों की पढ़ाई का तो काफी नुकसान हो ही रहा है, साथ ही क्षेत्र के आम नागरिकों की नींद भी हराम हो रही है। इस सम्बन्ध में मैंने पूर्व में भी आपकी सेवा में एक प्रार्थना-पत्र डाक से भेजा था। पुनः यह पत्र श्रीमानजी की सेवा में प्रेषित कर अनुरोध करता हूँ कि हम विद्यार्थियों तथा आम नागरिकों के हित में परीक्षा-अवधि में लाउड-स्पीकरों के प्रयोग को प्रतिबंधित करने का आदेश प्रसारित कर इस ध्वनि प्रदूषण से मुक्ति दिलाने की अनुकम्पा करेंगे। आशा है, श्रीमान का ध्यान इस गम्भीर समस्या की ओर अवश्य आकर्षित होगा और हम शान्ति की नींद ले सकेंगे। कष्ट के लिए क्षमा याचना के साथ।

प्रार्थी-
रामावतार शर्मा
1017/B, सुदामानगर, इन्दौर

प्रश्न 6. बड़े भाई के विवाह में आमंत्रित करने हेतु मित्र को आमंत्रण पत्र लिखिये।

उत्तर- 88 कालानी नगर,
इन्दौर
दिनांक .....

प्रिय मित्र गोपाल,
मधुर स्मृतियाँ

शुभ समाचार यह है कि मेरे बड़े भाई अनमोल का विवाहोत्सव 21/12/2021 को होना तय हुआ है। विवाह आगरा से हो रहा है। इस अवसर पर तुम्हें आना है। माताजी, पिताजी ने तुम्हारे आने के लिए जोर देकर कहा है। आने पर आगरा शहर भी घूम लेना। तुम 19 दिसम्बर को आ जाना, ताकि थकान आदि न हो।

आदरणीय माताजी एवं पिताजी को चरण-स्पर्श तथा स्नेहा को हार्दिक स्नेह स्वीकार हो।

तुम्हारा मित्र
आदित्य

प्रश्न 7. परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर मित्र को बधाई पत्र लिखिए।

उत्तर- 17, कालॉनी नगर, इंदौर (म.प्र.)
दिनांक .....

प्रिय महेन्द्र,
नमस्ते !

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है कि तुम इस वर्ष कक्षा में प्रथम श्रेणी में सर्वोच्च अंकों से उत्तीर्ण हुए हो। तुम्हारी इस सफलता के लिए मेरी अनेक शुभकामनाएँ। ईश्वर करे तुम आगे भी इसी प्रकार श्रेष्ठ उपलब्धियाँ अर्जित करो और अपने माता-पिता तथा गुरुजनों का नाम रोशन करो। तुम्हारा भावी कार्यक्रम क्या है ? मुझे इस सम्बन्ध में अवश्य अवगत कराना।

माताजी व पिताजी को मेरा सादर प्रणाम कहना। पत्र देना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,
सुरेश जैन

प्रश्न 8. वार्षिक-परीक्षा की तैयारी के संबंध में पिताजी को पत्र लिखिए।

उत्तर- 65, महात्मा गाँधी मार्ग, इन्दौर (म.प्र.)
दिनांक .....

पूज्य पिताजी

सादर चरणस्पर्श।

आपका कृपा-पत्र प्राप्त हुआ। मैं इन दिनों अपनी वार्षिक परीक्षा की तैयारी में व्यस्त हूँ। मैं प्रतिदिन चार से छह घण्टे

अध्ययन करता हूँ। अभी तक मैंने लगभग सभी विषयों की अच्छी तैयारी कर ली है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इस वर्ष निश्चित ही प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो जाऊँगा। संस्कृत और गणित विषयों में मुझे विशेष योग्यता प्राप्त होने की पूरी आशा है। मेरे पास अब रुपये शेष नहीं रहे हैं। आवश्यक खर्च के लिए 1000 रुपये मनीऑर्डर से अवश्य भेज दीजिए, ताकि परीक्षा के दिनों में किसी प्रकार की चिंता न रहे।

स्नेहमयी माताजी को चरणस्पर्श। राजू को हार्दिक स्नेह।

आपका पुत्र,
संजीव

प्रश्न 9. गर्मियों की छुट्टी में ऐतिहासिक स्थल के भ्रमण पर जाने हेतु 500 रूपये मँगवाने हेतु पिताजी को पत्र लिखिए।

उत्तर–

प्रति,

पूज्य पिताजी, सादर नमन्।

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ और ापकी कुशलता की आशा करता हूँ। मेरे विद्यालय ने गर्मियों की छुट्टियों में ऐतिहासिक स्थल का भ्रमण हेतु मुझे कहा है। इस भ्रमण के लिए हमें प्रत्येक विद्यार्थी से 500 रुपये की आवश्यकता है।

आपसे विनम्र निवेदन है कि कृपया 500 रुपये मुझे भेजने का कष्ट करें। स्नेहमयी माताजी को चरण स्पर्श।

धन्यवाद,

आपका आज्ञाकारी पुत्र
सचिन

❑

इकाई–8

प्रश्न 1. निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखिए–

1. पर्यावरण का महत्व

1. प्रस्तावना– पेड़-पौधे प्रकृति की सुकुमार, सुन्दर और सुखदायक सन्तानें हैं। इन के माध्यम से प्रकृति अपने अन्य पुत्रों, मनुष्यों तथा अन्य सभी तरह के जीवों पर अपनी ममता के भण्डार न्यौछावर कर अनन्त उपकार किया करती है। स्वयं पेड़-पौधे भी अपनी प्रकृति माँ की तरह ही सभी जीव-जन्तुओं पर उपकार तो किया ही करते हैं। पेड़-पौधे और वनस्पतियाँ हमें फल-फूल, औषधियाँ, छाया एवं अनन्त विश्राम तो प्रदान किया ही करते हैं, वे उस प्राण-वायु (ऑक्सीजन) के अक्षय भण्डार भी हैं, जिसके अभाव में किसी प्राण का एक पल के लिए भी जीवित रह पाना भी सम्भव नहीं है।

2. पर्यावरण सुरक्षा– पेड़-पौधे हमारी ईंधन की समस्या का भी समाधान करते हैं। उनके अपने आप झड़ कर इधर-उधर बिखर जाने वाले पत्ते, घास-फूँस, हरियाली और अपनी छाया में पनपने वाली नई वनस्पतियों को मुफ्त की खाद भी प्रदान किया करते हैं। उनसे हमें इमारती और फर्नीचर बनाने के लिए कई प्रकार की लकड़ियाँ तो प्राप्त होती ही हैं, कागज आदि बनाने के लिए कच्ची सामग्री भी उपलब्ध होती है। इसी प्रकार पेड़-पौधे हमारे पर्यावरण के भी बहुत बड़े संरक्षक हैं।

3. पर्यावरण प्रदूषण– पेड़-पौधे वर्षा का कारण बन कर तो पर्यावरण की रक्षा करते ही हैं, इनमें कार्बन-डाइ-ऑक्साइड जैसी विषैली, स्वास्थ्य-विरोधी और घातक कही जाने वाली प्राकृतिक गैसों का शोषण करने की भी बहुत अधिक शक्ति रहा करती है। पेड़-पौधे वर्षा के कारण पहाड़ी चट्टानों के कारण, नदियों की तहों और माटी भरने से तलों की भी रक्षा करते हैं। आज नदियों का पानी जो उथला या कम गहरा होकर गन्दा तथा प्रदूषित होता जा रहा है, उसका एक बहुत बड़ा कारण उनके तटों, निकास-स्थलों और पहाड़ों पर से पेड़-पौधों की अन्धा-धुन्ध कटाई है। इस कारण जल स्रोत तो प्रदूषित हो ही रहे हैं, पर्यावरण भी प्रदूषित होकर जान-लेवा बनता जा रहा है।

4. बढ़ता खतरा– आजकल नगरों, महानगरों, यहाँ तक की कस्बों और देहातों तक में छोटे-बड़े उद्योग-धन्धों की बाढ़-सी आ रही है। उनसे धुआँ, तरह-तरह की विषैली गैसें आदि निकल कर पर्यावरण में फैल जाते हैं। पेड़-पौधे उन विषैली गैसों को तो वायु-मण्डल और वातावरण में घुलने से रोक कर पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया ही करते हैं, राख और रेत आदि के कणों को भी ऊपर जाने से रोकते हैं। इन समस्त बातों से भली-भाँति परिचित रहते हुए भी आज का स्वार्थी मानव चन्द रुपये प्राप्त करने के लिए पेड़-पौधों की अन्धा-धुन्ध कटाई करता जा रहा है। उसके स्थान पर नए पेड़-पौधे लगाने-उगाने की तरफ कतई ध्यान नहीं दे रहा है। फलस्वरूप धरती का सामान्य पर्यावरण तो प्रदूषित हो ही गया है, उस ओजोन परत के प्रदूषित होकर फट जाने का खतरा भी बढ़ता जा रहा है, जिसका धरती की समग्र रक्षा के लिए बना रहना परम आवश्यक है।

5. हमारी लापरवाही– धरती पर विनाश का यह ताण्डव कभी उपस्थित न होने पाए, इसी कारण प्राचीन भारत के वनों में आश्रम और तपोवनों और सुरक्षित अरण्यों की संस्कृति को बढ़ावा मिला। तब पेड़-पौधे उगाना भी एक प्रकार का सांस्कृतिक कार्य माना जाता था। सन्तान पालन की तरह उनका पोषण और रक्षा की जाती थी। इसके विपरीत, आज हम, काँक्रीट के जंगल उगाने, यानि बस्तियाँ बसाने, उद्योग-धन्धे लगाने के लिए पेड़-पौधों को, आरक्षित वनों को अन्धा-धुन्ध काटते तो जाते हैं, पर उन्हें उगाने, नए पेड़-पौधे लगा कर उनकी रक्षा करने की तरफ कतई नई ध्यान नहीं दे रहे हैं।

6. उपसंहार– यदि हम चाहते हैं कि हमारी यह धरती, इस पर निवास करने वाला प्राणी जगत् सुरक्षित रहे, तो हमें पेड़-पौधों की रक्षा और उनके नव-रोपण आदि की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। यदि हम चाहते हैं कि धरती हरी-भरी रहे, नदियाँ अमृत जल-धारा बहाती रहें और मानवता की सुरक्षा होती रहे, तो हमें पेड़-पौधे उगाने, संवर्द्धित करने और संरक्षित करने का एक व्यापक अभियान चलाना चाहिए।

2. कम्प्यूटर की हमारे जीवन में उपयोगिता

1. प्रस्तावना– मानव की व्यस्तता एवं विज्ञान की प्रगति के कारण आज विश्व में ज्ञान का विस्फोट हुआ है। ज्ञान, विज्ञान, रक्षा, विभिन्न सूचनाओं को सुरक्षित रखने के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग अनिवार्य हो गया है। कार्य में शीघ्रता, स्मृति में लाखों सूचनाएँ रखना, बटन दबाते ही वांछित जानकारी प्रदान करना कम्प्यूटर की महान् विशेषताएँ हैं।

2. दैनिक जीवन में कम्प्यूटर– आज पलक झपकते ही कम्प्यूटर जोड़, भाग, गुणा, वर्गमूल कर विद्यार्थियों का श्रमहरण करता है। शस्त्रों की गति एवं निशाने पर नियन्त्रण भी एक अहम् प्रश्न था, जो कम्प्यूटर ने हल कर दिया है। अब सैनिक छिपकर भी बमों का विस्फोट रिमोट कंट्रोल से कर सकता है।

3. कम्प्यूटर के भाग– (1) स्मरण यंत्र, (2) नियंत्रण कक्ष, (3) अंकगणित का अंग, (4) इनपुट, (5) आउटपुट।

स्मरण यंत्र में सूचनाएँ भर दी जाती हैं, जो बटन दबाते ही प्राप्त हो जाती हैं। नियंत्रण कक्ष का कार्य कम्प्यूटर कार्य पर नियंत्रण करना है। (3) गणित विभाग में विभिन्न गणनाओं का जटिल संयंत्र होता है। इनपुट विभाग सामग्री ग्रहण करता है। आउटपुट विभाग सामग्री को पटल पर रखता है।

4. कम्प्यूटर की विशेषताएँ– अविराम गणना, शीघ्रगणना, शुद्धगणना ये कम्प्यूटर की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इसके कारण औद्योगिक क्षेत्र में प्रगति हुई है। डिजाइन के क्षेत्र में इसने क्रांति ला दी है। चिकित्साविज्ञान के क्षेत्र में शोध एवं उधार क्षमता में अभूत-पूर्व वृद्धि हुई है। कम्प्यूटर मानव मस्तिष्क की अभूतपूर्व देन है।

5. कम्प्यूटर शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व– जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कम्प्यूटर का महत्व बढ़ जाने के कारण विद्यार्थियों के लिए अध्ययन एवं रोजगार का नया क्षेत्र खुल गया है। आजकल प्रत्येक कार्यालय, बैंक आदि संस्थान भी अपनी सूचना को त्रुटिमुक्त, स्पष्ट और अद्यतन रखना चाहते हैं। अतः मेधावी छात्रों को इसका अध्ययन कर अपने स्वर्णिम भविष्य की खोज में एक कदम आगे बढ़ाना चाहिए।

3. विज्ञान के चमत्कार

1. प्रस्तावना– *आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।* यह कथन पूर्णतः सत्य है। आवश्यकता से आविष्कार का जन्म होता है। आदिकाल से लेकर आज तक मनुष्यों ने अनेक आविष्कार किए, जिनसे संसार का नक्शा ही बदल गया। विज्ञान के कारण हम नित नई वस्तुओं, सेवाओं का उपभोग कर रहे हैं। हमारा जीवन सुविधाजनक, आरामदायक बन गया है। विज्ञान से शायद ही कोई अछूता हो। विज्ञान हमारे लिए वरदान सिद्ध हुआ है।

2. मनोरंजन के क्षेत्र में– मनोरंजन की आधुनिक सुविधाएँ विज्ञान की देन हैं। सिनेमा, टी.वी., रेडियो, वीडियोगेम आदि द्वारा हम अपना मनोरंजन कर सकते हैं।

3. चिकित्सा के क्षेत्र में– चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान की देन सराहनीय हैं। असाध्य व खतरनाक रोगों पर नियंत्रण हो गया है। हृदय प्रत्यारोपण, किडनी का प्रत्यारोपण आदि संभव हो गया है। टेस्टट्यूब बेबी से निःसंतान दंपतियों के आँचल में भी खुशियाँ आ गई हैं। विज्ञान ने अंधे को आँखें, बहरे को कान, गूँगे को वाणी प्रदान की है।

4. कृषि के क्षेत्र में– हरित क्रांति विज्ञान की देन है। विज्ञान ने कृषि के क्षेत्र में कीटनाशक दवाइयाँ, उर्वरक, कृषि योग्य यंत्र, नलकूप आदि प्रदान किए हैं, जिनसे खाद्यान्न उत्पादन कई गुना बढ़ गया है।

5. यातायात के क्षेत्र में– संचार साधनों व यातायात साधनों के कारण दुनिया बहुत छोटी-सी बन गई है। आज कम समय में

एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचा जा सकता है।
संचार साधनों, जैसे- टी.वी., इंटरनेट, मोबाइल, बेतार आदि ने दूरियों को अत्यन्त कम कर दिया है।

6. अंतरिक्ष में विज्ञान- वैज्ञानिकों ने आर्यभट्ट, भास्कर, रोहिणी, इनसेट क्रम के उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित कर अपनी श्रेष्ठता प्रतिपादित कर दी है।

7. दैनिक जीवन में उपयोग- व्यक्ति सुबह से लेकर रात्रि में सोने तक विज्ञान द्वारा दी गई वस्तुओं का उपभोग करता है। गैस का चूल्हा, टी.वी., फ्रिज, वाशिंग मशीन आदि विज्ञान की ही देन है।

8. विज्ञान के अभिशाप- विज्ञान वरदान के साथ अभिशाप भी है। अणुबम, परमाणु बम, अस्त्र-शस्त्र, बारूद आदि विध्वंसकारी तत्वों के कारण हम आज मौत के कगार पर खड़े हैं।
विज्ञान ने हमें मनोरंजन के अनेक साधन दिए हैं जैसे-फिल्म, टी.वी. आदि, किन्तु यदि हम इनसे हिंसा, सेक्स आदि सीखते हैं, इनका अंधानुसरण करते हैं तो वास्तव में इससे नैतिकता, मानवता खतरे में पड़ जाएगी। इसलिए विज्ञान को अभिशाप कहा गया है।

9. उपसंहार- वास्तव में, विज्ञान वरदान भी है और अभिशाप भी है। यदि हम इनका दुरुपयोग करते हैं, तो निश्चित ही विज्ञान अभिशाप है। यदि हम उन साधनों का सदुपयोग करते हैं, तो विज्ञान वरदान है। अतः सब कुछ हमारे विवेक पर निर्भर है कि हम विज्ञान को वरदान सिद्ध करें या अभिशाप।

4. हमारे राष्ट्रीय पर्व

उत्तर- 15 अगस्त, 1947 का दिन हम सभी भारतवासियों के लिए एक अविस्मरणीय दिगन रहेगा। इस दिन को इतिहासकभी नहीं भुला नहीं सकता। सदियों की गुलामी के बाद आज ही के दिन हम भारतवासी आजाद हुए थे। सब शांति एवं सुख का अनुभव किया था। इस दिन का प्रभात कुछ अद्भुद यादें संजोये हुए आया था। लोग जब सोये हुए थे परतंत्र थे, परन्तु जब प्राप्तः उनकी आँख खुली, तो वे पूर्ण स्वतंत्र नागरिक थे। यह हमारे लिए एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय त्यौहार है।

अनेक बलिदान- भारत सदियों तक अंग्रेजों का गुलाम रहा। आजादी प्राप्ति के लिए अनेक लोगों को अपनी कुर्बानी देनी पड़ी। अनेक वीरों की गाथाएँ इस आजादी के साथ जुड़ी हुई हैं। देश की आजादी के लिए लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने हमें नाहार दिया 'स्वाधानता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर ही रहेंगे।' इस हेतु उन्होंने महाराष्ट्र में गणेशोत्सव एवं शिवाजी उत्सव का आयोजन किया, जिसकी आड़ में लोगों में स्वतंत्रता की चंगिारी फूँकी। लाला लाजपत राय ने लाठियों के वार सहकर भी अपना आन्दोलन बन्द न किया उनका कहना था कि 'मेरी पीठ पर पड़ा एक-एक लाठी का प्रहार अंग्रेजों के कफन में कील का काम करेगा।' वास्तव में हुआ भी ऐसा ही। नेताजू सुभाषचन्द्र बोस ने क्रांतिकारी नारा दिया 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।' उनका कहना था कि बिना आत्म-बलिदान के आजादी प्राप्त करना असम्भव है।

स्वतंत्रता आन्दोलन में महात्मा गाँधी का योगदान- महात्मा गाँधी का राष्ट्रीय आन्दोलन में एक विशेष महत्व था। ये अहिंसा एवं सत्याग्रह पर विस्वास करते रहे। ये सन् 1928 से भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में कूदे और अन्त तक अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आन्दोलन करते रहे। इन्होंने अहिंसा को अपना सबसे बड़ा अस्त्र बनाया। इन्होंने देश के लोगों को अहिंसा एवं त्याग के सम्मुख अंग्रेजों को नत-मस्तक होना पड़ा। फलस्वरूप 15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हुआ। नेहरू परिवार का योगदान भी आजादी के लिए अविस्मरणीय रहेगा। पं. मोतीलाल नेहरू, पं. जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी आदि ने आजाती पाने के लिए अनेकों प्रयत्न किये। इन्हें कई बार जेल यात्राएँ भी करना पड़ीं एवं न जाने कितनी यातनाओं का सामना करना पड़ा। पं. जवाहरलाल नेहरू ने सन् 1929 में लाहौर में रावी नदी के तट पर भारत को पूर्ण स्वतंत्र कराने की पहली ऐतिहासिक घोषणा की। इन्होंने निरन्तर अठारह वर्ष तक अंग्रेजों के साथ संघर्ष किया। अन्ततः अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना पड़ा और हम आजात हुए।

विविध आयोजन- यह उत्सव भारत के प्रत्येक ग्राम, नगर एवं शहर में बड़े धूमधाम के साथ मनाया जाता है। शालाओं में आज के दिन विविध कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। राष्ट्रीय ध्वज फहराकर राष्ट्रगीत गाया जाता है। विद्यार्थी एवं अध्यापक अपने विचार व्यक्त करते हैं। बच्चों को प्रसाद वितरण किया जाता है एवं सारा वातावरण उल्लासमय रहता है। विदेशों में रहने वाले भारतीय भी अपना राष्ट्रीय पर्व सोल्लास मनाते हैं। दिल्ली के लालकिले एवं अन्य प्रमुख स्थलों पर तिरंगा झंडा लहराया जाता है एवं विभिन्न शालाओं में प्रभास फेरियों का आयोजन किया जाता है।

उपसंहार- 15 अगस्त के दिन हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि देश की अखण्डता, एकता और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए हर भारतवासी समान रूप से समर्थ है। यह त्यौहार हमें देश-भक्ति की प्रेरणा देता है तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सफलता की प्रेरणा करता है। यह हमारे लिए एक महान् राष्ट्रीय पर्व है।

5. स्त्री शिक्षा का महत्व

1. प्रस्तावना- भारतीय संस्कृति में नारी को सदैव आदर की दृष्टि से देखा गया है। कई दृष्टियों से उसका पुरुषों से भी अधिक महत्व समझा गया है। नारी में पृथ्वी की-सी क्षमता, समुद्र की-सी गम्भीरता, चन्द्रमा की-सी शीतलता, सूर्य का-सा तेज, पर्वतों की-सी मानसिक उच्चता आदि गुण हमें एक साथ देखने को मिलते हैं। वह दया, क्षमा, करूणा, ममता, प्रेम, समर्पण, तप और त्याग की पावन प्रतिमा है। समय पड़ने पर वह रण-चण्डी का रूप भी धारण कर लेती है। वह मनुष्य के जीवन की जन्मदात्री है। वह माता के समान हमारी रक्षा करती है, मित्र और गुरु के समान हमें शुभ कार्यों में लगाती है, मंत्री के समान परामर्श देती है।

2. प्राचीन काल में भारतीय नारी- प्राचीन काल में भारत में नारियों को उच्च स्थान प्राप्त था। वह घर में और बाहर सम्मान की अधिकारिणी थी। किसी भी क्षेत्र में वह नर से पीछे नहीं थी। पुरुषों के समान ही उन्हें सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक कार्यों में भाग लेने का समान अधिकार था। 'मनुस्मृति' में लिखा है- "जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। जहाँ उनकी पूजा या प्रतिष्ठा नहीं होती, वहाँ सब क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं।" प्राचीन काल में कोई भी धार्मिक कार्य पत्नी के सहयोग के बिना पूर्ण नहीं माना जाता था। रणक्षेत्र में भी वे पति को सहयोग देती थीं। देवासुर संग्राम में कैकेयी के अद्वितीय रण-कौशल का परिचय मिलता है। उन्हें जीवनसाथी चुनने की स्वतंत्रता थी। पुरुष द्वारा उपार्जित द्रव्य की वह स्वामिनी थी।

3. मध्यकाल में भारतीय नारी- मध्यकाल में विदेशी आक्रमणों का जोर रहा। भारतीय नारियों की स्वतन्त्रता छिनती चली गई। मुसलमानों के आक्रमण के समय लूटपाट और उनके साथ बलात्कार की घटनाएँ होने लगीं। इसीलिए उन्हें घर की चहार दीवारी और पर्दे में बन्द रहने के लिए विवश होना पड़ा। उनकी शिक्षा और प्रगति अवरूद्ध हो गई। अब वह भोग और विलास की सामग्री बनकर रह गई। बाल-विवाह होने लगे। विधवा-विवाह प्रतिबन्धित हो गये। वह पूर्णतः पुरुष पर निर्भर हो गई। उसका व्यक्तित्व धूमिल हो गया।

4. स्वतंत्र भारत में नारी का स्थान- परिस्थितियों में पुनः परिवर्तन आया। ईश्वरचंद विद्यासागर, राजा राममोहनराय, महर्षि दयानन्द सरस्वती आदि समाज सुधारकों ने स्त्रियों को समाज में पुनः प्रतिष्ठित करने का सफल प्रयत्न किया। स्त्री-शिक्षा का प्रचार और प्रसार हुआ। बाल-विवाह पर प्रतिबन्ध लगा। विधवा-विवाह को समर्थन मिला। सती-प्रथा समाप्त हुई। इस प्रकार समाज में नारी की पुनः प्रतिष्ठा हुई। स्वतंत्रता प्राप्त होते ही भारतीय नारी को पुरुषों के समान ही अधिकार प्राप्त हुए। अब वह जीवन के हर क्षेत्र में पुरुष के साथ और कई क्षेत्रों में आगे भी है। आज नारियाँ, मंत्री, नेता, डॉक्टर, इंजीनियर, आई.ए. एस. ऑफिसर्स, सेना और पुलिस में उच्च पदों पर कार्यरत रहकर राष्ट्र-सेवा का दायित्व निभा रही हैं। उनकी प्रतिभा एवं कार्यकुशलता का लोहा सभी मानने लगे हैं।

5. आधुनिक भारत में नारियों के कर्त्तव्य- स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय नारियों के दायित्व बढ़ गए हैं। उन्हें पुरुष की अर्धांगिनी नहीं, अपितु सहधर्मिणी समझना चाहिए, अनुगामिनी नहीं अपितु सहगामिनी समझना चाहिए। उन्हें सुसंस्कारित होकर अपनी सन्तानों को सुसंस्कारित बनाना चाहिए। अबला नहीं, सबला बनना चाहिए। सामाजिक-कुरीतियों का बहिष्कार करना चाहिए। दहेज-प्रथा के उन्मूलन में नारी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। वह चाहे तो अपने मताधिकार का प्रयोग कर सरकार बदल सकती है। उन्हें अपनी प्रतिभा और क्षमता को पहचान कर राष्ट्रोत्थान में सहभागी बनना चाहिए। जिस राष्ट्र की नारी-शक्ति जाग उठती है, वह राष्ट्र कभी भी पतित या पिछड़ा नहीं रह सकता। श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने देश का सर्वोच्च पद राष्ट्रपति पद प्राप्त करके यह सिद्ध कर दिया है कि स्वतंत्र भारत में महिलाएँ पीछे नहीं हैं।

6. उपसंहार- भारतीय नारी को क्षमा, सरलता, तप, त्याग, समर्पण, करूणा का अवतार तथा वीरस्वरूपा माना गया है। परन्तु आज की नारियाँ पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण कर भोग एवं विलासिता के प्रति आकृष्ट दिखाई देती हैं। वे अपनी कमाई का बड़ा भाग शृंगार प्रसाधनों पर लुटाने लगी हैं। यह अपेक्षित नहीं है। उन्हें परी नहीं, देवी एवं लक्ष्मी बनना है। तभी भारत राष्ट्र का उत्थान सम्भव है।

6. इन्टरनेट से लाभ व हानि

1. प्रस्तावना– आज के समय में इन्टरनेट आधुनिक समाज का नर्वस सिस्टम (तंत्रिका तंत्र) बन चुका है व इससे कोई भी अछूता नहीं रहा है। यहाँ तक कि आज छात्र नेट का उपयोग कर वांछित जानकारी प्राप्त कर अपना ज्ञान-वर्धन कर रहे हैं।

2. इण्टरनेट का इतिहास– इन्टरनेट व आधुनिक कम्प्यूटर नेटवर्किंग टेक्नोलॉजी की शुरूआत 1970 के दशक में हुई थी। सन् 1969 में अमेरिका के रक्षा विभाग की संस्था- डिफेन्स एडवांस्ड रिसर्च प्रोजेक्ट ऐजेन्सी ने सबसे पहला वाइड एरिया नेटवर्क बनाया, जिसका नाम था ARPA NET। शुरूआत में इस ARPA NET के द्वारा अमेरिका के रक्षा विभाग के विभिन्न ऑफिसों को जोड़ा गया। बाद में यूनिवर्सिटियों व NATO देशों को जोड़ा गया और अन्त में यह इन्टरनेट बन गया।

3. इण्टरनेट की आवश्यकता– ई-कामर्स इन्टरनेट पर वस्तुओं तथा सेवाओं का क्रय और विक्रय होता है, जिसमें समय व दूरी का कोई प्रतिबन्ध नहीं होता है। ई-कॉमर्स के अन्तर्गत रिटेल शापिंग, बैकिंग, स्टॉक्स और वान्ड्स ट्रेडिंग, ऑक्शन (बोली लगाना), रिअल एस्टेट ट्रांजेक्शन्स, एयर लाइन बुकिंग, मूवी रेंटल और अन्य वे सभी व्यापार आ सकते हैं, जिन्हें हम सोच सकते हैं।

ई-मेल एक ऐसा सिस्टम है, जिसमें इन्टरनेट या अन्य नेटवर्क के द्वारा एक कम्प्यूटर/यूजर से दूसरे कम्प्यूटर/यूजर को मैसेजेस, लेटर्स, डॉक्यूमेंट्स और अन्य सूचनाएँ भेजी जाती हैं। ई-मेल सामान्य लेटर की तरह ही होता है, परन्तु इसमें यूजर का स्वयं का या शेयर किया गया ई-मेल एकाउण्ट होना चाहिए। इसके साथ यूजर को ई-मेल सॉफ्टवेयर या ई-मेल क्षमता वाले ब्राउजर की आवश्यकता होती है।

आज इन्टरनेट के द्वारा ही समस्त बैंकिंग व्यवस्था जुड़ी है, जिसका लाभ किसी भी अन्य देश में आवश्यकता होने पर A.T.M. की सुविधा द्वारा अपने अकाउण्ट में से धन निकाल कर उपयोग कर सकते हैं।

4. लाभ– इण्टरनेट से समय की बहुत बचत होती है। कारण, इसमें कुछ मिनटों में ही एक जगह किया गया कार्य अन्य स्थान पर स्थानान्तरित हो जाता है।

5. उपसंहार– इण्टरनेट की बढ़ती लोकप्रियता इसके बहुउपयोगी कार्यों की सूचना देती है। शिक्षा के क्षेत्र में, घर के कार्यों में, कार्यालयों में, कारखानों में, मनोरंजन के क्षेत्र में, संचार के क्षेत्र में आदि कई क्षेत्रों में इण्टरनेट का प्रयोग हो रहा है। अतः इण्टरनेट को वर्तमान युग के विकास की धुरी कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा।

7. विद्यार्थी जीवन

1. प्रस्तावना– सम्पूर्ण सृष्टि अनुशासन का महाकाव्य है। काव्य के सारे क्रियाकलाप एक निश्चित क्रम से चलते हैं। दिन-रात निश्चित क्रम से होते हैं, ऋतु परिवर्तन एक सुनिश्चित क्रम से होता है। विश्व की यह व्यवस्था मनुष्यों को शिक्षा देती है कि अनुशासन का पालन करो, तभी तुम सुख व शांति से रह सकते हो।

अनुशासन का अर्थ है– एक निश्चित व्यवस्था से चलना।

2. विद्यार्थी और अनुशासन– विद्यार्थी जीवन, जीवन की आधारशिला है। इस काल में विद्यार्थी जो कुछ सीखता है, ग्रहण करता, है इससे उसका भावी जीवन प्रभावित होता है। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की उपयोगिता निर्विवाद है। अनुशासन के अभाव में विद्यार्थी दिशा-विहीन हो जाता है। संसार के आकर्षण, मोहजाल में फँस जाता है। ऐसी स्थिति में अनुशासन ही उसकी रक्षा कर सकता है। जो छात्र अनुशासित जीवन जीते हैं, वे सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

3. विद्यार्थियों में बढ़ती अनुशासनहीनता– आज विद्यालयों में अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है। शिक्षक स्वयं अनुशासित नहीं रहते हैं। अपने कार्य को पूर्ण निष्ठा से नहीं करते हैं। इसीलिए विद्यार्थी भी उनका अनुसरण करते हैं। इसके अलावा दूरदर्शन, फिल्में, मोबाइल आदि भी इसके लिए जिम्मेदार हैं। अनुशासन-हीनता से बचने का सबसे प्रमुख उपाय यह है कि छात्र शिक्षा में गहरी रुचि लें व शिक्षा प्राप्ति का सर्वोत्तम लक्ष्य रखें।

4. अनुशासन से लाभ– अनुशासन से अनेक लाभ हैं। इससे व्यक्ति का मानसिक, बौद्धिक व शारीरिक, चारित्रिक विकास होता है। उसमें श्रेष्ठ नागरिक गुणों का प्रादुर्भाव होता है। सामाजिकता की भावना प्रबल होती है।

5. उपसंहार– अनुशासन जीवन में आगे बढ़ने के लिए परम आवश्यक है। अनुशासन के बिना हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं। विद्यालय और अभिभावकों का परम कर्त्तव्य है कि विद्यार्थियों को अनुशासन में रखना सिखाएँ। उनमें स्वअनुशासन के बीज बोएँ। जहाँ अनुशासन नहीं, वहाँ सफलता नहीं, समृद्धि नहीं।

प्रश्न 2 (अ) निम्नलिखित विषयों पर अनुच्छेद लिखिए–
(3 अंकीय)

(1) आपके विद्यालय में मनाए जाने वाले सांस्कृतिक समारोह पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर– हमारे विद्यालय में आयोजित सांस्कृतिक समारोह में विद्यालय के कुलपति को प्रेमपूर्वक निमंत्रण दिया गया। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित होने की स्वीकृति दी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलपति को ही आमंत्रित किया। कार्यक्रम दिनांक 21 अप्रैल 2021 सुनिश्चित की गई इसके बाद मुख्य हॉल में मंच को अच्छी तरह से सजा दिया गया। विद्यालय के मुख्य द्वार पर रंग-बिरंगे झंडे लगाए गए। मुख्य अतिथि के स्वागत के लिए बैंड बाजे की व्यवस्था की गई।

सभी छात्र-छात्राओं ने सरस्वती वंदना तथा स्वागत गान किया।

कार्यक्रम में वादविवाद का विषय 'भारत तथा पाकिस्तान के बीच संबंध' पर विचार किया गया, उसके बाद दहेज प्रथा पर नाटक प्रस्तुत किया गया। उसके बाद देश-प्रेम पर बच्चों द्वारा कविताओं का पाठ हुआ।

अंत में मुख्य अतिथि के भाषण के पश्चात् कार्यक्रम अपने अंतिम पड़ाव पर पहुँच चुका था। अतः अन्त में राष्ट्रीय गान-जन-गण-मन द्वारा कार्यक्रम को समाप्त किया गया।

(2) लेखिका मन्नू भंडारी के साहसिक व्यक्तित्व पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर– पिता का प्रभाव– लेखिका के व्यक्तित्व पर उसके पिता का अनेक रूपों में प्रभाव पड़ा। लेखिका के पिता गोरा रंग पसंद करते थे। लेखिका काली थी, जबकि उसकी बड़ी बहन सुशीला गोरी। इस कारण वे सुशीला को पसंद करते थे और प्रशंसा भी करते थे। उनके इस कार्य से लेखिका के भीतर गहरे हीन-भाव की संधि पैदा हो गई।

लेखिका के व्यक्तित्व पर उसके पिता का प्रभाव कहीं कुंठा, कहीं प्रतिक्रिया तो कहीं प्रतिच्छाया के रूप में पड़ा।

माँ का प्रभाव– लेखिका की माँ में अत्यधिक धैर्य और सहनशक्ति थी। वह पिता और सारे बच्चों की फरमाइशों व जिद को अपना कर्तव्य समझकर पूरा करती थीं। मजबूरी में लिपटा उनका त्याग लेखिका का आदर्श न बन सका और उसके व्यक्तित्व में पुरुषों की ज्यादती के प्रति विद्रोह का भाव आ गया।

शीला अग्रवाल का प्रभाव– लेखिका के व्यक्तित्व पर शीला अग्रवाल की साहित्यिक रुचि और उनकी संघर्षशीलता का व्यापक प्रभाव पड़ा। इस कारण लेखिका के साहित्य का दायरा बढ़ गया। वह देश व समाज की स्थिति के प्रति अधिक जागरूक हो गई तथा स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाने लगी। इस प्रकार उसके व्यक्तित्व में संघर्षशीलता और जुझारुपन आ गया।

(3) द्विवेदी जी की भाषा-शैली पर अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर– आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की भाषा शैली– आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने अपने निबंध में विषयानुरूप गंभीर, सरस एवं प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग किया है। विचारपूर्ण निबंध होने के कारण इसमें अनेक स्थानों पर समासयुक्त तत्सम शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। निबंध में जगह-जगह पर प्रश्नवाचक वाक्यों के आ जाने से भाषा में विशेष आकर्षण उत्पन्न हो गया है। विषय की गंभीरता के अनुरूप संस्कृत के उद्धरणों का भी प्रयोग किया गया है। निबंध में खड़ी बोली के विकासशील रूप को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस निबंध में द्विवेदी जी ने विचारात्मक शैली का प्रयोग किया है। परंतु इसमें बौद्धिक शुष्कता नहीं, अपितु सरसता का भाव सर्वत्र देखने को मिलता है। द्विवेदी जी के चुटीले व्यंग्य के कारण निबंध की छटा और भी आकर्षक हो गई है।

(4) अपने मनपसंद कहानीकार के बारे में एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर– यशपाल जी– 'लखनवी अंदाज' कहानी में लेखक ने एक ऐसे नवाब की रईसी का वर्णन किया है, जो पहले तो बड़े करीने से नमक मिर्च लगाकर खीरे की फाँकों को तैयार करते हैं, परंतु बाद में उन्हें खाने की बजाय सिर्फ सूँघकर ही तृप्ति का अनुभव कर ट्रेन की खिड़की से बाहर फेंक देते हैं।

उनके इस कार्यकलाप का वर्णन कर लेखक ने सामंती वर्ग की बनावटी जीवन-शैली पर कटाक्ष किया है। लेखक ने यह दर्शाया है कि इस तरह का सामंती वर्ग जीवन के यथार्थ से दूर केवल दिखावे के लिए अपने सनकी व्यवहार का प्रदर्शन करता है।

(ब) निम्नलिखित विषयों पर संवाद लिखिए-

(1) दो मित्रों के बीच परीक्षा की तैयारी पर संवाद लिखिए।

उत्तर- छात्र स्वयं करें।

(2) श्रीराम के द्वारा धनुष के तोड़े जाने पर परशुराम क्रोधित होते हैं। लक्ष्मण भी उनसे बातचीत करते हैं, परशुराम व लक्ष्मण के बीच हुई (बातचीत) संवाद को लिखिए।

उत्तर- लक्ष्मण- 'बचपन में हमने तो बहुत-सी धनुहियाँ तोड़ डाली थी' परंतु आपने इतना क्रोध तो कभी नहीं किया। इस धनुष से आपका इतना लगाव क्यों है?

परशुराम (क्रोधपूर्वक)- तुम काल के वश में हो चुके हो इसीलिए मुँह सँभालकर नहीं बोल रहे। विश्वविख्यात शिवजी के धनुष को तुम धनुही कह रहे हो?

लक्ष्मण (हँसकर)- मेरी समझ से सारे धनुष तो एक जैसे ही होते हैं। फिर ऐसे पुराने धनुष के तोड़ देने से क्या हानि हो गई? यह जर्जर धनुष तो श्रीराम के छूते ही खंड-खंड हो गया। इसमें उनका क्या दोष? आप तो बेकार ही क्रोध कर रहे हैं।

परशुराम- अरे दुष्ट! तु मूझे नहीं जानता। मैं बालक जानकर तुझे नहीं मार रहा। मैं बाल ब्रह्मचारी और अत्यंत क्रोधी हूँ। अपने बाहुबल से मैंने अनेक बार पृथ्वी को राजाओं से रहित कर उसे ब्राह्मणों को दे दिया। सहस्रबाहु की भुजाओं को काटने वाले मेरे फरसे को देख। (फरसा दिखाते हैं)।

(3) सूरदास के पद में गोपियों व उद्धव के मध्य हुई बातचीत/संवाद को लिखिए।

उत्तर- गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हे उद्धव, तुम सचमुच बहुत भाग्यशाली हो क्योंकि तुम प्रेम-बंधन से बिल्कुल अछूते अर्थात् स्वतंत्र हो और न ही तुम्हारा मन किसी के प्रेम में अनुरक्त हुआ है। जिस प्रकार कमल के पत्ते सदा जल के अन्दर रहते हैं परंतु वे जल से अछूते ही रहते हैं, उन पर जल की एक बूँद का भी धब्बा नहीं लगता और जिस प्रकार तेल की मटकी को जल में रखने पर जल की एक बूँद भी उस पर नहीं ठहरती, उसी प्रकार तुम कृष्ण के समीप रहते हुए भी उनके प्रेम बंधन से सर्वथा मुक्त हो। तुमने प्रेम रूपी नदी में कभी पाँव ही नहीं डुबोया अर्थात् तुमने कभी किसी से प्रेम ही नहीं किया और न ही कभी किसी के रूप-लावण्य ने तुम्हे आकर्षित किया है। गोपियाँ उद्धव से कहती है कि हम तो भोली-भाली अबलाएँ हैं और हम कृष्ण के प्रेम में पग गई हैं, अत: उनसे विमुख नहीं हो सकतीं। हमारी स्थिति उन चींटियों के समान हैं जो गुड़ पर आसक्त होकर उससे चिपट जाती है और फिर स्वयं को छुड़ा न पाने के कारण वहीं प्राण त्याग देती हैं।

(4) पुराने समय में स्त्री शिक्षा संबंधी बातों को अपनी दादी/नानी या माँ से हुई बातचीत/संवाद को लिखिए।

उत्तर- शिक्षक की सहायता से विद्यार्थी स्वयं करें।

□